मेरे प्यारे 'इंसान' मित्रों,
ठहाका.कॉम के प्रतिनिधि
के रूप में मैं आप सबका
ठहाकेदार स्वागत करता हूं
और आशा करता हूं कि
इस पुस्तक में आपको
हास्य-व्यंग्य का भरपूर
आनंद प्राप्त होगा. धन्यवाद

कॉमेडी प्ले
मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म
e-book
अनिल निगम 'बेख़बर'

This e-book is with full Master resale rights & can be resold or distributed free without any modification.

मॉडर्न मुग़ल–ए–आज़म

(कॉमेडी–प्ले)

स्व.जॉनी वाकर

सुप्रसिद्ध कॉमेडियन स्व.जॉनीवाकर को समर्पित..

जिन्होंने हमें अपनी फिल्म 'पहुंचे हुए लोग' में कलम चलाने का अवसर देने का जोखि़म उठाया.

लेखक	:	अनिल निगम 'बेख़बर'
प्रकाशक	:	ठहाका.कॉम प्लॉट नं.132/B-17, गोराई, बोरीवली (प.) मुंबई–400091 (भारत)
फोन	:	09324508160
आवरण	:	मनोज आचार्य
डेटा एंन्ट्री	:	अर्पणा सावंत
ई–मेल	:	anilnigambekhabar (eBay Member)

Visit my eBay shop : Thahaaka ebooks unlimited

ई–बुक संस्करण 2005 © **सर्वाधिकार सुरक्षित**

नोट : **इस ड्रामें को स्टेज पर प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए लेखक से संपर्क करें.**

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

हमारा कच्चा चिट्ठा

पूरा नाम	:	अनिल तिलकचंद्र निगम
अधूरा नाम	:	बेख़बर
अता-पता	:	बी.17,प्लॉट132, गोराई.2]बोरीवली (प.), मुंबई-400091.
हैलो-हैलो	:	09324508160
ई-मेल	:	anilnigambekhabar (eBay Member)
जुर्म	:	आशिक मिज़ाजी.
सज़ा	:	शादीशुदा.
योग्यता	:	पत्नी सेवा.
काम-धंधा	:	कलम की मज़दूरी.
शौक	:	हंसी-दिल्लगी, हास्य-व्यंग्य लेखन, अभिनय.
पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख	:	मेरी सहेली, माधुरी, गृहशोभा, मंगलवाणी
टीवी सीरियल	:	विभिन्न लोकप्रिय सीरियल के 150 से अधिक एपीसोड्स प्रसारित.
रेडियो	:	हवा महल, विविध भारती (200 से अधिक प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित.)
फिल्में	:	पहुंचे हुए लोग, मेरा शिकार,जानपे खेलकर
ऑडियो कैसेट	:	14 ऑडियो कैसेट रिलीज़्ड
वीडियो कैसेट	:	हंसते-खेलते, गरमा गरम.
डबिंग स्क्रिप्ट	:	डिस्कवरी चैनल, चिल्ड्रेन्स फिल्म सोसाइटी
ई-बुक्स	:	बेख़बर की बत्तीसी, बेख़बर की दुलत्तियां, बेख़बर की चुगलियां,मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म गंगाराम-ईटियट कहीं का, ठहाका अदालत, रंगीनमिज़ाजी,इज्ज़त उधार की,मुंबइया लैला मजनूं
अभिनय	:	कमांडर, मिलन महल, गरमा गरम, हंसते-खेलते, सैटरडे सस्पेंस, वी थ्री प्लस.
भविष्य	:	राम भरोसे.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

With Johny Walker & Sajid latif

With Hema Malini

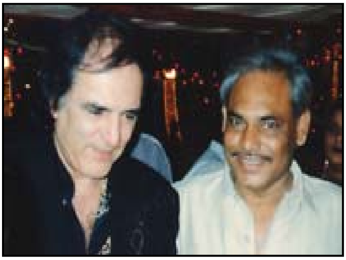

With Phiroz Khan

With Anjan Shrivastava

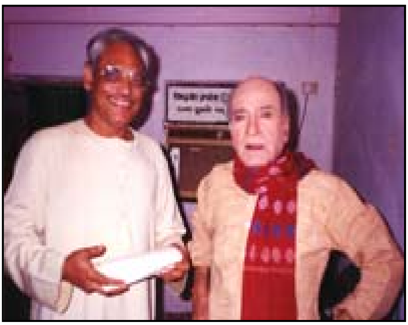

With A.K. Hungal

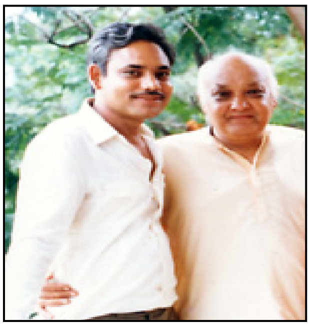

With Shail Chaturvedi

मॉडर्न मुग़ल–ए–आज़म
(कॉमेडी प्ले)

पात्र (किरदार)

1. **मॉडर्न मुग़ल–ए–आज़म** (शहंशाह,रहमदिल,खुशामद पसंद)
2. **तुर्रम ख़ां** (मिनिस्टर–ए–आज़म,चालाक, ख़तरनाक)
3. **बेगम** (तेज़तर्रार, शहंशाह पर हावी)
4. **फुर्सतअली** (**शहंशाह का वफादार हैदराबादी ख़ादिम, मुंहलगा**)
5. **शहज़ादा सलीम** (नेक दिल, हंसमुख, हैंडसम नौजवान)
6. **अनारकली** (ख़ूबसूरत, निडर और मॉडर्न)
7. **भान सिंह** (मिनिस्टर–ए–होम, वफादार, बहादुर)
8. **मिनिस्टर–ए–फूड** (मोटे डील–डौल का, तुर्रम का चमचा)
9. **मिनिस्टर–ए–फायनेंस**(मुस्लिम मिनिस्टर, तुर्रम का साथी)
10. **मिनिस्टर–ए–डिफेंस** (नाटा मिनिस्टर, तुर्रम का साथी)
11. **मिनिस्टर–ए–एजुकेशन** (देहाती,जाहिल,तुर्रम का साथी)
12. **मिनिस्टर–ए–इन्फॉर्मेशनएण्ड ब्रॉडकास्टिंग**(हिन्दी भाषी)
13. **मिनिस्टर–ए–हेल्थ** (दुबला पतला – तुर्रम का साथी)
14. **दाउद भाई** (दबंग मुजरिम)
15. **लखन** (मॉडर्न भिखारी)
16. **मिस लिपटन** (फॉरेन की रैप डांसर, तुर्रम की जासूस)
17. **पंडित** (दंगे–फसाद में घिरा आदमी)
18. **मुस्लिम औरत** (दंगे–फसाद में घिरी औरत)
19. **बच्चा** (मुस्लिम औरत का बच्चा)
20. **मुस्लिम फसादी** (ख़ूखार)
21. **हिन्दू फसादी** (ख़ूखार)
22. **सिपाही** (तीन)
23. **जॉज** (शंहशाह का प्यारा कुत्ता)

संवैधानिक चेतावनीः (इस नाटक के सभी पात्र शुद्ध रूप से मिलावटी हैं यानि कुछ असली कुछ नकली.अगर कोई असली नकली लगे और नकली असली तो ये महज़ इत्तेफाक होगा.)

सीन नं.1 स्थानः दरबार समयः दिन

पात्रः शहंशाह, फुर्सत, भानसिंह, तुर्रम, मिनिस्टर्स(फूड,हेल्थ,फायनेंस,डिफेंस, इंफॉर्मेशन, एजुकेशन,) बेगम,fe l flपटन, जॉज़.

(स्टेज पर ऐतिहासिक और आधुनिक दोनों के अजीब मिले-जुले अन्दाज़ से दरबार सजा है. दीवार पर ढाल और तलवार के साथ मॉडर्न Wall clock भी लटकी है. नये ज़माने के लेटेस्ट फर्नीचर के साथ शाही सिंहासन भी मौजूद है. एक टेबल पर Cordless phone रखा है उसी के पास शाही हुक्का भी रखा है कुलमिला कर स्टेज की सजावट देख कर महसूस होता है कि इतिहास वर्तमान से गले मिल रहा है. टेलीफोन की घंटी बजती है जिसे सुन कर अंदर से लंगड़ाता हुआ फुर्सत अली दाख़िल होता है. फुर्सत अली शहंशाह हुज़ूर का मुंहलगा और पुराना ख़ादिम है.उसका आधा गेटअप मुग़लिया ज़माने का और आधा मॉडर्न ज़माने का है. कमर से ऊपर मुग़लिया, जिसमें बकरा दाढ़ी, गोल टोपी वग़ैरह हैं और नीचे बारमूडा और एक्शनशूज़ हैं.)

फुर्सत : (फोन उठा कर हैदराबादी लहजे में) हैलो...गुडमार्निंग सर,....मैंय द ग्रेट मॉर्डन मुग़ले-आज़म हुज़ूर का पर्सनल ख़िदमतगार फुर्सतअली बोल रहा हूं..... जी नहीं, दरबारे- पार्लियामेंट में अभी तक कोई हाज़िर नहीं हुआ...हौं... शहंशाहे हुज़ूर मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म अभी-अभी सो कर उठे हैं. उने बेडरूम से निकल कर बाथरूम में दाख़िल हुए हैं बोलके, उने गुसलख़ाने में टूथ ब्रश फरमा रहे हैं.आप बाद में तशरीफ ला सकते हैं....शुक्रिया Thank you....

(फोन रखके दरबार की झाड़-पोंछ करने लगता है.)

फुर्सत अली शाही सिंहासन को कपड़े से

पोंछ कर उसके ठीक पीछे दीवार पर टंगी हुई तलवार पर कपड़ा फटकारता है तभी अचानक तलवार उसके सर पर आ गिरतीहै फुर्सत अपना सर सहलाता है.

फुर्सत : (मुंह बनाते हुए) क्या मुसीबत है भई... पुरानी हो गई मगर सर पे वार करने की आदत नहीं छोड़ी...ईडियट कहीं की. (तलवार वापस टांगता है.)

(तभी बाहर से राजा भान सिंह दाख़िल होते हैं. उनका कमर से ऊपर राजपूती राजाओं का लिबास है, जिसमें शानदार पगड़ी, कानों में कुण्डल, गले में मोतियों की माला, बड़ी-बड़ी मूछें, तिलक और तलवार वगैरह हैं. कमर के नीचे मॉडर्न फॅशन का पैंट-बेल्ट और चमचमाते जूते

और हाथ में रिस्ट वाच है.)

फुर्सत : (आदाब करते हुए) गुडमार्निंग भानसिंह जी..

भानसिंह : गुड मार्निंग.(चेहर पर तनाव के आसार हैं.)

फुर्सत : तशरीफ रखिये...

(भान सिंह एक कुर्सी पर बैठते हैं.)

फुर्सत : क्या बात है हुज़ूर ? आज आपके चेहरा देख को मेरेकू लगता दुश्मनों की ख़ैर नहीं.

भानसिंह : (गहरी सांस लेते हुए) दुश्मनों की तो ख़ैर ही ख़ैर है फुर्सतअली, मगर अब हमारे मुल्क की ख़ैर नहीं.

फुर्सत : ताज्जुब है...आप तो इस मुल्क के नेक और क़ाबिल मिनिस्टर-ए-होम हैं और

आप ही ऐसा कह रहे हैं?

भानसिंह : (खड़े होते हुए) यही तो अफसोस है फुर्सत अली, आजकल शहंशाह सलामत को नेक सलाह नहीं, खुशामद और चापलूसी ज़्यादा पसंद आने लगी है. तुर्रम ख़ान और उसके चापलूस साथियों ने मिल कर शहंशाह सलामत को जनता से दूर कर दिया है. उन्हें पता ही नहीं है कि मुल्क की जनता कितनी बदहाल हो चुकी है.

फुर्सत : आप ठीक फरमाते हैं...मगर आप हमारे हुजूर को तो अच्छी तरह पहचानते हैं ना वो मन के सच्चे मगर कान के कच्चे हैं.

भानसिंह : जानता हूं इसी लिए तो मैं उन्हें असलियत बताने की कोशिश करता हूं

कि आजकल जनता के क्या हालात हैं.

फुर्सत : आजकल हर तरफ शन ही शन का बोलबाला है.

भानसिंह : (हैरत से) शन का बोलबाला?

फुर्सत : जी हां, सरकारी दफ़्तरों मे करप्शन, स्कूलों में डोनेशन, सड़कों पर एजीटेशन, पुलिस-चोर में रिलेशन, फ़िल्मों में एक्शन,

भानसिंह : और इलेक्शन में टेंशन.

(दोनों हंसते हैं तभी बाहर से लम्बे-चौड़े डील डौल और रोआबदार शख़्सियत का मालिक तुर्रम ख़ां दरबार में दाख़िल होता है. उसका शानदार गेटअप भी ऊपर से ऐतिहासिक और कमर से नीचे मॉडर्न है. तुर्रम ख़ां के पीछे-पीछे दूसरे मिनिस्टर्स

भी आतेहैं, जिनमें मिनिस्टर-ए-फूड, मिनिस्टर- ए-हेल्थ, मिनिस्टर-डिफेन्स, मिनिस्टर-ए-फाइनेंस,मनिस्टर-ए-इन्फॉरमेशन,मिनिस्टर-ए-एजुकेशन हैं.

फुर्सत : (सलाम करते हुए) मिनिस्टर-ए-आज़म, जनाब तुर्रम ख़ां को फुर्सत अली का आदाब.

(तुर्रम खां फुर्सत के आदाब का जवाब दिये बगैर भानसिंह के क़रीब आता है.)

भानसिंह : गुड मॉर्निंग...

तुर्रम खां : मॉर्निंग....(भान सिंह को घूरते हुए) हमने सुना है आप शहंशाह सलामत के साथ पर्सनल मीटिंग करना चाहते हैं.

भानसिंह : आपने ठीक सुना है.

तुर्रम खां : कोई ख़ास वजह?

भानसिंह : ये मैं शहंशाह सलामत को ही बताऊंगा.

तुर्रम खां : (हंसते हुए शहंशाह के बगल वाली कुर्सी पर बैठ कर) शहंशाह सलामत के लिये आपकी वफादारी को देख कर हमें उनका अल्सेशियन कुत्ता जॉज़ याद आ जाता है. जो हर वक्त उनके आगे दुम हिलाता रहता है. (दूसरे मिनिस्टर्स हंसते हैं.)

भानसिंह : शुक्रिया तुर्रम खां साहब, मुझे खुशी है कि आपको मेरी नस्ल का पता तो चल गया...मगर अफसोस आप खुद अपनी नस्ल नहीं पहचानते.(तुर्रम खां गुस्से में कुर्सी से उठ कर खड़ा हो जाता है और अपनी तलवार निकालता है, भानसिंह भी अपनी तलवार खींचता है. फुर्सतअली

दोनों के बीच में आता है.)

फुर्सत : ओहो, ये आप दोनों क्या हंगामा कर रहे हैं भई? ये दरबारे-पार्लियामेंट है. अगर पब्लिक को पता चलेगा तो उनै क्या सोचेगी.यहां कि रैपुटेशन पूरी मिट्टी में मिल जाएगी....प्लीज़.

(तभी अंदरसे ऐलानकी आवाज आतीहै.)

आवाज़ : योर अटेंशन प्लीज़.....शंहशाहों के शहंशाह, जहां पनाह, हुजूरे-आला, मिस्टर मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म तशरीफ ला रहे हैंऽऽऽऽऽऽ अटेन्शन.

(म्यूज़िक)

(सब एक साथ अटेन्शन की पोजीशन में खड़े हो जाते हैं. मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म शाही अंदाज़ में शान के साथ गुलाब का

फूल सूंघते हुए दाख़िल होते हैं. उनके गेटअप में मुग़लिया पगड़ी, बड़ी-बड़ी गलमूछें, मोतियों की मालाएं, कानों में कुण्डल,सूट-बूट-टाई, कीमती अंगूठियां, घड़ी, हाथ में मोबाइल वगैरह हैं.उनके साथ उनका कुत्ता जॉज़ भी आता है.सब लोग झुक कर उनका इस्तकबाल करते हैं.)

सब : (अलग-अलग)आदाब...गुडमॉर्निंग..प्रणाम.

एजुकेशन : (पैर छूते हुए) पाय लागी हजूर...

तुर्रम खां : गुड मॉर्निंग योर हाईनेस.

शहंशाह : गुड मॉर्निंग एवरी बडी...(शाही सोफे पर बैठते हैं) आप लोग भी तशरीफ रखिये..

एजुकेशन : (बिहारी लहजे में) तसरीफ तो हम रखबे करेंगे हजूर मगर आपके इस कुत्ते जॉज,

से डर लगता है इसे इहां से हटाइए पिछली बार इसने हमरी नई धोती फाड़ डाली थी. (सब हंसते हैं.)

शहंशाह : (फुर्सत से) फुर्सत अली जॉज़ को अंदर ले जाओ

फुर्सत : जी हूजूर (जॉज़ को अंदर ले जाता है.) (सब अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं.)

शहंशाह : (हुक्का गुड़गुड़ाते हैं और चारों तरफ देखते हुए) क्या बात है? आज हमारे नौ रत्नों में से एक रतन डपेपदह है?

फुर्सत : (वापस आकर) नौ रतन कहां हुज़ूर, आपके तो सिर्फ साढ़े आठ रतन हैं.

शहंशाह : क्या मतलब??

फुर्सत : (मिनिस्टरे हेल्थ की तरफ इशारा करते हुए) आपके ये जो मिनिस्टरे हेल्थ हैं,

कम्बख़्त बीमारी ने तो इनको अधमरा कर दिया है. (सब हंसते हैं.)

शहंशाह : (जम्हाई लेते हुए) ख़ैर...ये बताओ कि इस वक्त क्या बजा है?

फुर्सत : (शहंशाह की कलाई घड़ी देख) हुजूरे आला, इस वक्त दिन के ठीक दस बज कर ग्यारह मिनट बारह सेकेण्ड हुए हैं.

शहंशाह : (चौंक कर) व्हाट?? दिन के दस बज गए हमतो समझे थे अभी सुबहके आठ बजे हैं.

एजुकेशन : आप बिल्कुल ठीक समझे हुजूर, इस वखत सुबह के आठ ही बजे हैं.क्यों मिनिस्टरे फूल...हमरा मतबल मिनिस्टरे फूड?

फूड : (मारवाड़ी लहजे में) थारी बात सौ टक्का

सही हैं भाया, अजी सुबह क्या मैं तो कहूं अगर हुजूर कहेंगे अभी नाइट है तो म्हारे लिए मिड नाइट है. क्यों मिनिस्टरे फाइनेंस भाया?

फाइनेंस : (उर्दू लहजे में) बेशक, मुझे तो हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा है. क्यों भाइयों?

सब : (एक साथ) बिल्कुल बिल्कुल..

भानसिंह : गुस्ताख़ी माफ हुजूर, ये लोग मिल कर आपको मिसगाइड कर रहे हैं. दरअसल इस वक्त दिन के दसही बजे हैं और चमकता सूरज इसका गवाह है.

डिफेंस : अरे हमको सूरज से क्या लेना देना? हम तो जो हुजूर कहेंगे वही करक्ट मानेगे. क्यों साथियों?

सब : बिल्कुल बिल्कुल.

तुर्रम : देखा जहांपनाह, ये लोग आपके कितने वफादार हैं?

शहंशाह : (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) गुड गुड...एनीवे, आज हमने दरबारे-पार्लियामेंट की ख़ास मीटिंग इस लिये बुलाई है, क्योंकि हम ये जानना चाहते हैं कि हमारी रियासत की आम पब्लिक के क्या हाल-चाल हैं?

फायनेंस : (खड़े हो कर) निहायत ही उम्दा हुज़ूर... जब से मैं मिनिस्टर-ए-फायनेंस बना हूं तब से हमारे मुल्क की रेपुटेशन इतनी बढ़ गई है कि दुनिया भर से कर्ज़ पर कर्ज़ मिलता जा रहा है.जिन मुल्कों ने हमारा ही कर्ज़ अभी तक चुकाया नहीं हैं, वो भी हमें कर्ज़ दे रहे हैं.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

साथी : (एक साथ) वाह-वाह... वाह-वाह...

इंफार्मेशन : (खुशी से) यूं समझ लीजिये हुजूरे-आला कि जिस तरह किसी ज़माने में हिंदुस्तान सोने की चिड़िया कहलाता था उसी तरह आज हमारा मुल्क अपनी इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी की बदौलत सोने का चूहा मेरा मतलब गोल्डन माउस कहलाता है.

(सब हंसते हैं.)

शहंशाह : (हंसते हुए)गुड...वेरी गुड...(हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) मिनिस्टर-ए-फूड साहब, मुल्क में खाने-पीने की चीज़ों का कैसा अरेन्जमेंट है?

मि.फूड : (खड़े हो कर अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए) हें-हें-हें...हजूर म्हारो गोदाम तो

हाउस फुल्ल है.

शहंशाह : वो तो हम भी देख रहे हैं.

(सब हंसते हैं.)

फुर्सत : मिनिस्टर साहब...हज़ूर आपके पर्सनल गोदाम की नहीं, मुल्क के खाने-पीने के इन्तज़ाम की इन्क्वायरी कर रहे हैं.

मि.फूड : मुल्क में भी खाणें और पीणें का भौत बढ़िया इन्तज़ाम है हज़ूर...कोर्ट हो या एयर पोर्ट, रेल्वे स्टेसन हो या पुलिस स्टेसन, बिना खिलाय-पिलाय तो काम होता ही नहीं.

(सब हंसते हैं.)

मि.फूड : और हज़ूर पीने के मामले में हमारे तुर्रम खां साहब का जवाब नहीं.

तुर्रम खां : (भड़क कर) शटअप. आपसे जितना पूछा

जा रहा है सिर्फ़ उतना ही जवाब दीजिये समझे.

मि.फूड : (घबरा कर) समझ गया भाया...(एक ख़ूबसूरत पैकेट दिखाते हुए) जहांपनाह, आप के वास्ते मन्ने फॉरेन से खाणे का एक स्वादिष्ट आइटम मंगायोहै.जरा टेस्ट कीजिये.

(फुर्सत अली पैकेट लेकर खोलता है.)

शहंशाह : (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) क्या है इसमें फुर्सत अली?

फुर्सत : (पैकेटसे एक बटाटावड़ा(आलू का पकौड़ा) निकालकर दिखाते हुए) बटाटा वड़ा.

शहंशाह : (गुस्से में खड़े हो कर) लाहौल विला कूवत..(मिनिस्टर-ए-फूड से) तुम्हारी ये जुर्रत.हमें बटाटा वड़ा पेश करते हो...

हम मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म हैं या फिल्मी स्ट्रगलर?

मि. फूड : (हाथ जोड़ते हुए) गुस्ताखी क्षमा करें हजूर..ये इम्पोर्टेड बटाटा वड़ा है....मेड इन हॉलीवुड!

शहंशाह : (हैरत से) मेड इन हॉलीवुड...तुम्हारा मतलब ये बटाटा वड़ा हॉलीवुड में बना हैं?

मि. फूड : जी नहीं, बनाया तो इंडिया में गया था.. हॉलीवुड को तो एक्सपोर्ट किया था हमने फिर इसे इम्पोर्ट कर लिया.

(सब हंसते हैं.)

शहंशाह : ओ फौरेन का बटाटा वड़ा....फिर तो हम ज़रुर खायेंगे. (बटाटा वड़ा खाते हुए) हूं... वाकई बड़ा टेस्टी है ये

इम्पोर्टेड बटाटा वड़ा.

फुर्सत : टेस्टी क्यों नहीं लगेगा हुज़ूर...आपके दांत भी तो इम्पोर्टेड हैं.

शहंशाह : शटाप. (सब हंसते हैं.)

तुर्रम खां : (अदब से खड़े होकर) योर हाइनेस... मैंने आपसे पहले भी अर्ज़ किया था कि हमारे मुल्क की पब्लिक निहायत ऐशो-आराम की ज़िंदगी गुज़ार रही है. हुज़ूर की इनायत से हर तरफ खुशहाली ही खुशहाली छाई है.

शहंशाह : (खुश होकर) गुड....वेरी गुड...(हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) हम भी यही चाहते हैं कि हमारी हुकूमत में ख़ासों-आम पब्लिक हर तरह से खुश रहे. चारों तरफ दूध, चाय और कोल्ड ड्रिंक की नदिया बहें.

सब : (एक साथ) वाह... वाह... क्या उम्दा ख़याल है वाह... वाह... (भान सिंह खामोश बैठे हैं.)

शहंशाह : (हैरत से) क्या बात है राजा भान सिंह जी,.आप काफी देर से ख़ामोश बैठे हैं. क्या आपको कुछ नहीं कहना हैं ?

भानसिंह : (खड़े होकर) कहना तो बहुत कुछ है जहांपनाह, मगर शायद आप सुनना पसंद न करें.

शहंशाह : आप बेख़ौफ हो कर कहिये.

फुर्सत : हां-हां कह डालिये....आलम पनाह चापलूसी और वफादारी का फर्क़ समझते हैं.

शहंशाह : (डपटते हुए) तुम चुप रहो फुर्सत अली.. (भानसिंह से) कहिये

भानसिंह : हुज़ूर हक़ीक़त तो ये है कि मुल्क़ की जनता हम से नाखुश है. मंहगाई, कालाबाज़ारी और घूसख़ोरी ने पब्लिक को खोखला कर दिया है. हर तरफ हाहाकार है.

तुर्रम खां : (जोरसे ठहाका लगातेहुए)हा-हा- हा-कार मान गये भानसिंह जी...आप वाकई मज़ाक अच्छा कर लेते हैं. क्यों दोस्तों?

सब : हां-हां बिल्कुल-बिल्कुल.

मि.हेल्थ : (हंसते हुए) मैं तो कहता हूं भानसिंह जी को मिनिस्टर-ए-होम के बजाय मिनिस्टर-ए-जोक बना देना चाहिये. (सब हंसते है)

भानसिंह : (भड़क कर) ये मेरी तौहीन कर रहे हैं हुज़ूर... आपके दरबार में वफादारी की इन्सल्ट हो रही है. इन लोगों ने आपकी

		आंखों के सामने झूठ और ग़फलत का पर्दा डाल रखा है. अब भी वक़्त है हुज़ूर, इस दरबार की दीवारों से बाहर निकल कर देखिये. हक़ीक़त ख़ुद-ब-ख़ुद आपके सामने आ जायगी.
शहंशाह	:	(खड़े होकर) ठीक है...हम हक़ीक़त को देखना चाहते हैं...अभी...इसी वक़्त.. बोलो कहां चलना है?
मि.डिफेन्स	:	(शहंशाह को वापस बैठाते हुए) आप भी किसकी बातों में आ गये हूज़ूरे आला... अभी-अभी तो आप बेडरुम से थके मांदे आये हैं. आपको आराम की सख़्त ज़रूरत है जहांपनाह.
मि.एजुकेशनः		(बिहारी लहजे में) जी हां... हम लोगन के होते भये आप काहें ऊ का कहते हें

अपने ब्लड का प्रेसर बढ़ाय रहे हैं हुज़ूर.

तुर्रम : मेरे ख़याल से आज मिनिस्टर-ए-होम की दिमाग़ी हालत ठीक नहीं है. इन्होंने हमारे साथ भी काफी बदतमीज़ी की है. इसके पहले कि ये आपकी शान में कोई और गुस्ताख़ी कर बैठें, इन्हें घर जाने का हुक़्म फरमायें योर हाईनेस.

शहंशाह : (सोचकर) हूं...ठीक है... मिनिस्टर-ए-होम, यू कॅन गो होम.

भानसिंह : (मायूसी से) बेहतर है हुज़ूर...पर जाते-जाते इतना ज़रुर कहूंगा कि मैं चैन से नहीं बैठूंगा. एक ना एक दिन मैं आपको हक़ीक़त दिखा के रहूंगा...... गुड बाय.(भानसिंह दरबार से जाता है.) (शहंशाह परेशान हो कर टहलने लगते

हैं.)

मि.इन्फॉमेशनः (हिंदी भाषी) श्रीमान् शहंशाह सलामत, आप व्यर्थ ही चिंतित हो रहे हैं. यदि आप जनता जनार्दन के विषय में सत्य का अवलोकन करना ही चाहते हैं तो इसकी समुचित व्यवस्था हो सकती है.

शहंशाह : आप कहना क्या चाहते हैं चरणदास जी?

फुर्सत : हुजूर,इजाज़त हो तो मिनिस्टरे इन्फॉमेशन एण्ड ब्रॉड कास्टिंग की भाषा का ट्रांसलेशन ब्रॉडकास्ट कर दूं?

शहंशाह : (डपटते हुए) फुर्सत अली.

तुर्रम खां : योर हाईनेस आप चाहें तो आज का ताज़ा न्यूज़ पेपर पढ़ लें. इससे आपको मुल्क के हालात और पब्लिक के हाल-चाल दोनों मालूम हो जायेंगे...क्यों

दोस्तों?

सब : हां-हां बिल्कुल दुरुस्त है.

शहंशाह : (खुश हो कर) गुड आइडिया... फुर्सत अली.

फुर्सत : जी बंदा परवर?

शहंशाह : आज का ताज़ा अख़बार हमारे सामने फौरन पेश किया जाय. हम खुद अपनी आंखों से न्यूज़ पढ़ेंगे. जाओ... हरी अप.

फुर्सत : अभी लाया हुज़ूर... (बाहर जाता है)

मि.हेल्थ : हुज़ूर, आप अपनी आंखों को ज़हमत क्यों देते हैं? हमारे मिनिस्टर-ए-एजुकेशन साहब किस दिन काम आयेंगे. ये आपको अख़बार पढ़ कर सुना देंगे.

मि.एजुकेशन: काहें मजाक करते हैं मिनिस्टर-ए-हेल्थ

साहेब....लिखने-पढ़ने से हम उतना ही दूर हैं जितना दूर आप हेल्थ से हैं.

(सब हंसते है.)

मि.डिफेंस : जहांपनाह, जब तक न्यूज़ पेपर आता है तब तक आप चाहें तो टी.वी पर न्यूज देख लीजिये.

शहंशाह : हूं... ठीक है. हम बी.बी.सी की न्यूज़ देखेंगे.

मि.इन्फॉमेशनः (घबराकर) नहीं... नहीं श्रीमान बी.बी.सी की न्यूज़ में भला क्या धरा है. देखना है तो हमारे दूरदर्शन की न्यूज़ बुलेटिन देखिये. तबियत प्रसन्न हो जायेंगी श्रीमान्.

शहंशाह : ऐसी क्या ख़ास बात है हमारे दूरदर्शन की न्यूज़ में?

मि.फूड : ऐसी-ऐसी ख़बरें दिखाता है हुजूर कि देखेनेवाला समझ ही नहीं पाता कि ये दूरदर्शनकी न्यूज़ हैया दूरदर्शन का मिसयूज़.

मि.फायनेंस : बिल्कुल जहांपनाह, दूसरे सेटेलाइट चैनल वाले तो हमारे दूरदर्शन के आगे कुएं का पानी भरते हैं. कॉमेडी सीरियल तो ऐसे दिखाता है कि रोते-रोते आंखों से आंसू आ जाते हैं.

शहंशाह : और सीरियल अगर इमोशनल हो तो?

मि.डिफेंन्स : तो हंसते-हंसते आंसू निकल आते हैं?

शहंशाह : आप का मतलब है दोनों कण्डीशंस में आंसू कम्पलसरी हैं.

इन्फॉमेशन : बिल्कुल आवश्यक हैं श्रीमान्.

शहंशाह : ठीक है तो आज से दूरदर्शन का नाम

बदल दिया जाय.

तुर्रम खां : क्या नाम रखा जाय दूरदर्शन का?

शहंशाह : क्रूर दर्शन. (सब हंसते हैं.)

(फुर्सतअली अख़बार लेकर बाहरसे दाखि़ल होताहै.)

फुर्सत : (खुशी से) आ गया हुजूर आ गया... आज का ताज़ा अख़बार आ गया...

शहंशाह : लाओ हमें दो.

फुर्सत : जस्ट एक मिनट हुजूर...(जोर-जोर से अख़बार को फूंक मारता है.)

शहंशाह : ये क्या कर रहे हो फुर्सत अली?

फुर्सत : ताज़े अख़बार की स्याही सुखा रहा हूं.

शहंशाह : (डपटते हुए) ओ शटअप... स्याही सूखने के बाद ये बासी नहीं हो जायगा ईडियट. (अख़बार झपट कर देखते हैं और हुक्का

गुड़गुड़ाते हुए चश्मा लगा कर पढ़ते हुए चौंकते हैं.)

शहंशाह : व्हाट नानसेंस??

मि.हेल्थ: क्या हुआ हुज़ूर?

शहंशाह : इस अख़बार को फौरन बैन कर दिया जाय.

फुर्सत : क्यों हुजूर?

शहंशाह : ये देखो इस अख़बारने हमारी फोटो उल्टी छापी हैं.

फुर्सत : गुस्ताख़ी माफ हुजूर, फोटो तो उनै सीधी छापीहै आपने अख़बारही उल्टा पकड़ा है.

(अख़बार सीधा कर देता है)

(तुर्रम के अलावा सब हंसते हैं शहंशाह भी खिसियानी हंसी हंसते हैं. अचानक तुर्रम खां भड़कता हैं.)

तुर्रम : ख़ामोश.(सब खामोश हो जाते हैं.) ये हमारे शहंशाह सलामत हैं... ये चाहे सीधा काम करें या उल्टा... हमें इन पर हंसने का कोई हक़ नहीं है. समझे आप लोग?

सब : समझ गये... समझ गये...

तुर्रम : आगे पढ़िए योर हाइनेस.

शहंशाह : (हैरत से पढ़ते हुए) ये क्या? दूध पांच सौ रूपये लीटर? मिनिस्टर-ए-फूड

मि.फूड : (घबराते हुए) ज... ज.. जी हुजूर?

शहंशाह : हमारे मुल्क़ में इतनी महंगाई है और हमें ख़बर तक नहीं...

मि.फूड : (घबरा कर)म..म..महंगाई..न.नहीं हुजूर.

शहंशाह : तो फिर दूध इतना महंगा क्यों? व्हाई??

एजुकेशनः दूध तो बहुते सस्ता बा हजूर.. महंगा तो

ससुरा पानी हुइ गवा है जो दूध मा मिलावा जात है.

शहंशाह : व्हाट?? सस्ता दूध महंगा पानी?

तुर्रम : वो बात ये है योर हाईनेस कि आजकल हमें पानी फॉरेन से मंगाना पड़ता हैं.

शहंशाह : (हैरत से) फॉरेन से क्यो? हमारे मुल्क़ में पानी की भी शॉर्टेज है क्या?

मि.फूड : हमारे देस का पाणी भी कोई पाणी है हजूर ना कोई रंग ना कोई चोखो स्वाद. प्रदूषित तो इतणा है कि एक बार गलती से म्हारी सेठाणी ने पी लिया तो उसका पचास किलो वजन घट गया.

(सब हंसते हैं.)

शहंशाह : हूं...(अख़बार पर नजर दौड़ाते हुए) पुलिस ने डाका डाला.. शहर में

दंगा-फसाद...बहू-बेटियों की इज़्ज़त ख़तरे में...आवाम हुकूमत से ख़फा...

तुर्रम : (भड़कते हुए) फुर्सत अली, ये कौन सा घटिया अख़बार उठा लाये?

फुर्सत : वही जो सच्ची ख़बरें छापता है.

तुर्रम : शटअप. तुम्हें सच्ची ख़बरों वाला नहीं सिर्फ़ ख़बरों वाला अखबार लाने को कहा था.. नानसेंस...

(शहंशाह के हाथ से अखबार लेकर फाड़ देता है.)

शहंशाह : ये तुमने क्या किया तुर्रम खां?

तुर्रम : वही जो ऐसे वाहियात अख़बारों के साथ हुकूमत करती आई है योर हाइनेस.

मि.फायनेंस : हुजूर ऐसे अख़बार वालों के ख़िलाफ हमें ऐसा बिल बनाना चाहिये कि उनका दिल

दहल जाय. नो कोटा, नो सबसिडी, नो लाइसेंस, नो सरकारी इश्तेहार.

मि.एजुकेशनः अरे हम तो कहते हैं जनता के अख़बार पढ़ने पर पाबंदी लगाए देनी चाहिये. ना रहेगा ससुरा अख़बार ना फैलेगी अफवाह.

सब : वाह-वाह... वाह-वाह...

(तभी एक सिपाही आकर शहंशाह को सलाम करता है.)

शहंशाह : क्या बात है?

सिपाही : हुजूर, फॉरेन की मशहूरो-मारूफ रैप डान्सर मिस मारदोना लिपटन तशरीफ लाई हैं.

शहंशाह : (हैरत से) फॉरेन की रैप डान्सर मिस मारदोना..??

सिपाही : जी, वो हुज़ूर का दीदार करना चाहती हैं.

शहंशाह : ठीक हैं उन्हें आने की इजाज़त है.

(सिपाही सलाम करके जाता है)

फुर्सत : (धीरे से) हुज़ूर आप ज़रा होशियार रहियेगा.सुना है मिस मारदोना लिपटन ने लिपट कर बड़े-बड़े सूरमाओं का चूरमा बना दिया है. कही आपका भी.

शहंशाह : (डपट कर) फुर्सत अली..

(तभी मिस लिपटन सेक्सी ड्रेस में अदा से आ कर हाथ मिलाती है.)

लिपटन : (हाथ मिलाते हुए इंग्लिश टोन में) हल्लो मिस्टर मॉडर्न गुलगुले आज़म.

फुर्सत : जुबान संभाल कर..ये मॉडर्न गुलगुले नहीं मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म है मिस लिपटन.

लिपटन : ओह, आई एम सॉरी.. हाउ आर यू

मिस्टर मॉडर्न मुगलाई आजम...
(लिपटन शहंशाह से लिपटने लगती है. शहंशाह घबरा कर पीछे हटते है.)

शहंशाह : ओये होये-होय...हम आपको भरे दरबार में लिपटने की इजाज़त नहीं दे सकते मिस लिपटन.

लिपटन : सॉरी अगेन...बट यू नो..आपको देख कर हम अपना ऊपर कंट्रोल नई करने को सकटा...यू आर सो स्वीट, सो चार्मिंग सो हैण्डसम...

फुर्सत : बस कीजिये, ज़्यादा तारीफ से हूज़ूर का डायजेशन बिगड़ जायगा.
(सब हंसते हैं.)

शहंशाह : शटअप. (मूछों पर ताव देते हुए) हां तो मिस लिपटन, क्या हम आपको वाकई

हैण्डसम लगते हैं?

लिपटन : ऑफ कोर्स...आपका ये मोटा-मोटा पूंछ..

शहंशाह : ओ शटअप..ये हमारी पूंछ नहीं मूंछ है मूंछ.

शहंशाह : दिस टाइम आई एम रियली सॉरी... अमारा हिन्दी वेरी पूअर.. प्लीज डोण्ट माइंड.

शहंशाह : वी हैव नो माइण्ड.

(सब हंसते हैं.)

इन्फॉर्मेशन : कुमारी लिपटन हमने सुना है आप अत्यंत कुशल नृत्यांगना हैं.

लिपटन : नो, आई एम मारदोना.

(सब हंसते हैं.)

मि.डिफेन्स : ही मीन्स यू आर ॲन एक्सपर्ट डान्सर मिस लिपटन.

लिपटन : ओह यस...

मि.फूड : (पेट पर हाथ फेरते हुए) हे-हे-हे...तो फिर क्यों ना हजूरकी खिदमत में एक डान्स हो जाय. क्यों हजूर.

शहंशाह : हां-हां क्यों नहीं. व्हाय नॉट?

सब : हां-हां हो जाय हो जाय...

लिपटन : ओके... ओके.. अम आप सब को अपना एक लेटेस्ट डान्स करके दिखाता है.

(तालियां. सब अपनी-अपनी जगह बैठ जाते हैं)

लिपटन म्यूजिक पर रैप डान्स करती है. शहंशाह खुश होते हैं. फुर्सत सीटी मारता है. सब तालियां बजाते हैं.)

शहंशाह : (खुश होकर) वाह-वाह बहुत ख़ूब..

एक्सीलेन्ट... मिस लिपटन हम तुम्हारे डान्स से बेहद खुश हुए.. (गले की मोतियों की माला निकाल कर) ये लो तुम्हारा इनाम.

लिपटन : (माला वापस करते हुए) ओह नो, आई डोण्ट वॉन्ट दिस यूज़लेस थिंग.

शहंशाह : तो फिर तुम्हें क्या इनाम चाहिये?

लिपटन : आई वॉन्ट फाइव स्टार हॉटेल..

तुर्रम : (चौंक कर) व्हॉट? फाइव स्टार हॉटेल... आप होश में तो हैं मिस लिपटन? वो ज़माने लद गये जब शहंशाह खुश हो कर इनाम में जागीरें दे दिया करते थे. अब तो...

शहंशाह : तुर्रम ख़ां.. ये मत भूलो कि मिस लिपटन फॉरेन की मेहमान हैं. इनकी ख़्वाहिश हम

ज़रूर पूरी करेंगे. इनके लिये एक शानदार फाइव स्टार होटल बनवा कर तोहफे में दिया जाय.

मि.फायनेंस : गुस्ताख़ी माफ हुज़ूरमगर ये नामुमकिन है.

शहंशाह : क्यों?

मि.फायनेंस : क्योंकि हमारे मुल्क़ मे ख़ाली ज़मीन की शॉर्टेज हो गई है. आबादी इतनी बढ़ चुकी है कि फुटपाथों के साथ-साथ सड़कों पर भी झोपड़े बन गये हैं.

मि.हेल्थ : और तो और आपके शानदार महल के अंदर भी कुछ झोपड़े बन गये हुज़ूर.

शहंशाह : व्हॉट? हमारे महल के अंदर झोपड़े...उन्हें फौरन तुड़वा दिया जाय.

मि.डिफेंस : वो झोपड़े नहीं तोड़े जा सकते जहांपनाह.

शहंशाह : क्यों नहीं तोड़े जा सकते?

मि.डिफेंस : क्योंकि उन्होंने कोर्ट से स्टे ऑर्डर ले रखा है.

फुर्सत : हुजूर फाइव स्टार होटल तो छोड़िये अब तो आप मिस लिपटन को तोहफे में एक ढाबा भी नहीं दे सकते.

शहंशाह : शटअप.हमारे ऑर्डरकी फौरन तामील होनी चाहिए.

फाइनेंस : वो तो ठीक है हुजूर, मगर इसमें एक प्राब्लम है.

शहंशाह : कैसा प्राब्लम??

फाइनेंस : आजकल हमारे मुल्कमें सीमेंटकी शार्टेज चलरही है.

शहंशाह : क्यों? कैसे हुई शार्टेज?

फाइनेंस : बात ये है हजूरे-हाइनेस, कि पिछले दिनों फूड प्वायज़निंग की वजह से जो आपके

पंद्रह कबूरत शहीद हो गए थे उन सब की यादमें हमने पंद्रह चबूतरे बनवा दिए.

शहंशाह : व्हाट?? कबूतरों की याद में चबूतरे ???

तुर्रम : यस योर हाइनेस, ये तो हमारे मुल्क का ओल्ड दस्तूर है.

फुर्सत : जी हां हुजूर, हमारे मुल्क में जीने वालों को घर मिले कि नको मिले मगर मरने वालों की समाधी और मकबरा ज़रूर बनाते हैं. मुझे तो लगता है आने वाले दिनों में पूरा मुल्क ही समाधि और मकबरे में तब्दील हो जाएगा.

एजुकेशन : हमने तो आपके लिए भी एक ठो बढ़िया प्लाट देख कर रखा है हजूर.

शहंशाह : शटअप....

लिपटन : ओह डियर मुगले आजम, इसका मतलब

हमको अमारा इनाम नहीं मिलने को सकटा. तब अम इडर कैसा रहेंगा?

तुर्रम : हुजूर, मिस लिपटनके ठहरने के लिए आपके बंगले का ख़ास गेस्टरूम बेहतर रहेगा.

शहंशाह : हूं गुड सजेशन, मिस लिपटन, जब तक होटल का इन्तज़ाम नहीं हो जाता तब तक आप हमारे बंगले में हमारी ख़ास मेहमान बन कर रहेंगी. (तालियां)

(तभी शहंशाहके मोबाइल की घंटी बजतीहै.)

शहंशाह : (मोबाइलपर)हैलो...यसमॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म स्पीकिंग.(खुश होकर) कौन शहज़ादा सलीम.. वल्लाह कहां से बोल रहे हो शहज़ादे?...क्या कहा पेरिस

के आइफल टॉवर से ...गुड वेरी गुड, हम जानते थे फॉरेन में स्टडी करके तुम काफी ऊंचाई पर पहुंचे जाओगे....हां-हां याद है तुम्हारा पच्चीसवां बर्थ डे आने वाला है. हॅप्पी सिल्वर जुबली टू यू...क्या कहा इस बार बर्थ-डे तुम अपने मुल्क़ में मनाना चाहते हो? गुड न्यूज़...तुम फॉरेन से फौरन यहां चले आओ. हम सब धूमधाम से तुम्हारा बर्थ डे मनाएंगे. ओके गुड बाय..(फोन रखते है.) तुर्रम ख़ां.

तुर्रम : यस योर हाईनेस?

शहंशाह : हर जगह अनाउंसमेन्ट करा दिया जाय कि हमारा नूरे-नज़र-लख़्ते जिगर वारिसे इस्टेट शहज़ादा सलीम तशरीफ ला रहा है. उसका शानदार रिसेप्शन होना

चाहिये. मिस लिपटन को छोड़ कर बाकी सब लोग जाकर शहज़ादे के इस्तकबाल की तैयारी करें.

तुर्रम खा : जो हुक्म योर हाईनेस.

(सब सलाम करके जाते हैं.दरबार में सिर्फ शहंशाह, लिपटन और फुर्सत अली रह जाते है.)

लिपटन : डार्लिंग, ये शहजाडा सलीम कौन है?

शहंशाह : (हंसते हुए) शहज़ादा सलीम हमारा सब से बड़ा बेटा है. दि एल्डेस्ट सन. हमारी बड़ी बेगम यशोदाबाई के अलावा दूसरी बेगमें भी उसे बहुत प्यार करती हैं.

लिपटन : बेगम मतलब?

फुर्सत : वाइफ.

लिपटन : आपका किटना बेगम है?

फुर्सत : पच्चीस बेगमें परमानेंट, सत्तर टेम्परेरी और पांच सौ डेली वेजेज़. इनका नाम कहां नोट करूं हूजूर?

शहंशाह : शटअप.

लिपटन : (हैरत से) माई गॉड, इतना बेगम.

फुर्सत : येतो सिर्फ़ एक ज़नानख़ाने की पापुलेशन है.

लिपटन : ये जनानखाना है कि कारखाना.

फुर्सत : ये तो हुजूर ने फेमिली प्लानिंग कर रखी है वरना..

शहंशाह : (डपट कर) फुर्सत अली, आजकल तुम बेहद मुंहलगे होते जा रहे हो. अगर तुमने जुबान पर लगाम नहीं लगाई तो हम तुम्हें धक्के दे कर महल से बाहर निकाल देंगे.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

फुर्सत : कैसे निकालेंगे हुजूर? ये मत भूलिये कि मैं बड़ी बेगम के साथ दहेज़ में आया हूं. अगर आप मुझे धक्के देकर बाहर निकालेंगे तो बड़ी बेगम आपको..

शहंशाह : (चुप कराते हुए) श...श..श...चुप-चुप.. नालायक.

लिपटन : लगता है आप अपना बड़ा बेगम से बहुत डरता है.

शहंशाह : ओ...नेवर...हम मॉडर्न मुग़ल-ए- आज़म हैं (अकड़ कर) हम किसी बेगम-वेगम से नहीं डरते..

बेगम : (अंदर से आवाज आती है) अजी सुनते होऽऽऽऽ

फुर्सत : हुजूर बड़ी बेगम. (पीछे दुबक जाता है.)

शहंशाह : (घबरा कर) क.. क... कहां हैं बड़ी

बेगम?

बेगम : (आकर) मैं यहां हूं... (बिगड़ते हुए) क्यों जी, कब से गला फाड़-फाड़ कर बुला रही हूं सुनाई नहीं देता क्या? (लिपटन को देख कर) अच्छा तो इस नई मेम के साथ गुलछर्रे उड़ा रहे थे.

शहंशाह : (हकलाते हुए) गु.. गु.. गुलछर्रे...न.. नहीं.नहीं बेगम...

बेगम : (भड़क कर) मैं पूछती हूं कौन है ये चुड़ैल?

लिपटन : चुडैल का मटलब?

शहंशाह : चु...चु...चुडैल का मतलब... वो.. वो.. हां ब्यूटीफुल लेडी.

लिपटन : (खुश हो कर) ओ थैन्क यू वेरी मच. (बेगम से) आप अमसे भी बड़ा चुड़ैल

है...

बेगम : (भड़क कर) क्या कहा मुझे चुड़ैल कहती है.ठहर जा अभी बताती हूं...

(बेगम लिपटन पर झपटती हैं. लिपटन शहंशाह के इर्द-गिर्द भागती है.भाग-दौड़ हंगामा...लिपटन मौका पाकर बाहर भाग जाती है.)

शहंशाह : ओ हो-हो बेगम अब बस भी करो ज़्यादा भाग-दौड़ करना तुम्हारी सेहत के लिये अच्छा नहीं है.

बेगम : और नई-नई बेगमें लाना तुम्हारी सेहत के लिये अच्छा है क्या?

शहंशाह : तुम ग़लत समझ रही हो...मिस लिपटन हमारी नई बेगम नहीं फॉरेन से आई हमारी मेहमान हैं. और मेहमानों की

खातिर करना हमारा फर्ज़ है.

बेगम : आप अपना ये फर्ज़ कैसे निभाते है ये मैं अच्छी तरह जानती हूं. देखो जी कहे देती हूं अगर तुमने अपनी ये हरकतें नहीं छोड़ी तो ... तो...

शहंशाह : तो क्या करोगी बेगम?

बेगम : मैं अपने सारे मैके वालों को यहीं बुला लूंगी.

शहंशाह : क्या? (गश खा कर शाही कुर्सी पर बैठ जाते है. फुर्सत आकर उन्हें हवा करता है.)

बेगम : अरे अचानक इन्हें क्या हो गया?

फुर्सत : दुश्मनों का नाम सुन कर गश आ गया.

बेगम : (डपट कर) बकवास बंद कर और जल्दी से इन्हें होश में ला...

फुर्सत : (हवा करते हुए) होश में आइये हुजूर प्लीज़ कम इन सेन्स.

शहंशाह : नॉन सेन्स... हम पूरी तरह होश में थे, हैं और रहेंगे. (उठ कर खड़े हो जाते हैं.)

बेगम : लेकिन एक बात याद रखना, अगर तुमने फिर कभी उस परकटी चुहिया से दीदे लड़ाये तो मुझ से बुरा कोई न होगा.

शहंशाह : ठीक है-ठीक है बेगम...अब तो गुस्सा ठण्डा करो.

बेगम : एक शर्त पर.

शहंशाह : कैसी शर्त?

बेगम : मुझे अभी इसी वक़्त एक लाख रूपये चाहिये. कैश.

शहंशाह : मगर तुम एक लाख कैश का करोगी

क्या?

बेगम : सैण्डल खरीदूंगी.

फुर्सत : पहनने के लिये या...

शहंशाह : शटअप... (बेगम से) चलो तुम्हें हम तुम्हें एक लाख कैश देते हैं. मगर हमारी भी एक शर्त है.

बेगम : क्या शर्त है?

शहंशाह : सैण्डल ज़रा मुलायम लाना.

(तीनों अंदर की तरफ जाते हैं.स्टेज पर ब्लॅक आउट होता है.)

सीन नं.2 स्थानःतुर्रमहाउस(लाइटिंग इफेक्ट)

समयः दिन

पात्रःतुर्रम, मिनिस्टरे फूड, मिस लिपटन

(बॅक ग्राउंड से सस्पेन्स म्यूजिक सुनाई देती है. स्टेज पर दो स्पॉट लाईट उभरती हैं. एक के नीचे तुर्रम खां है और दूसरे के नीचे मिस लिपटन खड़ी है. तुर्रम खां सिगार पी रहा है.)

तुर्रम : (रहस्य भरे अंदाज़ में) मिस लिपटन, शहंशाह सलामत को तुम पर कोई शक तो नहीं हुआ?

लिपटन : नो मिस्टर टुर्रम खान... टुमारा बादशा सलामट ईज वेरी इनोसेन्ट मैन मगर टुमने ये नहीं बटाया कि टुमारा प्लान

क्या है?

तुर्रम : वक्त आने पर वो भी बता दिया जायेगा. फिलहाल तुम शहंशाह को अपने हुस्न के चंगुल में जकड़ने की कोशिश करो मगर होशियारी के साथ...किसी को कानों-कान ख़बर नहीं होनी चाहिये कि मैंने तुम्हें यहां किसी ख़ास मकसद से बुलाया है.

लिपटन : डोण्ट यू वरी...

तुर्रम : यू मे गो नाउ.. (लिपटन जाती है.)

तुर्रम : (धुआं छोड़ते हुए)मिनिस्टर-ए-फूड साहब,

मि.फूड : (स्पॉट लाईट पर आ कर खड़े होते हुए) बोलो तुर्रम भाया.

तुर्रम : आप भी तमाम मिनिस्टर्स के साथ तैयार रहिये.

मि.फूड : हे-हे-हे (पेट पर हाथ फेरते हुए) मैं तो

पिछले बीस बरस से तैयार बैठा हूं... मोको ही नहीं मिल रियो.

तुर्रम : घबराइये नहीं...इस बार पूरा मौक़ा मिलेगा. बाज़ी हमारे हाथ में है. सिर्फ कुछ चालें चलनी बाक़ी हैं और फिर मात.

(म्यूज़िकल बैंग के साथ ब्लैक आउट होता है.)

सीन नं.3 **स्थानः दरबार** **समयः दिन**

पात्रः **शहंशाह,फुर्सत,भानसिंह,तुर्रम, मिनिस्टर्स(फूड,हेल्थ,फायनेंस, डिफेंस,इंफॉर्मेशन, एजुकेशन,) बेगम, सलीम**

बाहर से आवाज़ेः शहज़ादा सलीम... ज़िंदाबाद... शहज़ादा सलीम ...ज़िंदाबाद... वेलकम.. .वेलकम...शहज़ादा सलीम

(शहंशाह और फुर्सत अंदर से दरबार में आते हैं.)

शहंशाह : (खुशी से आवाज़ लगाते हुए) बेगम... बेगम ... जल्दी आओ...हमारा शहज़ादा सलीम आ गया... हरी अप...

बेगम : (आते हुए खुशी से) शहज़ादा आ गया... मेरा लाल आ गया...

(शहजादा सलीम शानदार मॉडर्न ड्रेस में

		बाहर से आता है. उसके पीछे-पीछे बाकी सभी मिनिस्टर्स भी आते हैं उनमें सिर्फ भान सिंह नहीं है.)
सलीम	:	(शहंशाह से लिपटते हुए) हाय डैड...
शहंशाह	:	(खुशी से) वेलकम शहज़ादे... वेलकम...
सलीम	:	(बेगम से लिपट कर) हाय मॉम...हाऊ आर यू...?
बेगम	:	(सलीम को गले से लगा कर) मैं.. मैं.. अच्छी हूं..तुझे देखने के लिये मेरी आंखें कब से तरस रही थी मेरे लाल... कैसा है तू...?
सलीम	:	एक दम फिट हूं मॉम...
बेगम	:	चल हट... फॉरेन में रह कर कितना दुबला हो गया है रे तू... ये क्या हाल बना रखा है?

फुर्सत : कुछ लेते थे कि नहीं?

(सब हंसते है.)

मि.एजुकेशन: इहां आने में आपने बहुत देर कर दी सहजादे साहेब...हम सब कब से आप का इन्तजार करत रहे.

सलीम : पेरिस से तो मैं सिर्फ बीस मिनट में आ पहुंचा था मगर एयर पोर्ट से यहां तक पहुंचने में बीस घंटे लग गये. व्हॉट ए ग्रेट ट्रॅफिक ...

(सब हंसते है.)

शहंशाह : (हंसते हुए) तुम्हारे आने से हमारा दिल खुशी से बाग़-बाग़ हो गया शहज़ादे.

फुर्सत : हमारा दिल भी खुशी से गार्डन-गार्डन हो गया.

(सब हंसते हैं.)

✍ अनिल निगम ‘बेख़बर’

तुर्रम : योर ऑनर, शहज़ादा सलीम को देख कर हमारे साथ-साथ पूरा मुल्क़ खुशी से झूम उठा है. क्यों साथियो?

सब : बिल्कुल-बिल्कुल...इस तरह...
(सब झूम कर दिखाते हैं.)

भानसिंह : मेरी तो राय है जहांपनाह कि शहज़ादे के आने की खुशी में देश की जनता को भी शरीक किया जाए. ग़रीबों में खाना और तोहफे बंटवाए जाएं ताकि वो भी अपने शहज़ादा सलीम को दुआएं दें.

शहंशाह : ठीक है भानसिंह जी, जाइए और अभी ये नेक काम करवा दीजिए....

भानसिंह : बेहतर है हजूर....(भानसिंह जाता है.)

सलीम : मुझे भी फौरेन में अपने मुल्क़ की बेहद याद आती थी. रात-रात भर नींद ही

नहीं आती थी.

मि.हेल्थ : तो फिर आप सोने के लिये क्या करते थे शहज़ादे साहब?नींद की गोलियां खाते थे?

सलीम : नहीं, सिर्फ यहां की बनी फ़िल्में देख लेता था. (सब हंसते हैं.)

शहंशाह : और सुनाओ शहज़ादे, फॉरेन में रह कर तुमने क्या-क्या सीखा?

सलीम : फॉरेन में रह कर सबसे पहले मैंने अपनी भाषा सीखी क्योंकि यहां तो मुझे अंग्रेज़ी के अलावा कुछ बोलनाही नहीं आता था.

शहंशाह : ये तुमने बहुत उम्दा काम किया शहज़ादे. अच्छा ये बताओ कि...

बेगम : (चिढ़ कर) बाकी डिटेल्स बाद मे दरियाफ़्त कर लेना जी...हमारा बेटा अभी-अभी प्लेन के सफर से थका-मांदा

लौटा है. इसे खा-पी कर आराम भी करने दोगे या नहीं?

शहंशाह : हां-हां शहज़ादे..जाओ खा-पीकर आराम फरमाओ हम बाद में गुफ्तगू फरमाएंगे.

सलीम : ओके डैड... बाय एव्हरी बडी...

बेगम : चल बेटा...आज मैंने तेरे लिये फॉरेन का मुर्ग़ा और स्पेशल चिकन मंचूरियन बनवाई है. चलो फुर्सत...

फुर्सत : जी आया...

(बेगम, सलीम, फुर्सत अंदर जाते हैं.)

तुर्रम : योर हाईनेस, शहज़ादा सलीम साहब बड़े ठीक मौके पर तशरीफ लाये हैं वरना इस मुल्क़ का ना जाने क्या हाल होता.

शहंशाह : (हुक्का गुड़गुड़ाते हुए) (हैरतसे)आप कहना क्या चाहते है मिनिस्टर-ए-

आज़म? क्या हाल होने वाला है मुल्क़ का?

तुर्रम : (सस्पेंस लहजा बनाते हुए) अभी-अभी पता चला है कि हमारे मुल्क़ में दुश्मन मुल्क़ों की ख़ुफिया एजेन्सियों ने अपना जाल बिछाना शुरू कर दिया है.

शहंशाह : (चौंक कर) अच्छा!

तुर्रम : जी हां... हमारे मुल्क़ के कुछ गद्दार उनके साथ मिल कर आप के ख़िलाफ नफरत की चिन्गारी भड़का रहे हैं.

शहंशाह : हूं.... आय सी.

तुर्रम : यूं समझ लीजिये कि मुल्क़ में बग़ावत की आग फैल रही है.

शहंशाह : (परेशानी से) आग...माई गॉड. (तेजी से अपना मोबाइल फोन उठाते है और नंबर

डायल करने लगते हैं.)

तुर्रम : (हैरत से) किसको फोन कर रहे हैं जहांपनाह?

शहंशाह : फायर ब्रिगेड को.

मि.डिफेंस : हुज़ूर, ये वो आग नहीं है जिसे फायर ब्रिगेड वाले बुझा सकें. इसे तो हमारी फौजें ही बुझा सकती हैं.

शहंशाह : तो फिर सोच क्या रहे हैं मिनिस्टर- ए-डिफेन्स? हमारी फौजों को फौरन हुक़्म दिया जाय कि मुल्क़ के दुश्मनों को गोलियों से उड़ा दें.

मि.डिफेंस : उड़ा देंगे, ज़रुर उड़ा देंगे हुज़ूर ज़रा गोलियों की सप्लाई हो जाय.

शहंशाह : (चौंककर) गोलियों की सप्लाई? क्या मतलब?

मि.एजुकेशनः मतलब ई हजूर कि हमारे देस की गोलियां तो एकदम बेफजूल होती हैं. कभी सही निसाने पर नहीं लगतीं. आजकल के चोर-डाकूभी फॉरेन की ए के 47में फॉरेनकी गोलियांही यूज करते हैं.

मि. फूड : जी हां. इसलिये तो हमारे मिनिस्टर-ए-डिफेन्स ने फॉरेन की गोलियों का आर्डर दिया है.

शहंशाह : हूं... कब होगी गोलियों की सप्लाई?

मि.डिफेंस : कमीशन मिलने बाद.

शहंशाह : वॉट?

मि.डिफेंस : म...मेरा मतलब परमीशन मिलने के बाद.

शहंशाह : (हैरत से) किसकी परमीशन?

मि.डिफेंस : अमेरिका की.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

शहंशाह : (भड़क कर) वॉट नॉनसेन्स?.. मुल्क़ हमारा, फौजें हमारी, बंदूकें हमारी, दुश्मन हमारा मगर उसे मारने के लिये परमीशन अमेरिका की?

मि.ब्राडकास्टः ये तो कुछ नहीं है श्रीमान्, कुछ समय पश्चात् तो घर के मच्छर मारने के लिये भी अमेरिका से अनुमति लेनी होगी.

(सब हंसते हैं.)

शहंशाह : (परेशानीसे टहलते हुए)हूं..तो आपका मतलब हमारे मुल्क में कोई फॉरेन का हैड साज़िश कररहा है.

मि.फायनेंस : जी हां, और उस फॉरेन हैण्ड के साथ हमारे देशी गद्दार का पैर भी शामिल है.

शहंशाह : देशी पैर...? कौन है वो गद्दार?

तुर्रम : आप शायद यक़ीन न करें योर हाइनेस

मगर हक़ीकत में वो गद्दार है भानसिंह.

शहंशाह : (चौंककर) वॉट? मिनिस्टर-ए-होम... भानसिंह???

तुर्रम : येस योर ऑनर, भानसिंह आपके ख़िलाफ बग़ावत करनेवाला है.

शहंशाह : ये तुम क्या कह रहे हो तुर्रम ख़ान भानसिंह तो हमारे वफादार और ईमानदार मिनिस्टर हैं.

मि.फूड : हें-हें-हें....हुजूर आप भौत भोले और इनोसंट शहंशाहहैं.इसीलिये आप भाणसिंह की चिकणी-चुपणी बातों में आ गये.

डिफेंस : हुजूर, भानसिंह तो नकली वफादार है एकदम डुप्लीकेट, ओरिजनल वफादार तो हम लोग हैं.

एजुकेशन : एकदम सही, भानसिंह कि मिसाल तो

एइसी है जैइसे सत्तर चूहे खायके कैट हजको चली.

शहंशाह : मगर हमें तुम्हारी बातों का यकीन नहीं आ रहा है.इस मामले की हम खुद एन्कवायरी करेंगे. और अगर ये बात ग़लत साबित हुई तो हम तुम सब को मिनिस्ट्री से बेदख़ल कर देंगे.

तुर्रम खां : आप जो चाहें कीजिये योर हायनेस आपको हकीकत बताना मेरा फर्ज़ था वो मैंने कर दिया...चलो साथियों.

(सब तुर्रम खां के साथ बाहर जाते हैं.)

शहंशाह : (सोचते हुए)... भानसिंह और गद्दार?... नहीं... नहीं... ये नहीं हो सकता....

(शहंशाह सोचते हुए अंदर चले जाते हैं.)

(स्टेज की लाइट बुझती है.)

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

सीन नं.4 स्थानः दरबार समयः दिन
पात्रः शहंशाह, फुर्सत, अनारकली, सलीम.

(फुर्सत अली आकर सोफा वगैरह ठीक करने लगता है.उसी वक़्त एक ख़ूबसूरत लड़की अनारकली बाहर से आती है. उसके हाथों में किताबें हैं.)

अनारकली : (आदाब करते हुए) आदाब फुर्सत चाचा.

फुर्सत : (हैरत से) अरे अनारकली, तू यहां कैसे आई बेटी?

अनारकली : अब्बा हुज़ूर की अप्लीकेशन देने. (कागज़ देती है)

फुर्सत : (कागज ले कर) कैसी अप्लीकेशन?

अनारकली : सिक लीव की. अब्बा हुज़ूर ने कहा था कॉलेज से आते हुए दे देना...और हां शहंशाह सलामत से कहियेगा.दस-पंद्रह

दिनों के लिये कोई दूसरा ड्राईवर रख लें. अच्छा चलती हूं....गुड बाय खुदा हाफिज़... (जाने लगती है)

फुर्सत : अरे-अरे अनारकली, इतनी जल्दी कहां चली... आज पहली बार दरबार में आई है बिना मुंह मीठा किये चली गई तो तेरे अब्बा फकीरुद्दीन को क्या मुंह दिखाऊंगा. तू यहीं ठहर मैं अभी आया.

(फुर्सत अंदर जाता है. अनारकली हाथों में किताबें लिये दरबार का मुआयना करती है. तभी अचानक अंदर से शहज़ादा सलीम तेज़ी से आते हुए अनारकली से टकरा जाता है.अनारकली की किताबें नीचे गिर जाती हैं. सलीम-अनारकली बैठ कर फिल्म ‘मेरे

महबूब' की स्टाइल में किताबें उठाते हुए एक दूसरे को प्यार भरी नज़रों से देखते है. बॅक ग्राउंड में रोमान्टिक म्यूज़िक के साथ गाना सुनाई देता है.)

गाना : मेरे महबूब तुझे मेरी मुहब्बत की कसम.. (दोनों एक दूसरे को देखते हुए खड़े होते हैं.)

सलीम : (दिलीप कुमार के अंदाज़ में) ऐसा लगता है मैंने तुम्हें पहले भी कहीं देखा है.

अनारकली : (रोमान्टिक अंदाज़ में) मुझे भी ऐसा ही लगता हैं... हम पहले भी कहीं मिल चुके हैं. पर कहां?

सलीम : (सोचते हुए) शायद लण्डन में.

अनारकली : (गरदन हिला कर) नहीं.

सलीम : तो फिर पेरिस?

अनारकली : (गरदन हिला कर) ऊ हूं....

सलीम : हां याद आया,हम शायद भिण्डी बाज़ार में मिले थे.

अनारकली : (गरदन हिला कर) वहां भी नहीं...

सलीम : तो फिर तुम ही बताओ हम कहां मिले थे?

अनारकली : पिछले जनम में. (खोये हुए अंदाज़ से देखती है.)

सलीम : (हैरत से) पिछले जनम में...?

अनारकली : हां...पिछले जनम में शहंशाह सलामत ने मुझे दीवार के साथ चुनवा दिया था... और..(भरे गले से)और हम दोनों एक दूसरे से हमेशा-हमेशा के लिये बिछड़ गये थे..जुदा हो गये थे.सैपरेट हो गए थे.

सलीम : (याद करते हुए) हां... याद आया...(ग़ौर

से देखकर) अ.. अनारकली....

अनारकली : सलीम.......

सलीम : मेरी अनारकली...

अनारकली : मेरे सलीम....

(दोनों एक दूसरे से लिपट जाते हैं. (म्यूज़िक) दोनों लिपटे-लिपटे गोलाई में घूमते हैं.)

सलीम : (लिपटे हुए) ओह अनारकली, तुम से मिलने के लिये मेरी रूह तुम्हें ऐसे सर्च कर रही थी जैसे इन्टरनेट पर कोई वेबसाइट सर्च करता है.

अनारकली : (लिपटे हुए) मेरी रूह भी तुमसे मिलने के लिये ऐसे तड़प रही थी जैसे फिश विथाउट वाटर सूप विथाउट टमाटर.

सलीम : डोन्ट वरी अनारकली, अब हम फिर से

मिल गए हैं जल्द ही हम शादी करके टू-इन-वन हो जाएंगे फिर हमें दुनिया की कोई सुपर पावर भी जुदा नहीं कर सकेगी.

(उसी वक्त अचानक शहंशाह सलामत अंदर आते हैं और दोनों को लिपटा देख कर चौंकते हैं.)

शहंशाह : (गुस्से में गरजते हुए) शहज़ादेऽऽऽ

(शहंशाह की आवाज सुन कर सलीम झटके से अलग हो जाता है. अनारकली उसी पोज में स्टैच्यू की तरह (फ्रीज़्ड) हो जाती है.

सलीम : (घबरा कर) ज... जी डैड?

शहंशाह : (भड़कते हुए) डैड के बच्चे, शरम नहीं आती ऐसी बेहूदा हरकत करते हुए...ये

हमारा दरबारे- पार्लियामेंट है या लवर्स-पार्क ? कौन है ये बेअदब लड़की?

सलीम : ल... ल... लड़की...(अनारकली को देख कर) ओ ये...ये... ये तो स्टैच्यू है डैड.

शहंशाह : (चौंक कर) स्टैच्यू? हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो शहज़ादे...

सलीम : मैं सच कह रहा हूं डैड...कसम आपकी मूछों की..ये रियली स्टैच्यू है.

शहंशाह : हूं... हम खुद मुआयना करेंगे.....

(शहंशाह अनारकली को चारों तरफ घूम कर देखते हैं अनारकली स्टैच्यू बन कर खड़ी रहती है.)

शहंशाह : (हैरत से) ये तो वाकई स्टैच्यू है.... वल्लाह...क्या ख़ूबसूरत स्टैच्यू है. (अनारकली को छूने जाते हैं मगर सलीम

उनका हाथ रोक लेता है.)

सलीम : ये छूने की नहीं सिर्फ देखने की चीज़ है डैड...

शहंशाह : (खुशी से) भई वाह, हमें तो पता ही नहीं था कि हमारे मुल्क़ में स्टैच्यू असल से ज़्यादा ख़ूबसूरत होते हैं.

सलीम : ये हमारे मुल्क़ का स्टैच्यू नहीं है डैड... ये तो मेरे एक अज़ीज़ दोस्त ने जापान से बर्थ-डे गिफ्ट भेजा है.

शहंशाह : (अनारकली की तरफ पीठ करके) ओ बर्थ-डे गिफ्ट (ठण्डी आह भरते हुए) काश जापान में हमारा भी कोई अज़ीज़ दोस्त होता.

(तभी फुर्सत अली मिठाई और की कोका कोला की बोतल ट्रे में लिये बेख़याली में

आता है.)

फुर्सत : माफ करना अनारकली...

शहंशाह : (चौंककर)अनारकली....कौन अनारकली?

सलीम : वो... वो बात ये है डैड.... कि... मैंने स्टैच्यू का नाम प्यार से अनारकली रख दिया है. (फुर्सत को इशारे में चुप रहने को कहता है.)

(शहंशाह की पीठ अनारकली की तरफ है.अनारकली मौका देख कर कोका कोला स्ट्रॉ से पीने लगती है.)

शहंशाह : (सोचते हुए) अ ना र क ली...

सलीम : (शहंशाह के पास आ कर) कैसा लगता है ये नाम?

शहंशाह : (याद करते हुए) सुना हुआ लगता है... शकल भी कुछ जानी-पहचानी सी है.

शायद हमने ये शक्ल कहीं देखी है. मगर कहां?

सलीम : पिछले जनम में डैड.

शहंशाह : (हैरत से) पिछले जनम में?

सलीम : हां...हम तीनों का Reincarnation हो गया है.

शहंशाह : हां.. हां याद आया...ये तो वही अनारकली है जिसे हमने दीवार से चुनवा दिया था. लगता है इस जनम में स्टैच्यू बन गई है. (खुश हो कर) गुड वेरी गुड. मुग़ले आज़म से पंगा लेने का यही अंजाम होता है. इस जनम में तो क्या अगले सात जनम में भी ये स्टैच्यू ही बनी रहेगी.

(शहंशाह अचानक मुड़ते है. अनारकली

तुरंत स्टैच्यू की तरह दोबारा (फ्रीज़्ड) हो जाती है. उसके हाथ में (स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी) की मशाल की तरह कोका कोला की बोतल है.

शहंशाह : (हैरतसे)अरेये क्या है? स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी?

सलीम : नो स्टैच्यू ऑफ अनारकली.

शहंशाह : मगर इसका पोज़ कैसे बदल गया?

(सलीम और फुर्सत एक दूसरे को देखते हैं.)

फुर्सत : गुस्ताखी माफ हुजूर... आज कल की टेक्नोलॉजी ने इतनी तरक्की कर ली है कि चलते-फिरते इलैक्ट्रॉनिक स्टैच्यू बनने लगे हैं. मैं अभी इसका रिमोट कंट्रोल लाता हूं. (फुर्सत जाता है.)

शहंशाह : (हैरत से) इलेक्ट्रॉनिक स्टैच्यू???

सलीम : यस डैड, ये स्टैच्यू चलते-फिरते हैं और डांस भी करते हैं.

शहंशाह : क्या वाकई.हमने तो आजतक नहीं सुना.

सलीम : अब आप खुद देखियेगा...(फुर्सत रिमोट ला कर देता हैं.)

सलीम : (रिमोट दबा कर) डान्स...

(अनारकली म्यूजिक पर रोबोट की तरह हाथ-पैर हिलाते हुए डान्स करती है. शहंशाह हैरत से खड़े देखते रह जाते हैं. सलीम अनारकली को डान्स कराते हुए बाहर निकल जाता है.शहंशाह स्टैच्यू की तरह खड़े के खड़े रह जाते है.फुर्सत अली उन्हें ग़ौर से देखता है.)

फुर्सत : हुजूर....जहांपनाह....योअर हाईनेस ...

गॉड फादर, (ऑडियंस से) लगता है अनारकली की खूबसूरती देखकर ये भी इलेक्ट्रॉनिक स्टैच्यू बन गये...जस्ट ए मिनट..अभी इनके रिमोट कन्ट्रोलर को बुलाता हूं...(ज़ोर से आवाज लगाते हुए) बेगम साहिबा ऽऽऽऽऽ

शहंशाह : (झटके से होश में आते हुए)क...क..कहां है बेगम?

फुर्सत : अंदर आपको बुला रही हैं. आपका ऑमलेट बनाएंगी.

शहंशाह : (घबराकर) हमारा ऑमलेट???

फुर्सत : आई मीन आपके लिए ऑमलेट बना रही हैं. चलिए जल्दी.

शहंशाह : ठीक है चलो चलो....

(दोनों अंदर जाते हैं लाइट डिम होतीहै.)

✍ अनिल निगम ‘बेख़बर’

सीन नं.5 स्थानः दरबार समयः दिन
पात्रः शहंशाह,फुर्सत,तुर्रम,मिनिस्टरे-एजुकेशन, दाउद, सिपाही

(स्टेज की लाइट ऑन होती है. बाहर से तुर्रम खां आता है और दरबार में किसी को ना देख कर बड़ी स्टाइल से शहंशाह की कुर्सी के पास जाकर कुर्सी को हसरत भरी नजरों से देखता है.तभी पीछे-पीछे मिनिस्टर-ए-एजुकेशन आता है.)

मि.एजुकेशनः का देख रहे हैं तुर्रम भाई?

तुर्रम : अपना फ्यूचर ....कल ये शाही कुर्सी मेरी होगी... (छाती ठोक कर) सिर्फ मेरी.

मि.एजुकेशनः (धीरे से) काहें फिकर करते हैं हजूर...ई कल बहुत जल्दी आज में बदलने वाला है. हम अंगूठा छाप एजुकेसन मिनिस्टर

जरूर है मगर पालीटिक्स में कोई हमारा अंगूठा नहीं पकड़ सकता हां. अइसा एक्टर पकड़ के लाये हैं कि, उसकी एक्टिंगिया देख के आप दांतों तले पंजा ना चबा जायें तो हमार नाम लालू परसाद बिहारी नाहीं हां.

(तभी शहंशाह अंदर से पाइप पीते हुए आते हैं उनके पीछे फुर्सत भी है. तुर्रम और मि.एजुकेशन शहंशाह को सलाम करते हैं. शहंशाह शाही कुर्सी के पास आकर खड़े हो जाते हैं.)

मि.एजुकेशनः (शहंशाह के पास जा कर) हजूर हमने बड़ी चालाकी से देस के हेड आफ दि क्रिमिनल्स को इहां बुला लिया है.

शहंशाह : क्या? कौन है वो? उसे फौरन हमारे

सामने पेश किया जाय.

(मि. एजुकेशन ताली बजाता है. काला चश्मा और बढ़िया सूट पहने एक आदमी को पकड़ कर सिपाही अंदर लाता है.)

दाउद : (सिपाही को डपटते हुए) ऐ हाथ छोड़ बे.

(सिपाही घबरा कर उस आदमी का हाथ छोड़ देता है. आदमी बड़ी शान से चलता हुआ शहंशाह के सामने आ कर खड़ा हो जाता है.)

शहंशाह : क्या नाम है तुम्हारा?

दाउद : (अकड़ कर) दाउद भाई.

तुर्रम खां : पूरा नाम बताओ.

दाउद : (शाही कुर्सी पर बैठते हुए) दाउद भाई दुबईपुरिया.

(फुर्सत नाम सुनते ही गश खा कर

गिरता है.)

शहंशाह : (गुस्से में) ये क्या गुस्ताख़ी है? जानते नहीं ये शहंशाह की कुर्सी हैं.

दाउद : (आराम से पैर फैला कर) अपन भी अण्डर वर्ल्ड का शहंशाह है.

शहंशाह : (भड़क कर) ख़ामोश...तुम्हारी ये मजाल हमारी ही कुर्सी पर बैठकर हमसे ही जुबान दराज़ी करते हो.

मि.एजुकेशन: जाने दीजिये हजूर....ई आजकल के क्रिमिनल बहुतै बदतमीज हो गये हैं. ई लोगन हकूमत को तो जइसे चिड़ी का गुलाम समझते हैं.

शहंशाह : मगर हम चिड़ी के गुलाम नहीं हैं... तुर्रम ख़ान.

तुर्रम : यस योर हाईनेस?

शहंशाह : इस बदअख़लाक, बेअदब क्रिमिनल को फौरन जेल में कैद कर दिया जाय.

तुर्रम : इसके लिये हमें परमीशन लेनी पड़ेगी योर हाइनेस.

शहंशाह : परमीशन? क्या इसके लिये भी हमें अमेरिका भी परमीशन लेनी पड़ेगी.

तुर्रम : बिल्कुल नहीं.

शहंशाह : तो फिर किसकी परमीशन लेनी पड़ेगी?

तुर्रम : खुद इसकी.

(दाउद बैठा आरामसे कान कुरेद रहाहै.)

शहंशाह : नॉनसेन्स हूं...तो इसकी ताक़त इतनी बढ़ गई है. ठीक है अब हम दिखाते है इसे अपनी ताक़त. फुर्सत अलीऽऽऽ फुर्सत अलीऽऽऽ

फुर्सत : (झटके से उठ कर) जी हुज़ूर?

शहंशाह : (गुस्से में) हमारी तलवार लाओ. हम अभी इसकी गरदन उड़ा देंगे.

फुर्सत : (शहंशाह को एक कोने में ले जा कर धीरे से) क्यों अपनी इज़्ज़त की बिरयानी पकवाते हैं हुजूर.... आपकी तलवार को तो कब का जंग लग चुका है. अब उसकी धार से एक मुर्गे की गरदन तो कटती नहीं इतने बड़े क्रिमिनल की गरदन कैसे उड़ाएंगे हुजूर. वैसे भी आपको तलवार चलाने की प्रैक्टिस नहीं है खुदा ना ख़ास्ता कलाई में मोच-वोच आ गई तो...

शहंशाह : (डपट कर) शटअप. हमारी शाही चेअर पर कोई क्रिमिनल बैठे ये हम हरगिज़ गंवारा नहीं कर सकते. कहां है हमारी

बंदूक?

मि.एजुकेशनः हजूर आप तनि क्रोध पर काबू रखें... हम अभी इसको कुर्सी से उठा देते हैं. (दाउद के पास जाकर हाथ जोड़ते हुए) भय्या दाउद, काहें हकूमत की फजीहत कराते हो? प्लीज उठ जाओ ना कुर्सी से हमरे बाप.

दाउद : (कुर्सीसे उठते हुए)बाप बनायातो उठ जाताहै अपन.

फुर्सत : (शहंशाह से) कुर्सी ख़ाली हो गई हुजूर जल्दी से बैठ जाइये वरना कोई दूसरा हथिया लेगा.

(शहंशाह जल्दीसे कुर्सी पर बैठ जाते हैं.)

दाउद : वइसे भी अपनी हकूमत कुर्सी से नहीं बल्कि धन और गन से चलती है.

तुर्रम : देखो. तुम अपनी हुकूमत कैसे चलाते हो इसकी हमारी हकूमत को परवाह नहीं मगर तुम्हें मुल्क़ के क़ानून से खिलवाड़ करने की इजाज़त नहीं दी जा सकती.

दाउद : (हंसते हुए) अपन कानून के साथ खिलवाड़ नहीं सिर्फ हंसी-मज़ाक करता है मिनिस्टिर साब.

मि.एजुकेशन: ये झूट बोलता है हजूर... इसके खिलाफ पुलिस में बहुत कम्पलेंट हैं. चाहें तो चारज सीट मंगा कर देख लें.

शहंशाह : हूं...इसके खिलाफ पुलिसकी चार्जशीट पेश की जाय.

फुर्सत : (आवाज़ लगा कर) चार्ज शीट लाई जाय. (सिपाही कागज़ का एक बड़ा सा रोल लाता है जिसके बीच में एक लकड़ी लगी

है जिससे पतंग की फिरकी की तरह रोल घूमता है.सिपाही रोल शहंशाह को देता है.)

शहंशाह : (रोल को हैरत से देखते हुए) ये क्या है?

सिपाही : चार्ज शीट हुजूर. (सिपाही जाता है.)

शहंशाह : फुर्सत अली, पढ़ कर सुनाओ इसके ख़िलाफ क्या-क्या जुर्म दर्ज हैं?

फुर्सत : (काग़ज़ खींच कर देखता है शहंशाह रोल फिरकी की तरह पकड़े हैं.) हुजूर इसकी जुर्म-कुण्डली तो बहुत लम्बी है.स्मगलिंग, किडनैपिंग, ब्लैक मार्केटिंग, थ्रेटेनिंग, मर्डरिंग, लूटिंग, हफ्ता वसूलिंग, एटम बम ब्लास्टिंग, एवरी डे गैंग वार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार शनिवार.....

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

शहंशाह : ओके... ओके... (रोल देते हुए) अगर इसने इतने सारे जुर्म किये हैं तो अब तक इसे सज़ा क्यों नहीं दी गई?

मि.एजुकेशन: हजूर इसने जुर्म किये लेकिन सुबूत नहीं दिये.

शहंशाह : (डपट कर) ख़ामोश... सुबूत नहीं दिये तो क्या? चश्मदीद गवाह तो होंगे.

तुर्रम : गवाह तो बहुत हैं योर हाईनेस, मगर वो आ नहीं सकते.

शहंशाह : क्यों नही आ सकते?

तुर्रम : क्यों कि वो सब उतर चुके हैं.

शहंशाह : कहां?

तुर्रम : मौत के घाट.

मि.एजुकेशन: मुर्दों की गवाही चलेगी हजूर?

शहंशाह : शटअप.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

(तभी दाउद के मोबाइल फोन की घंटी बजती है.)

दाउद : (फोन पर जोर से) हैलो कौन?...गूंगा शेट्टी.बोल बोल... क्या? माल आ गया... कितने का माल है? पचास खोखा. ठीक है अपन चेक करने को आता है... हां-हां तू फिकर मत कर सैम्पल का बिस्कुट अपुन के खीसे में है....रख दे फोन. (फोन बंद करके) थैन्क्स...अपुन चलता है...(जाने लगता है.)

शहंशाह : ठहरो. (दाउद रूक कर पलटता है) फुर्सत अली.

फुर्सत : जी हुजूर?

शहंशाह : इसकी तलाशी लो. सुबूत अभी मिल जायगा.

(फुर्सत डरते हुए दाउद की तलाशी लेता है उसे शर्ट की जेबमें एक बिस्कुट मिलता है.)

फुर्सत : (खुशी से) हुजूर बिस्कुट.

शहंशाह : (खुशी से खड़े होकर) वेरी गुड... सोने के?

फुर्सत : नहीं...(बिस्कुट खाते हुए) खाने के...पार्ले जी. वेरी टेस्टीजी.

शहंशाह : शटअप.

दाउद : (ठहाका लगाता है.) अरे हुजूर... अपुन के खिलाफ सुबूत ढूंढने से पहले अपने दरबार के गद्दारों को ढूंढिये जो पगार आप की खाते हैं पन हुकुम अपुन का बजाते हैं. जब तक वो सलामत हैं, अपुन के खिलाफ आप को तो क्या, खुद अपुन

को भी सुबूत नहीं मिल सकता.

तुर्रम : बताओ कौन है वो गद्दार?

दाउद : ..... भान सिंह. **(म्यूज़िकल बैंग)**

शहंशाह : (चौंक कर) भान सिंह?

फुर्सत : (हैरत से) नहीं हुजूर... ये नहीं हो सकता.

मि.एजुकेशन: भानसिंह के खिलाफ तुमरे पास कौउनौ सुबूत-वबूत है का?

दाउद : (मुस्कुराते हुए) गद्दारी के धंधे में लिखा-पढ़ी नहीं होती.

तुर्रम खां : मगर तुमने भान सिंह का नाम क्यों बताया? वो तो तुम्हारे साथ है.

दाउद : है नहीं था. मगर अब उसकी नज़र धंधे पर नहीं..बाशा की कुर्सी पर है. होशियार रहना बीड़ू ..... कहीं वो तुमारे बाशा

को खलास ना कर दे.

शहंशाह : (गुस्से में चीख कर) खाऽ मोऽ श. दफा हो जाओ... गेट आउट.

(मि. एजुकेशन...दाउद को जाने का इशारा करता है. दाउद जाता है. सब लोग सहमे हुए शहंशाह के गुस्से भरे चेहरे की तरफ देखते हैं.)

शहंशाह : भान सिंह को गिरफ्तार कर लिया जाय. अभी इसी वक्त....**(म्यूज़िक)**

(स्टेज की लाईट्स धीरे-धीरे डिम होती हैं.)

सीन नं.6स्थानः तुर्रमहाउस समयः दिन

पात्रः तुर्रम,मिनिस्टरे-फूड, अख़बारवाला

(स्टेज पर अंधेरा है. तभी दर्शक गैलेरी में एक अख़बार वाला अखबार हवा में लहराते हुए चिल्लाता हुआ आता है.)

अखबारवालाः आज की ताज़ा ख़बर... आज की ताज़ा ख़बर....होम मिनिस्टर गिरफ्तार... भानसिंह को गद्दारी के इल्ज़ाम में बादशाह सलामत ने गिरफ्तार कराया.... आज की ताज़ा ख़बर.(अख़बार वाला चिल्लाता हुआ एकतरफ निकल जाता है.) (स्टेज पर स्पॉट लाईट उभरती है जिसके नीचे तुर्रम खां खड़ा कहकहा लगाता है.)

तुर्रम : हा-हा-हा-हा........

मि.फूड : (दूसरी स्पॉट लाइट के नीचे आते हुए) वाह-वाह, क्या चाल चली है तुर्रम भाया.

एक ही झटके में भान सिंह का हो गया सफाया. (दोनों हंसते है.)

तुर्रम : अब हमें अगली चाल चलने केलिये तैयार रहना है.

मि.फूड : हुकम करो....चाल अगली हो या पिछली सब चलणे के लिये म्हारी पूरी तैयारी है.

तुर्रम : ठीक है. हर डिपार्टमेंट में तैनात हमारे ख़ास आदमियों को इन्फॉर्म कर दीजिये कि शहर की चारों तरफ से नाकाबंदी कर दें. हमारी अगली चाल और भी ज़्यादा ख़तरनाक होगी.

(स्टेज पर अंधेरा होता है.)

(सस्पेन्स म्यूज़िक)

सीन नं.7 स्थानः दरबार समयः दिन

पात्रः फुर्सत, सलीम, अनारकली, भेलपूरीवाला

(स्टेज पर लाईट्स ऑन होती है.फुर्सत अंदर से दरबार में आता है तभी बाहरसे अनारकली आती है.)

अनारकली : फुर्सत चाचा... आदाब.

फुर्सत : आदाब अनारकली.... तुम्हारे अब्बा की तबियत अब कैसी है?

अनारकली : पहले से बेहतर है.

फुर्सत : हूं... आज कैसे आना हुआ?

अनारकली : बस यूं ही (शरमाती है.)

फुर्सत : (हंसते हुए) समझ गया... शहज़ादे से मिलने आई हो ना. अभी बुलाता हूं... (तभी अंदर से शहज़ादा सलीम आता है. सलीम फुर्सत को देख कर हिचकिचाता

है.)

सलीम : ओ हैलो अनारकली,

अनारकली : हैलो...

सलीम : कैसी हो?

अनारकली : अच्छी हूं.

फुर्सत : बस मामला यहीं तक पहुंचा है. अरे हुजूर लखनवी अंदाज़ छोड़िये...हाई स्पीड का ज़माना है, फास्ट ड्राइव कीजिये...तब तक मैं बाहर का ट्रैफिक रोकता हूं.. (फुर्सत बाहर जाता है)

सलीम : (रोमान्टिक अंदाज़ में) अनारकली.

अनारकली : (मुस्कुराते हुए) हूं...

सलीम : तुम इतने लॉंग शॉट में क्यों खड़ी हो? करीब आओ ना. मेरी आंखें तुम्हारा क्लोज़-अप देखने के लिये बेचैन हैं.

(सलीम अनारकली को अपनी तरफ खींच कर बाहों में लेता हैं.)

अनारकली : (अलग होते हुए) ओ हो सलीम...कुछ तो सेन्सर का खयाल करो.

सलीम : सेन्सर. ओ कमॉन डार्लिंग, अगर हम सेन्सर की परवाह करेंगे तो हमारी मुहब्बत के सारे सीन कट जायेंगे. हमारा प्यार तो सेटेलाइट चैनल के प्रोग्राम की तरह है कभी भी दिखाओ कुछ भी दिखाओ ना कोई सेन्स ना कोई सेन्सर.

अनारकली : वो तो ठीक है... लेकिन अगर शहंशाह सलामत ने हमें यहां देख लिया तो जानते हो क्या होगा?

सलीम : क्या होगा?

अनारकली : हमारी लव स्टोरी का यहीं दि एण्ड हो

जायगा.

सलीम : नहीं अनारकली, हमारी मुहब्बत कोई आर्ट फिल्म नहीं जो कहीं भी उसका दि एण्ड हो जाये. अभी तो हमारी मुहब्बत की पहली रील शुरू हुई है अभी तो क्लाइमेक्स बहुत दूर है.

अनारकली : लेकिन जुहू चौपाटी तो नज़दीक है. चलो ना वहां जा कर किसी लेटेस्ट टयून पर डुएट गाना गाते हैं.

सलीम : गुड आइडिया...(मोबाइल उठाते हुए) मैं अभी फोन करके बुलाता हूं.

अनारकली : (हैरत से) किसको?

सलीम : ए. आर. रहमान को. अच्छी ट्यून बना कर देगा.

अनारकली : ओ डोंट बी सिली... कम ऑन...

(अनारकली सलीम को बाहरले जाती है.)

(स्टेज पर लाइट इफेक्ट बदलता है जिससे मुंबई की जुहू चौपाटी का माहौल नज़र आता है. तभी सलीम अनारकली रोमांटिक अंदाज़ में आते हैं, पास ही एक भेलपूरी वाला खोमचा लगाए खड़ा है. सलीम अनारकली बैक ग्राउंड से बजते हुए रोमांटिक गाने की धुन पर भेलपूरी वाले के चारों तरफ चक्कर लगाते हुए नाचते गाते हैं. भेलपूरी वाला दोनों को देखता है. गाना ख़त्म होता है.)

भेलपूरीवाला: (आवाज़ लगाते हुए) भेलपूरी....भेलपूरी..

अनारकली : (प्यार से) सलीम डार्लिंग, क्या तुम मेरा एक काम करोगे?

सलीम : तुम्हारे लिए ये शहज़ादा सलीम कुछ भी

करने को तैंयार है माई स्वीट हार्ट...कहो तो अभी चांद-तारे तोड़ कर ले आऊं? कहो तो अपनी जान दे दूं? तुम कहो तो शारूख़ ख़ान से मिलवा दूं?

अनारकली : नहीं मुझे ये सब कुछ नहीं चाहिए.

सलीम : तो बताओ मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?

अनारकली : भेलपूरी खिला दो.

सलीम : (हैरत से) भेलपूरी???

अनारकली : हां, मुझे भेलपूरी बहुत पसंद है.

सलीम : लेकिन मेरे पास छुट्टे पैसे नहीं हैं अनारकली.

भेलपूरीवाला: कोई बात नहीं बाबूजी, क्रेडिट कार्ड भी चलेगा.(तीनों हंसते हैं)

(स्टेज पर अंधेरा होता है.)

सीन नं.8 स्थानः दरबार समयः दिन

पात्रः शहंशाह,फुर्सत,मिनिस्टरे-इंफॉर्मेशन,सलीम, बेगम, लिपटन, लखन

(स्टेज की लाइट्स ऑन होती है.मिस लिपटन दरबार में बाहर से दाखिल होती है. दरबार में कोई नहीं है. लिपटन इधर-उधर देखती है और मौका पाकर किसी चीज़ को तलाश करने लगती है. उसी वक्त शहंशाह की अंदर से आवाज़ सुन कर लिपटन सावधान हो जाती है. वो तलाशी लेना छोड़ देती है.

शहंशाह की आवाजः फुर्सत अलीऽ ऽ ऽ फुर्सत अलीऽ

(अंदर आते हुए) पता नहीं कहां गुल हो जाता है ईडियट.(लिपटनको देखकर) अरे मिस लिपटन,आप कब तशरीफ लाई?

लिपटन : (पर्स से चॉकलेट निकालते हुए) अम टशरीफ नहीं, फॉरेनका चॉकलेट लाया योर हाइनेस...आपका वास्ते.

शहंशाह : शुक्रिया मिस लिपटन, मगर हम चॉकलेट नहीं खाते.

लिपटन : (अदा दिखाते हुए) आज खाना पड़ेगा... हमारा वास्टे... प्लीज़.

शहंशाह : (हंसते हुए) ओके-ओके... आप कहती हैं तो खा लेते हैं. (हाथ बढ़ा कर) लाइये...

लिपटन : (स्टाइल से) ओ नो...अम आपको अपना हाथ से खिलायेगा.

शहंशाह : ओ नो...

लिपटन : (आगे बढ़ते हुए) ओ यस...

शहंशाह : (पीछ हटते हुए) नो...

लिपटन : (और आगे बढ़ते हुए) यस (शहंशाह के

गले में बाहें डालती है.)

शहंशाह : (इधर-उधर देख कर बाहें डालते हुए) ओके यस???

(उसी वक़्त अंदर से बेगम की आवाज़ सुन कर शहंशाह घबरा जाते हैं.)

बेगम की आवाजः अजी मैंने कहा सुनते हो सलीम के डैड ऽ ऽ ऽ

शहंशाह : (घबरा कर) ओ माई गॉड....ब...ब.. बड़ी बेगम...अब क्या करेंऽ....आइडिया. ..स्टैच्यू.

(लिपटन हाथ में चॉकलेट पकड़े हुए स्टैच्यू की तरह खड़ी रह जाती है.)

बेगम : (आते हुए) ओ हो कब से बुला रही हूं.. (लिपटन को देख कर) अरे... ये फिर आ गयी कलमुंही.

शहंशाह : जुबान को गियर लगाओ बेगम, ये कलमुंही नहीं मिस लिपटन का स्टैच्यू है, स्टैच्यू.

बेगम : (हैरत से देखते हुए) स्टैच्यू?

शहंशाह : हां.... इलैक्ट्रॉनिक स्टैच्यू. मिस लिपटन ने जापान से मंगवाया है.

बेगम : (हैरत से) अच्छा.

शहंशाह : यस...रिमोट कन्ट्रोल से चलती-फिरती भी है.

बेगम : (समझते हुए) हूं.....मगर मेरे पास एक ऐसा रिमोट कंट्रोल है जिससे ये अभी दौड़ती-भागती नज़र आयेगी....(बेगम सैंडल हाथमें उठाती है लिपटन जान बचा कर शहंशाह के चारों तरफ भागती है.)

(कॉमेडी हंगामा किसी तरह लिपटन बेगम

से बच कर बाहर भागने में कामयाब हो जाती है.)

बेगम : (भड़कते हुए) तो तुम अपनी रंगीन मिज़ाजी से बाज़ नहीं आओगे....डोंट फारगेट दैट नाउ यू आर सिक्सटी इयर्स ओल्ड.

शहंशाह : (हंसते हुए) हम ओल्ड हैं तो क्या हुआ बेगम? हमारा दिल तो बोल्ड है (बेगम का प्यार से गाल सहलाते हैं.)

बेगम : (हाथ झटक कर) बस-बस...अपनी ये एक्टिंग किसी थियेटर में जाकर दिखाना. मेरे सामने तुम्हारी ड्रामेबाज़ी नहीं चलेगी.

शहंशाह : ये तुम क्या कह रही हो बेगम?

बेगम : कहने के लिये अब बचा ही क्या है? मेरे सारे डायलॉग ख़तम हो गये मगर आपकी

मूछों पर जूं तक नहीं रेंगी. (रोते हुए) आपसे शादी करके मेरी तो क़िस्मत ही फूट गई. (धम्म से सोफे पर बैठते हुए सिर पकड़ लेती है) ऐसे शहंशाह से शादी करने से तो अच्छा था मैं सरकारी क्लर्क से शादी कर लेती.

शहंशाह : (चिढ़ कर) ठीक है तो अब भी क्या बिगड़ा है? जाओ कर लो सरकारी क्लर्क से शादी... दो दिन में आटे-दाल और ब्रेड-बटर का भाव पता चल जायगा.

बेगम : (हाथ नचा कर) मुझे अमूल बटर का भाव पता है.

शहंशाह : मगर तुम्हें ये नहीं पता कि सरकारी क्लर्क की तनख्वाह कितनी कम होती है?

बेगम : तनख्वाह से क्या होता है जी... ऊपर

की आमदनी भी तो कोई चीज़ है...... तुम्हारी ये आशिकमिज़ाजी देख कर तो जी में आता है (खड़ी हो कर) अभी स्विमिंग पूल में छलांग लगा कर खुदकुशी कर लूं.

शहंशाह : (फोन उठाते हुए) एक मिनट रुको....

बेगम : (हैरत से) क्यों?

शहंशाह : तुम्हारा लाइफ इन्श्योरेन्स रिन्यू करवा लें.

(बेगम गुस्से से पैर पटक कर अंदर जाती हैं. शहंशाह हंसते हैं.)

(शहंशाह आराम से शाही कुर्सी पर बैठते हैं तभी बाहर से नारों का शोर सुनाई देता है.)

नारे : हमारी मांगें पूरी हों...जो चाहे मजबूरी हो... हम अपना हक ले के रहेंगे...जब

चाहे हड़ताल करेंगे. मुग़ले आज़म हाय-हाय...मुग़ले आज़म हाय-हाय.. वगैरह...वगैरह...

फुर्सत की आवाजः अरे-अरे... कहां चले आ रहे हो बाहर निकलो..

शहंशाह : (आवाज लगा कर) फुर्सत अली ऽ ऽ ऽ

फुर्सत : (आकर) जी हुजूर?

शहंशाह : बाहर ये कैसा शोर है?

फुर्सत : क्या बताऊं हुजूर.. भिखारियों का मोर्चा आया है.

शहंशाह : (हैरत से) भिखारियों का मोर्चा?

फुर्सत : जी हुजूर... उनकी यूनियन का प्रेसीडेन्ट आपसे मिलना चाहता है. वो उनकी मांगे रखना चाहता है.

शहंशाह : ठीक है... आने दो.

फुर्सत : (इशारा करते हुए) अंदर आओ.

(एक सूट-बूट-टाई पहने कपड़ों पर पैबंद लगाये नौजवान अंदर आकर शहंशाह को सलाम करताहै.)

शहंशाह : हूं... तो तुम बेगर्स यूनियन के प्रेसीडंट हो?

लखन : यस योर हाइनेस...(बैग से बड़ा सा कार्ड निकाल कर देता है) ये रहा मेरा विज़िटिंग कार्ड.

फुर्सत : (कार्ड देख कर) ये विज़िटिंग कार्ड है या राशन कार्ड?

लखन : नो राशन कार्ड... हम भिखारी ज़रुर हैं मगर राशन का गेंहू नहीं खाते.

शहंशाह : हूं...काफी अमीर भिखारी लगते हो...अरे वाह! नरीमन प्वाइंट पर तुम्हारा ऑफिस

भी है.

लखन : यस सर... माई फोन नम्बर इज़ वन टू का फोर फोर टू का वन.... माई नेम इज़ लखन.

शहंशाह : तुम हमसे क्या चाहते हो. बताओ क्या मांगे हैं तुम भिखारियों की? रोटी, कपड़ा और मकान??

लखन : नहीं...गाड़ी-बंगला और पकवान.

शहंशाह : (भड़क कर) नानसेंस....तुम भीख मांग रहे हो या दहेज़?

लखन : एक ही बात है हुजूर....दहेज मांगने वाले भी हमारी बिरादरी के होते हैं मगर हमारा स्टैण्डर्ड उनसे काफी ऊंचा है.

फुर्सत : वो कैसे.

लखन : हम अपनी घर की बहुओं को घासलेट से

नहीं जलाते.... पेट्रोल से जलाते हैं.

शहंशाह : (भड़क कर) हट्टे-कट्टे हो कर भीख मांगते हुए तुम्हें शरम नहीं आती? हम पूछते है तुम मेहनत-मज़दूरी क्यों नहीं करते?

लखन : क्या आपने कभी भीख मांगी है?

शहंशाह : शटअप. हम इस मुल्क के शहंशाह हैं और शहंशाह किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता.

लखन : वर्ल्ड बैंक के आगे भी नहीं?

शहंशाह : तुम कहना क्या चाहते हो?

लखन : यही कि आजकल भीख मांगना बड़ी मेहनत का काम है हुजूर?

फुर्सत : (हैरत से) मेहनत का काम?

लखन : जी हां... देश-विदेश कटोरा लेकर घूमना पड़ता है तब कहीं भीख मिलती है.

कभी-कभी तो खाली कटोरा लौटना पड़ता है. ऊपर से एक्सपेन्सेस भी कितने बढ़ गये हैं.

शहंशाह : कैसे एक्सपेन्सेस?

लखन : पब्लिसिटी एक्सपेंस, पुलिस को हफ्ता, मिनिस्टरों को इलेक्शन का चंदा, गुण्डोंको प्रोटेक्शन मनी.इट इज़ वेरी डिफिकल्ट टू बिकम ए सक्सेसफुल बेगर यू नो

फुर्सत : अरे वाह काफी एजुकेटेड भिखारी लगते हो मियां.

लखन : यस सर, एम. कॉम विथ हॉनर...मगर हमारे मुल्क में डिग्री का कोई हॉनर नहीं है.

शहंशाह : तुम कोई बिज़नेस तो कर सकते थे.

लखन : किया था मैं बहुत बड़ा बिज़नेसमैन बन

गया था.

फुर्सत : तो फिर बिज़नेसमैन से भिखारीमैन कैसे बन गये?

लखन : इन्कम टैक्स भरते-भरते. इसीलिये मैंने भीख मांगने का फायदेमंद धंधा शुरू कर दिया.

शहंशाह : भीख मांगने में क्या-क्या फायदे हैं?

लखन : नो इन्वेस्टमेंट, नो पनिशमेंट, नो लाइसेंस, नो सिविक सेंस, नो इन्कम टैक्स, नो सेल्स टैक्स, नो वाटर टैक्स नो क्वाटर टैक्स, नो वेल्थ टैक्स नो...

फुर्सत : (टोकते हुए) बस-बस... अगर तुम इसी तरह टैक्स पर टैक्स गिनवाते रहे तो शो का टाइम भले ही ख़तम हो जाय मगर टैक्स ख़तम नहीं होंगे...क्यों ठीक है ना

हुजूर?

शहंशाह : ठीक है मगर हुकूमत पब्लिक की भलाई के लिये ही टैक्स वसूलती है.

लखन : लेकिन मलाई तो आपके मिनिस्टर्स खा जाते हैं.

फुर्सत : (हैरत से)हुजूर, अंदर की बात इसे कैसे पता चली?

शहंशाह : (डपट कर) तुम चुप रहो फुर्सत अली... (लखन से) देखो मिस्टर लखन हम तुम्हारी यूनियन की गाड़ी,बंगला और पकवान की मांगे नामंजूर करते हैं. तुम लोग चुपचाप यहां से चलते बनो...हमारे सामने तुम्हारी चिकन नहीं गलन वाली.

फुर्सत : चिकन नहीं हुजूर दाल कहिये दाल.

शहंशाह : शटअप.दाल हमें पसंद नहीं.(लखन से)

जाओ अपने तमाम भिखारियों से कह दो यहां से दफा हो जायं.

लखन : सोच लीजिये योर हाइनेस, देश के सारे भिखारी एक साथ स्ट्राइक कर देंगे.

शहंशाह : जाओ कर दो स्ट्राइक.हमें इसकी कोई परवाह नहीं.

(तभी मिनिस्टर-ए-इन्फार्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग अंदर आता है.)

मि.इन्फार्मेशन: ऐसा ना कहें श्रीमान्, अन्यथा अनर्थ हो जायगा.

शहंशाह : क्या मतलब है आप का?

मि.इन्फार्मेशन: मेरा तात्पर्य ये है श्रीमान् कि यदि देश के भिखारी हड़ताल कर देंगे तो देश की जनता दान-पुण्य कैसे करेगी...स्वर्गएवं मोक्षकी प्राप्ति कैसे होगी? अनादि काल

की भिक्षा परम्परा का सर्वनाश हो जायगा.

शहंशाह : मिनिस्टर साहब, आपको जो कुछ कहना है हिन्दी में कहिये.

लखन : इनका मतलब है योर हाइनेस कि भिखारियों के बिना मंदिर, मस्जिद और गिरजाघर सूने हो जायेंगे.

इन्फार्मेशनः जी हां श्रीमान्... तीर्थ स्थानों में कऊवे बोलेंगे... कांव.. कांव..कांव.. कांव...

शहंशाह : शटअप.

लखन : और हुजूर सबसे बड़ा नुकसान ये होगा कि फॉरेन के टूरिस्टों का अट्रेक्शन खत्म हो जायगा. हमें भीख देते हुए फोटो नहीं खिंचवा सकेंगे. आपको तो पता होगा हुजूर कि आजकल हमारे देश के

भिखारियों पर एक बहुत बड़े बजट की फिल्म बन रही है जो इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जायगी. उसे अवार्ड दिया जायगा.

शहंशाह : (खुशी से) अच्छा. गुड... वेरी गुड...

इन्फार्मेशन : जी, यदि भिखारी ना होंगे तो हमारे देश का मान-सम्मान मिट्टी में मिल जायगा श्रीमान्.

शहंशाह : (सोचते हुए) नहीं-नहीं... हम ऐसा हरगिज़ नहीं होने देंगे... मुल्क की इज़्ज़त के लिये हम कुछ भी कर सकते हैं.

फुर्सत : लेकिन हुजूर...

शहंशाह : तुम चुप रहो... इन भिखारियों की मांगें फौरन पूरी की जायं.

सलीम : (अचानक आ कर) ठहरिये डैड....ये

आप क्या कर रहे हैं? इन काहिल और बेग़ैरत मुस्टण्डों की मदद कर रहे हैं. मदद करनी है तो उन अनाथ बच्चों की कीजिये जो दाने-दाने को मोहताज हैं. उन लाखों बेसहारा औरतों की मदद कीजिये जिन्हें रोटी ख़रीदने के लिये जिस्म बेचना पड़ता है. करोड़ों मजबूर इन्सान ज़िंदगी को एक सज़ा की तरह काट रहे हैं, उनकी मदद कीजिये. ऐसे नालायक लोगों की मदद करने से मुल्क़ की तरक्की नहीं बरबादी होती है.

फुर्सत : शहज़ादे साहब बिल्कुल दुरूस्त फरमाते हैं हुजूर.

शहंशाह : (सोचने लगते हैं) हूं...

इन्फार्मेशन : क्या विचार करने लगे श्रीमान्...राजनीति

में सोच-विचार नहीं करना चाहिये... अन्यथा दुविधा की स्थिती उत्पन्न हो सकती है श्रीमान्.

शहंशाह : अवश्य उत्पन्न हो सकती है श्रीमान्.. हमारे मन-मस्तिष्क में भी इसी दुविधा का घनघोर घटाटोप छाया है.जो किसी भी क्षण घमासान युद्ध छेड़ देगा.

(सब हैरत से शहंशाह को देखते हैं.)

इन्फार्मेशन : (हैरत से) कैसी दुविधा श्रीमान?

शहंशाह : यही कि पहले इसको धक्के दे कर (भिखारी की तरफ इशारा करते हुए) बाहर फिकवाएं या आपको.

इन्फार्मेशन : (घबरा कर) अर्थात्...

शहंशाह : अर्थात्.. (चीख कर) गेट आउट.

(लखन और मि.इन्फार्मेशन एण्ड

ब्राडकास्टिंगः घबरा कर बाहर भागते हैं सलीम, फुर्सत अली और शहंशाह हंसते हैं.)

(स्टेज पर अंधेरा होता है.)

सीन नं.9 स्थानः तुर्रमहाउस समयः दिन
पात्रः तुर्रम, मिनिस्टर्स (फूड,फायनेंस,डिफेंस, इंफॉर्मेशन, एजुकेशन,) लिपटन

(स्टेज पर लाल स्पॉट लाईट उभरती है जिसके नीचे गुस्से में तमतमाया हुआ तुर्रम ख़ां नज़र आता है. उसके हाथ में जाम है.)

तुर्रम : (गुस्से में) हूं...शहज़ादा सलीम... हमारी कामयाबी के रास्ते का एक और कांटा... इस कांटे को रास्ते से हटाना ही होगा... शाही कुर्सी अब हमसे ज़्यादा दूर नहीं रह सकती...हम उसे हासिल करके रहेंगे...भले ही कुछ भी करना पड़े... कुछ भी...

(दूसरी स्पॉट लाईट उभरती है जिसके नीचे मिस लिपटन आ कर खड़ी हो

जाती है)

लिपटन : आपने अमको बुलाया मिस्टर तुर्रम खां?

तुर्रम : यस मिस लिपटन, आपने अभी तक हमारा वो काम पूरा नहीं किया. जिसके लिये हमने आपको यहां बुलाया था.

लिपटन : अम शहंशाह के महल में कम्प्यूटर का सीक्रेट डेटा सीडी सीडी सर्च करने का भौट कोशिश किया बट..

तुर्रम : कम्प्यूटर का वो सीक्रेट डेटा सीडी सीडी हमें मिलनी ही चाहिये मिस लिपटन. कन्ट्री की टॉप सीक्रेट इन्फॉर्मेशन्स को हासिल किये बिना हम कामयाब नहीं हो सकते.

लिपटन : यस आई नो...अमको लगटा टुमारा शहंशा ने वो डेटा सीडी किधर टॉप

सीक्रेट प्लेस में छुपा दिया है लेकिन...

तुर्रम : लेकिन से काम नहीं चलेगा. मुझे वो डेटा सीडी चाहिये, हर हाल में चाहिये दैट्स ऑल... आप जा सकती हैं.

लिपटन : ओके... (स्पॉट लाईट से हट जाती है.)

तुर्रम : मिनिस्टर-ए-फूड...

(स्पॉट लाईट के नीचे मिनिस्टर-ए-फूड आता है)

मि.फूड : हें.. हें... हें... बोलो तुर्रम भाया?

तुर्रम : आप पूरे मुल्क की फूड सप्लाई रूकवा दीजिये. पब्लिक को अनाज के एक-एक दाने के लिये तरसा दीजिये.

मि.फूड : हें.. हें... हें... फिकर मत करो भाया... मन्ने ऐसा इन्तजाम कर दूंगों कि पब्लिक अनाज की शकल तक भूल जायगी.

पब्लिक का पेट और पीठ दोनों एक हो जायंगे. लाइक वन पीस...हें.. हें... हें.

तुर्रम : ठीक है.... जाइये और प्लान के मुताबिक फौरन काम शुरू कर दीजिये. (मि.फूड जाता है)

तुर्रम : मिनिस्टर-ए-फायनेन्स...

मि.फायनेंस : (लाईटके नीचे आकर) यस मिनिस्टर-ए- आज़म.?

तुर्रम : कन्ट्री की फायनेन्शियल कण्डीशन कैसी है?

मि.फायनेंस : बिल्कुल वैसी है जैसी आप चाहते हैं हुजूर..पूरे वर्ल्ड मार्केट में हमारी करेन्सी की व्हॅल्यू खोटे सिक्के से भी ज़्यादा डाउन हो गई हैं.

तुर्रम : हूं... मुल्क में हर चीज़ के दाम इतने

ऊंचे होने चाहिये कि पब्लिक के हाथ उन तक पहुंच ही ना सके ताकि हर आदमी के दिल में शहंशाह के ख़िलाफ नफरत हो. सिर्फ नफरत.

मि.फायनेंस : इसका भी मैंने पूरा इन्तजाम कर लिया है हुजूर... इस बार के बजट में हर चीज़ के ऊपर हैवी टैक्स लगेगा... हर टैक्स के ऊपर सुपर टैक्स. उसके ऊपर 10 परसेंट सर चार्ज. सर चार्ज के ऊपर लाठी चार्ज.(दोनों हंसते हैं.)

मि.फायनेंस : इतना ही नहीं तुर्रम साहब, चीज़ें खरीदना तो दूर सिर्फ प्राइज़ पूछने पर भी टैक्स लगेगा.

(दोनों हंसते हैं.)

तुर्रम : हूं... वाकई पब्लिक को कंगाल बनाने का

बढ़िया इंतज़ाम किया है.

मि.फायनेंस : इसके बाद भी अगर पब्लिक की जेब में कुछ बच गया तो उसे भी निकलवाने का पूरा इन्तज़ाम हो चुका है.

तुर्रम : वो क्या?

मि.फायनेंस : मैंने, चोर, लुटेरों और डाकुओं को लाइसेंस दे दिया है वो जब चाहें, जहां चाहें और जिसे चाहें लूट सकते हैं.

तुर्रम : वेरी गुड...

मि.फायनेंस : (थियेटर की ऑडियंस की तरफ इशारा करते हुए धीरे से) हुजूर, इस थियेटर में भी मेरे आदमी तैनात हैं.

तुर्रम : ठीक है. फिलहाल इतना काफी है... कीप इट अप.

मि.फायनेंस : (सिर झुका कर) थैन्क यू... (जाता है.)

तुर्रम : मिनिस्टर-ए-डिफेंस.

मि.डिफेंस : (स्पॉट लाईट के नीचे आकर सैल्यूट मारता है)

तुर्रम : जंग की क्या पोजीशन है?

मि.डिफेंस : एक्सीलेंट. पूरी कंट्री में जंग का प्लेग फैल चुका है. हसबैंड और वाइफ में जंग, डेथ और लाइफ में जंग, पिस्तौल और नाइफ में जंग.मालिक-मज़दूर में जंग गुमनाम-मशहूर में जंग. पैसेन्जर-कंडक्टर में जंग, प्रोडयूसर-एक्टर में जंग.ट्रक और कारमें जंग, पब्लिक और सरकारमें जंग.

तुर्रम : गुड...पब्लिक और सरकार में जंग हमारे मकसद के लिये बेहद ज़रूरी है. इसी में मेरा फायदा है.

मि.डिफेंस : यू आर राईट सर, दो बिल्लियों की

लड़ाई में फायदा हमेशा बंदरका होता है.

तुर्रम : शटअप.....जाइये जंगको और भड़काइये.

(मि. डिफेंस सल्यूट मार कर जाता है.)

तुर्रम : मिनिस्टर-ए-हेल्थ...

एजुकेशन : (स्पॉट लाईट के नीचे आकर) हजूर मिनिस्टर-ए-हेल्थ,अपने जुखाम का इलाज कराने अमेरिका गये हैं.

तुर्रम : क्यों? क्या हमारे मुल्क में ज़ुख़ाम का इलाज करने वाले डॉक्टर नहीं हैं?

एजुकेशन : डॉक्टर तो इहां एक से बढ़ कर एक हैं हजूर लेकिन हमारा मिनिस्टिर अगर देसी डॉक्टरसे इलाज करायेगा तो उसकी नाक नहीं कट जायगी का?

तुर्रम : ठीक है-ठीक है...बताइये आप क्या रिपोर्ट लाये हैं?

एजुकेशन : हम तो अइसी खबर लाया हूं हजूर कि सुनियेगा तो खुसी से फुदकने लगियेगा.

तुर्रम : नानसेंस-हमारे पास फुदकने का वक्त नहीं है. मतलब की बात कीजिये.

एजुकेशन : (एक फोटो देते हुए) ई फोटू देख लीजिये मतलब की बात अपने आप समझ में आ जायगी.

तुर्रम : (फोटो देखते हुए) हूं... शहज़ादा सलीम के साथ ये लड़की कौन है?

एजुकेशन : शहंशाह सलामत के ड्राइवर की बेटी अनारकली. आजकल ई दुनों में चकाचक रोमांस चल रहा है. कल जुहू चौपाटी पर भेलपूरी खा रहे थे कि हमरे साले ने उनकी फोटू खींच ली.

तुर्रम : (मुस्कुराते हुए) वेरी गुड....बहुत अच्छा

किया साले ने. ये फोटोग्राफ कल सुबह के तमाम अख़बारों मे छप जानी चाहिये. (हंसते हुए) अब देखना आगे-आगे होता है क्या?

(स्टेज की लाईट्स बुझती है.)

सीन नं.10 स्थानः दरबार समयः दिन

पात्रः शहंशाह,फुर्सत,तुर्रम,मनिस्टरे-फूड,सलीम, अनारकली, बेगम, सिपाही, जॉज़

(स्टेज पर लाइट जलती है.शहंशाह बाहर से दाखिल होते हैं. उनके साथ में उनका कुत्ता जॉज़ भी है)

शहंशाह : (आवाज लगा कर) फुर्सत अलीऽऽऽ फुर्सत अलीऽऽऽ

फुर्सत : (अंदर से आ कर) जी हुजूर?

शहंशाह : (रैकेट देते हुए) लाईम ज्यूस लाओ.

फुर्सत : आपके लिए या जॉज़ के लिए?

शहंशाह : (चिढ़कर) हमारे लिए ईडियट.

फुर्सत : शक्कर का या बगैर शक्कर?

शहंशाह : बगैर शक्कर.

फुर्सत : नींबू या बगैर नींबू?

शहंशाह : (भड़क कर) स्टुपिड...जाओ जल्दी. और जॉज़ को अंदर ले जाओ.

(फुर्सत जॉज़ को लेकर अंदर जाता है. तभी बेगम आती हैं.)

बेगम : (बड़े प्यार से मुस्कुराते हुए) अजी सुनते हो मेरे सरताज.......

शहंशाह : (हैरत से चौंक कर) तुम्हारी तबियत तो ठीक है बेगम?

बेगम : क्यों, क्या हुआ मेरी तबियत को?

शहंशाह : ज़िंदगी में पहली बार इतने मीठे अंदाज़ में कूक रही होकि हमें शक है तुम्हें डायबटीज तो नहीं हो गया.

बेगम : ओ हो मज़ाक मत कीजिये (शहंशाह के गले में प्यार से बाहें डालती है.) जानेमन आप ही तो मेरी ज़िंदगी के नूर हैं मेरा

सरूर हैं मेरे कोहेनूर हैं.

शहंशाह : (हैरत से) कोहेनूर? हूं... तो तुम हमें मस्का लगा रही हो. ओके ओके बोलो क्या कहना चाहती हो?

बेगम : कहना क्या है कब से आपकी जान खा रही हूं कि मुझे कोहेनूर डायमंड का जड़ाऊ नेकलेस बनवा दीजिये मगर आपके कानों में जूं तक नहीं रेंगती.

फुर्सत : (जूस लेकर आते हुए) जूं नहीं काक्रोच कहिए बेगम साहिबा.

शहंशाह : शटअप...मगर बेगम तुम जानती तो हो कोहेनूर हीरा हमारे मुल्क के पास नहीं है. वो इंगलैंड के शाही घराने के पास है.

बेगम : तो क्या हुआ? उनसे खरीद लीजिये.

शहंशाह : ख़रीदने को तो हम ख़रीद लें पर वो

लोग सेल ही नहीं करना चाहते तो हम क्या करें?

बेगम : तो स्मगल करा लीजिए.

शहंशाह : ये नामुमकिन है बेगम.

बेगम : सब कुछ मुमकिन है अरे जब हमारी कंट्री में चरस, गांजा, अफीम, हेरोइन और दुनिया भर की चीज़ें आसानी से स्मगल हो कर आ सकती हैं तो फिर कोहेनूर हीरा क्या चीज़ है?

शहंशाह : ओफ्फोह बेगम तुम समझने की कोशिश करो.

बेगम : (रूठ कर) मैं कुछ नहीं जानती...अगर मुझे कोहेनूर हीरे का जड़ाऊ नेकलेस नहीं मिला तो मैं शहज़ादे सलीम की बर्थ डे पार्टी में शामिल नहीं होऊंगी हां.

शहंशाह : (परेशान) ये तुम कैसी ज़िद कर रही हो बेगम?

बेगम : (सिसकते हुए) पता है आपके मिनिस्टरों से लेकर म्युनिस्पल कारपोरेटरों की बीवियां तक पार्टियों में लेटेस्ट फैशन के नेकलेस पहन कर आती है, उन्हें देख कर मैं तो शरम से वाटर-वाटर हो जाती हूं.

शहंशाह : मगर बेगम हम उन लोगों से कम्पटीशन नहीं कर सकते.

बेगम : क्यों नहीं कर सकते?

शहंशाह : क्योंकि वो इलेक्शन जीत कर आते हैं, और इलेक्शन जीतने वाला कुछ भी कर सकता है.

बेगम : मैं तुम्हारी कोई बहानेबाज़ी नहीं सुनूंगी,

मुझे कोहेनूर हीरा चाहिए एट एनी कास्ट एण्ड क्रेडिट.

फुर्सत : (अमीन सयानी की स्टाइल में) हुजूर क्यों नाराज़ कर रहे हैं हमारी बेगम साहिबा को? दिला दीजिये ना इन्हें असली कोहेनूर से जड़ा बेहतरीन नेकलेस हमेशा याद रखें कोहेनूर हीरे का एकलौता शो रूम तिकड़म दास जवेरी. टिंग-टांग...

शहंशाह : (हैरत से) तिकड़म दास जवेरी के शोरूम में असली कोहेनूर मगर ये शो रूम है कहां?

फुर्सत : चोर बाज़ार में.(शहंशाह के कान में धीरे से) हुजूर, वहां का डुप्लीकेट माल तो ओरिजनल से भी बढ़िया होता हैं.

शहंशाह : क्या वाकई?

फुर्सत : जी हां...वो तो कहिये मैटीरियल नहीं मिलता वरना वो तो आपका भी डुप्लीकेट बना डालते.

शहंशाह : (डपट कर) शटअप...

बेगम : ये क्या खुसुर-पुसुर हो रही है?

शहंशाह : कु-कु.... कुछ नहीं बेगम.

फुर्सत : तो हुजूर कोहेनूर नेकलेस का आर्डर दे दूं?

शहंशाह : (मुस्कुराते हुए अकड़ कर)हां, दे दो पूरे एक दर्जन.

बेगम : (खुशी से) क्या??? एक दर्जन कोहेनूर... (गश खा कर शहंशाह के ऊपर गिरती हैं...शहंशाह उन्हें बाहों में रोकते हैं.)

शहंशाह : अरे-अरे बेगम... क्या हुआ?

फुर्सत : लगता है खुशी के मारे हार्ट फ्लाप हो

गया.

शहंशाह : शटअप...(तभी बाहर से सलीम आता है.)

सलीम : अरे क्या हुआ मॉम को?

शहंशाह : कुछ नहीं बेटे... ख़ुशी का ओवरडोज़ हो गया... इन्हें अंदर ले जा कर आराम से लिटा दो... थोड़ी देर में ही ठीक हो जायेंगी

(सलीम और फ़ुर्सत बेगम को अंदरन ले जाते हैं.)

(शहंशाह शाही कुर्सी पर बैठ कर हुक्का गुड़गुड़ाते हैं तभी तुर्रम खां अखबार लेकर आता है.)

तुर्रम : (सलाम करते हुए) योर हाइनेस की ख़िदमत में तुर्रम खां का गुड मार्निंग.

शहंशाह : गुड मार्निंग..आओ तुर्रम खां...क्या ख़बर लाये हो?

तुर्रम : योर हाइनेस, लगता है हमें अख़बार वालों पर सेंसर शिप लागू करनी पड़ेगी.

शहंशाह : क्यों?

तुर्रम : क्योंकि वो आपके ख़ानदान की इन्सल्ट करने पर तुले हुए हैं.

शहंशाह : व्हॉट डू यू मीन?

तुर्रम : (अख़बार दिखाते हुए) ये देखिये उन्होंने शहज़ादा सलीम और एक लड़की का फोटो छपा है. दोनों चौपाटी पर खड़े-खड़े भेलपूरी खा रहे हैं.

शहंशाह : क्या?...(अख़बार लेकर ग़ौर से देखते हुए) डर्टी... वेरी डर्टी.

तुर्रम : यस योर हाइनेस, शहज़ादे का इस तरह

रोमांस लड़ाना वाकई डर्टी है.

शहंशाह : रोमांस लड़ाना नहीं, भेलपूरी खाना डर्टी हैं. हम ख़ानदानी शहंशाह हैं.....हमारे पूरे ख़ानदान में किसी ने भेलपूरी नहीं खाई.

तुर्रम : और वो भी एक मामूली लड़की के साथ.

शहंशाह : (अख़बार देख कर) मगर ये तो अनारकली का इलैक्ट्रॉनिक स्टैच्यू है.

तुर्रम : जी नहीं, ये आपके एक मामूली से ड्राइवर की मामूली सी लड़की अनारकली है योर हाइनेस.

शहंशाह : (गुस्से से खड़े हो कर) व्हॉट नानसेंस... शहज़ादा सलीम और एक मामूली ड्राइवर की लड़की से रोमांस.

तुर्रम : यही तो अफसोस है... शहज़ादे को ऐसा

नहीं करना चाहिये. उन्होंने पूरे वर्ल्ड के सामने आपकी नाक कटवा दी.

शहंशाह : ख़ामोश... हमारा सर भले ही कट जाय मगर नाक नहीं कटने देंगे. हम अभी शहज़ादे का कोर्टमार्शल करते हैं.

तुर्रम : ठीक है योर हाइनेस... आप शहज़ादे से निपटिये..मैं अख़बार वालों से निपटता हूं... खुदा हाफ़िज...

(तुर्रम जाता है.शहंशाह गुस्से से आवाज लगाते हैं.)

शहंशाह : सलीमऽऽऽऽ शहज़ादा सलीमऽऽऽऽ

सलीम : (अंदर से आते हुए) यस डैड?

शहंशाह : (गुस्से से) डैड के बच्चे...जंगली,जानवर बदतमीज़..(अखबार दिखाते हुए) हम पूछते हैं ये क्या है?

सलीम : ये शम्मी कपूर की फिल्में हैं.

शहंशाह : ईडियट... हम शम्मी कपूर की नहीं तुम्हारी बात कर रहे हैं. क्या तुम अनारकली के साथ भेल पूरी खाने गये थे?

सलीम : यस डैड?

शहंशाह : क्यों?

सलीम : क्योंकि मुझे भेलपूरी अच्छी लगती है.

शहंशाह : शटअप. हम भेलपूरी की नहीं अनारकली की बात कर रहे हैं.

सलीम : उसे भी भेलपूरी अच्छी लगती है.

शहंशाह : नानसेंस...ये क्या भेलपूरी की रट लगा रखी है. जानते हो अनारकली कौन है?

सलीम : जानता हूं... वो अनारकली है... मेरे सपनों की ड्रीमगर्ल...मेरे ख्वाबों की

हिरोइन माई लव- लव- लव....

शहंशाह : (डपट कर) ख़ामोश....एक अदना से ड्राइवर की लड़की से रोमांस करते तुम शर्म नहीं आती?

सलीम : मगर डैड....

शहंशाह : चुप रहो...हमें तुम्हारी ये हरकते नापसंद हैं... हम नहीं चाहते कि तुम अनारकली से रोमांस करो. तुम्हें उससे मिलना-जुलना बंद करना होगा शहज़ादे.

सलीम : नो... आई कान्ट्..

शहंशाह : व्हाय?

सलीम : क्योंकि मैं अनारकली से परमानेंट लव करता हूं.

शहंशाह : यू फूल...ख़ानदानी लोग किसी से परमानेंट लव नहीं करते. तुम्हारी ख़ैरियत

इसी में है कि तुम अनारकली को हमेशा-हमेशा के लिये भूल जाओ... फरगेट हर...

सलीम : ये नामुमकिन है डैड.

शहंशाह : क्यों?

सलीम : क्योंकि अनारकली ब्यूटिफुल है चार्मिंग है लवली है, और आज तो हमारी मुहब्बत की सिल्वर जुबली है.

शहंशाह : (हैरत से) सिल्वर जुबली?

सलीम : यस... हमारी मुहब्बत को शुरू हुए पच्चीस घंटे हो चुके हैं.

शहंशाह : बकवास बंद करो. तुम्हें अनारकली को छोड़ना होगा... ये हमारा ऑर्डर हैं.

सलीम : (दिलीप कुमार की स्टाइल में) शहजादा सलीम का दिल किसी ईरानी का होटल

नहीं जिसे ऑर्डर दिया जाय. पिछले जनम में आपने हमें सैपरेट कर दिया था मगर इस जनम में आपकी पॉलिटिक्स नहीं चलेगी. अगर आपने हमें शादी की इजाज़त नहीं दी तो हम सिविल कोर्ट में शादी कर लेंगे.

शहंशाह : बकवास बंद करो.

सलीम : डैड, अगर आपने हमारी मुहब्बत में इस बार भी टंगड़ी अड़ाई तो मैं आपकी नई बीएम डब्लू कार की कसम खा कर कहता हूं कि मैं बाथटब में कूद कर खुदकुशी कर लूंगा.

शंहशाह : क्या मतलब??

सलीम : खुदकुशी का मतलब होता है सूसाइड... और मेरे मरने के बाद मेरी रूह बाथरूम

में भटकती रहेगी और मेरी आत्मा मेरी सोल, सैड सांग गा गा कर आपका जीना मुश्किल कर देगी.

शहंशाह : (गुस्से से) नालायक... नामाकूल... दूर हो जाओ हमारी नज़रों से....गेट आउट. (तभी फुर्सत अंदर से आता है.)

सलीम : आपने मेरे जज़्बात की इन्सल्ट की है डैड.मैं अभी जा कर मम्मी से कम्पलेंट करता हूं...
(सलीम अंदर जाता है.)

शहंशाह : अरे-अरे शहज़ादे...रूक जाओ... रूको.. (घबराते हुए) या ख़ुदा अब क्या होगा?

फुर्सत : वही होगा जो मंजूरे-बेगम होगा.

शहंशाह : (भड़क कर) शटअप.

बेगम : (गुस्से में अंदर से आ कर) क्यों जी,

तुमने मेरे फूल से बेटे को डांटा? बेचारा रूठ कर कश्मीर चला गया. बताओ क्यों डांटा?

शहंशाह : (हकलाते हुए) न-न....नहीं बेगम हम तो सिर्फ़ उसे समझा रहे थे.

बेगम : तुम कौन होते हो उसे समझाने वाले?

शहंशाह : हम उसके बाप हैं.

बेगम : झूट मत बोलो.

शहंशाह : (चौंक कर) ऐं?

फुर्सत : धीरे बोलिये बेगम साहिबा... अगर किसी फ़िल्मी जर्नलिस्ट ने सुन लिया तो स्कैण्डल बना देगा.

बेगम : (डपट कर) तुम चुप रहो...ये हमारा प्राइवेट लिमिटेड मामला है. अगर किसी जर्नलिस्ट ने छापा तो मैं उसके ऑफिस

में जा कर उसकी खोपड़ी गंजी कर दूंगी.

फुर्सत : और अगर वो पहले से ही गंजा हुआ तो?

बेगम : तो उसकी टांगें तोड़ दूंगी.

शहंशाह : ओ हो बेगम, तुम सबसे पंगा लेना मगर जर्नलिस्टों से पंगा मत लेना. वो तो अमेरिका के प्रेसीडेंट की कुर्सी पलट देते हैं तो हम किस मूली का खेत हैं.

बेगम : कान खोल कर सुन लो जी...ख़बरदार जो आइन्दा मेरे बेटे को डांटा तो....

शहंशाह : तुम नहीं जानती बेगम, वो नालायक अनारकली से इश्क लड़ा रहा हैं.

बेगम : वो इश्क लड़ाये या चोंच. उसे रोकने-टोकने की जरूरत नहीं. अरे अगर टोकना ही है तो उस नामुराद

अनारकली को टोको जिसने मेरे मासूम बेटेको अपने प्यार में उल्लू बना रखा है.

शहंशाह : (सोचते हुए) हूं... तुम ठीक कहती हो बेगम... हमारा शहज़ादा तो अभी नादान है, नटखट है, नानसेंस है मगर अनारकली को तो अपनी औकात में रहना चाहिये. हम अभी अनारकली को बुला कर पूछताछ करेंगे. उसके ख़िलाफ इन्क्वायरी कमेटी बैठायेंगे.

बेगम : (चिढ़ कर) फिर तो हो चुका फैसला.मैं ख़ूब समझती हूं आपकी इन्क्वायरी कमेटी का चक्कर. पच्चीस साल पहले मेरे कानों का झुमका नौकरानी ने चुरा लिया था उसके ख़िलाफ भी तो आपने इन्क्वायरी कमेटी बैठाई थी. मगर वो तो बैठे बैठे

सो गई. पता ही नहीं चला आज तक क्या हुआ उसका?

शहंशाह : उसका भी फ़ैसला हो जायेगा बेगम पहले इन्क्वायरी कमेटी की रिपोर्ट तो आने दो.

फुर्सत : अब रिपोर्ट का क्या फायदा हुजूर... वो नौकरानी तो झुमका ले कर ठुमका लगाती चली गई.....वैसे भी इन्क्वायरी कमेटियों की रिपोर्ट रद्दीवालों के ही काम आती हैं.

बेगम : इसका मतलब ये हुआ कि वो इंक्वायरी कमेटी दिखावा थी?

फुर्सत : समझा कीजिए बेगम साहिबा, जिस तरह रोते हुए बच्चे को झुनझुना थमा कर बहलाया जाता है उसी तरह पब्लिक को बहलाने के लिए इन्क्वायरी कमेटियों का

झुनझुना थमाया जाता है.

शहंशाह : फुर्सत अली. सरकारी सीक्रेट्स बताने की सज़ा जानते हो क्या है?

फुर्सत : इन्क्वायरी कमेटी.

शहंशाह : यू ईडियट, (शहंशाह मारने के लिये हाथ उठाते हैं. फुर्सत अंदर भाग जाता है.)

बेगम : देखो जी में कहे देती हूं अनारकली का फैसला अभी और इसी वक्त होना चाहिये हां.

शहंशाह : ठीक है.... अनारकली को हम अभी बुलवाते है.

मि. फूड : (बाहर से आते हुए) हें-हें-हें-मन्ने तो पहले ही खबर थी आप यही डायलॉग बोलणेवाले है हजूर...इसी वास्तें मैं अनारकली को अरेस्ट करके ले आया....

शहंशाह : कहां है अनारकली?

मि.फूड : अभी पेश करता हूं...(ताली बजाता है.)

अनारकली : (आ कर सलाम करते हुए) हुजूर की ख़िदमत में कनीज़ गुड मार्निंग पेश करती है.

शहंशाह : गुड मार्निंग....गुडमार्निंग.... अनारकली.

अनारकली : जी.

शहंशाह : क्या ये सच है कि तुमने अपनी ख़ूबसूरती की बदौलत हमारे शहज़ादे को उल्लू बना रखा है?

अनारकली : जी.

शहंशाह : वॉट?..क्या हम तुम्हें उल्लू के फादर नज़र आते हैं?

अनारकली : जी.

शहंशाह : शटअप.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

अनारकली : जी.

शहंशाह : ये क्या जी-जी लगा रखी है. साफ-साफ बताओ क्या तुम शहज़ादे से मुहब्बत करती हो?

अनारकली : जी.

बेगम : क्या शहज़ादा भी तुम से मुहब्बत करता है?

अनारकली : जी.

शहंशाह : क्या तुम दोनों एक दूसरे से मुहब्बत करते हो?

अनारकली : जी.

बेगम : ख़ामोश बेअदब लड़की.... लगता है तुझे अपनी ख़ूबसूरती पर बड़ा नाज़ है.

शहंशाह : बताओ तुम्हारी ख़ूबसूरती का क्या राज़ है?

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

अनारकली : (शरमाते हुए) मैं हमेशा लक्स सुप्रीम सोप इस्तेमाल करती हूं....(पर्स से ट़िकिया निकाल कर) इससे मेरा रंग-रुप निख़र उठता है. मेरा तन-बदक महक उठता है, मेरा मन-मयूर थिरक उठता है. (अनारकली थिरकने लगती है. म्यूज़िक बजती है) (शहंशाह और मि. फूड झूमने लगते हैं.)

बेगम : ओ हो... मैं पूछती हूं ये क्या है?

मि.फूड : कमर्शियल ब्रेक.

अनारकली : (लक्स की टिकिया शहंशाह की तरफ बढ़ाते हुए) आप भी हमेशा इस्तेमाल कीजिये फिल्मी सितारों का मनपसंद साबुन लक्स सुप्रीम.

शहंशाह : (साबुन सूंघते हुए) वाह! क्या खुश्बू क्या

स्वाद....

बेगम : (साबुन झपटते हुए) ये खाने की नहीं, नहाने की चीज़ है. इसे मैं इस्तेमाल करुंगी रोज़, तुम तो सिर्फ जुम्मे के जुम्मे नहाते हो.

मि.फूड : हुज़ूर कमर्शियल ब्रेक खतम हुआ. अब मेन शो शुरु कीजिये.

शहंशाह : (भड़क कर) अनारकली... तुम्हें हमारे शहजादे को बेवकूफ बनाना बंद करना होगा.

अनारकली : ये नहीं हो सकता हुज़ूर.

शहंशाह : क्यों नहीं हो सकता.

अनारकली : क्योंकि शहज़ादा सलीम जैसा ओबीडिएंट आशिक मुझे और कहां मिलेगा. उनके बिना मेरी ज़िंदगी ऐसी अधूरी है जैसे

बिना लिपिस्टिक के होंठ, बिना पैंट के कोट बिना नोट के वोट....

शहंशाह : ख़ामोश...नादान लड़की तुम नहीं जानती हमारा गुस्सा कितना ख़तरनाक है. हम तुम्हारे बाप का प्रमोशन रुकवा देंगे.

मि.फूड : वेरी गुड....

शहंशाह : उसका ओवर टाइम बंद करवा देंगे.

बेगम : उसका बोनस और प्रॉविडेंट फंड ज़ब्त करवा देंगे.

अनारकली : नो प्राब्लम.

शहंशाह : उसे सरकारी क्वाटर से बेदख़ल करवा देंगे.

अनारकली : हम सरकारी क्वाटर में नहीं रहते, उसे तो अब्बा ने किराये पर दे रखा है. पांच हज़ार महीने पर.

✍ अनिल निगम ‘बेख़बर’

मि.फूड : क्या सरकारी क्वाटर किराये पर दे दिया?

अनारकली : तो क्या हुआ- सरकारी क्वाटर मिलते ही इसीलिये हैं.आपने भी तो अपना सरकारी बंगला किराये पर दे रखा है.

मि.फूड : हें..हें..हें....हम मिनिस्टर हैं....जणता के सेवक..जरूरत पड़ने पर बंगला तो क्या हम अपना देश भी किराये पर दे सकते हैं.

बेगम : अच्छा-अच्छा फुज़ूल की बातों में वक्त बर्बाद मत करो. इसका जल्दी फैसला करो जी.

शहंशाह : अनारकली, अगर तुमने हमारी बात नहीं मानी तो हम तुम्हें ऐसी सज़ा देंगे कि तुम्हारे फरिश्तों के भी होश भी उड़ जायंगे.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

अनारकली : क्या सज़ा देंगे? ज़रा मैं भी तो सुनूं.

शहंशाह : हम तुम्हें क्रिमिनल केस में बंद करा देंगे.

अनारकली : मैं आपकी बंदर घुड़कियों से डरने वाली नहीं हूं.

बेगम : (भड़क कर) तूने मेरे शौहर को बंदर कहा... तेरी ये मजाल...अरे इन्हें आज तक मैंने बंदर नहीं कहा और तू इन्हें बंदर कहती है.

शहंशाह : (भड़क कर) गुस्ताख़ लड़की....तूने हमारी तौहीन की है... मिनिस्टर-ए-फूड.

मि.फूड : जी हुज़ूर

शहंशाह : ले जाओ इस बेअदब लड़की को और ऐसी जगह क़ैद कर दो जहां ना ताज़ी हवा हो ना बासी धूप. हर जगह गंदगी, पॉल्यूशन और मच्छरों की भरमार

हो. क्या समझे?

मि.फूड : यही कि इसे गवर्नमेंट कालोनी ले जाना है.

शहंशाह : नहीं...इसे खुफिया तहख़ाने में कैद कर दो. वहां हम इसे फिर से ज़िंदा चुनवा देंगे.

अनारकली : आपको टार्चर करने का कोई लेटेस्ट तरीका नहीं आता क्या? जब देखो तब जिंदा चुनवा देंगे.

शहंशाह : (डपट कर) शटअप....ले जाओ इस बदतमीज़ लड़की को...

मि.फूड : जो हुक्म हजूर... (अनारकली से) चलो.

अनारकली : (गरज़ कर) ठहरो... (सब अनारकली की तरफ देखते हैं. अनारकली मेकअप और लिपस्टिक ठीक करती है.) वैसे तो

आपके ख़िलाफ मैं किडनैपिंग का चार्ज लगा सकती हूं लेकिन आजकल कोर्ट केस के झमेले में पड़ने से बेहतर है खुफिया गोडाउन में अपने सलीम का वेट करूंगी. गोडाउन में एयर कंडीशन तो लगा होगा ना ससुर जी??

शहंशाह : (भड़क कर खड़े होते हुए) ख़बरदार जो हमें ससुरजी कहा....ले जाओ इस नामाकूल लड़की को हमारी नज़रों के सामने से. टेक हर अवे...

(सिपाही आकर अनारकली को ले जाने लगता है.)

अनारकली : (डपट कर) ऐ जाकर पहले लेडीज़ पुलिसवाली ला फिर जाऊंगी.

बेगम : तुझे तो मैं लेजाऊंगी मैं हूं तेरी लेडीज़

पुलिस...

अनारकली : आपके साथ खुशी से चलूंगी, आप तो मेरी सास हैं. (जाते हुए स्टाइल से) ओके बाय ससुरजी...

शंहशाह : (चीख़ कर) शटअप

(स्टेज पर अंधेरा होता हैं.)

सीन नं.11 स्थानः दरबार समयः दिन
पात्रः शहंशाह,फुर्सत,सलीम, मिनिस्टरे-एजुकेशन

(स्टेज की लाइट ऑन होती है शहंशाह आराम से बैठे हैं फुर्सत उनके पैर दबा रहा है.)

शहंशाह : फुर्सतअली, जाओ हमारे लिए शाही पान बनवा कर लाओ आज हमारा मूड पान खाने का हो रहा है.

फुर्सत : कौन सा पान खाएंगे हुजूर?

शहंशाह : बनारसी पान उसमें गुलकंद काजू पिश्ता बादाम वगैरह होना चाहिए.

फुर्सत : जी हुजूर अभी लाया...(फुर्सत बाहर जाता है. शहंशाह हुक्का गुड़गुड़ाते हैं फिर सोचते हुए इधर उधर टहलते हैं तभी फुर्सत बाहर से एक शाही पान

लेकर आता है.)

फुर्सत : ये लीजिए हुजूर शाही पान.

शहंशाह : (पान खाते हैं) वाह मज़ा आ गया.

फुर्सत : हुजूर बाहर कोई फिल्लम का डायरेक्टर आया है.

शंहशाह : ज़रूर टैक्स फ्री कराने आया होगा...क्या नाम है?

फुर्सत : सुहास घाई घाई बोलके. लगता है बहुत घाई में है.आपको अपनी फिल्लम में रोल देने कू वास्ते आया.

शंहशाह : (खुश होकर) अच्छा रियली ? वेरी गुड.. हमें भी एक्टिंग करने का बेहद शौक है.

फुर्सत : उनै आपके फोरफादर पर एक फिल्लम निकालता.

शहंशाह : नानसेंस,हमारे फोरफादर नहींसिर्फ सिंगल

फादर थे.

फुर्सत : फोरफादर बोले तो आपके परदादा के परदादा मरहूम मुग़ले-आज़म हुजूर की बात कर रहा मैंय.

शहंशाह : ओह यानि कि वो हमें मुग़ल-ए-आज़म का रोल देना चाहता है उन्हें फौरन अंदर ले कर आओ.

फुर्सत : जी हुजूर...(फुर्सतअली बाहर जाता है.)

शहंशाह : (अपना सूट टाई ठीक करते हुए बुदबुदाते हैं.) आज हमारी बरसों पुरानी हसरत पूरी हो जाएगी..

(फुर्सत अकेला अंदर आता है.)

शहंशाह : कहां है सुहास घाई घाई??

फुर्सत : मैं उने भगा दिया हुजूर.

शहंशाह : (हैरत से) भगा दिया ??? ईडियट, हमारे

मुग़ल- ए-आज़म के रोल पर कोल्डवाटर फेर दिया तुमने?

फुर्सत : मुग़ले-आज़म का नहीं उनै आपको दरबान का रोल दे रहा था हुजूर...

शहंशाह : व्हाट??? हमें दरबान का रोल दे रहा था?? तो फिर मुग़ल-ए-आज़म का रोल किसे दे रहा है?

फुर्सत : अमिताभ बच्चन को.

शहंशाह : इंपासिबल...हम ऐसा हरगिज़ नहीं होने देंगे.(मोबाइल पर) हैलो, सेन्सरबोर्ड सुहास घाई घाई की फिल्म बैन कर दो.

(फुर्सत अंदर जाता है शहंशाह शाही कुर्सी पर आंखें मूंदे बैठे हैं तभी बाहर से मिनिस्टर-ए-एजुकेशन आता है. शहंशाह को सोता देख मिनिस्टर शहंशाह के पीछे

जाकर कुछ तलाश करने लगता है. तभी बाहर से शहज़ादा सलीम मायूसी से भरा आता है.मिनिस्टर होशियार हो जाता हैं.)

सलीम : (ठण्डे लहजे में) डैड...

शहंशाह : आ गये कश्मीर से शहज़ादे. बताओ क्या हाल हैं कश्मीर के? (फुर्सत आता है.)

सलीम : (मायूस लहजे में) कल चमन था आज वो सेहरा हुआ.. देखते ही देखते ये क्या हुआ?

फुर्सत : क्या हुआ शहज़ादा साहेब?

सलीम : ये मत पूछो क्या हुआ...ये पूछो क्या नहीं हुआ. जिस कश्मीर को लोग जन्नत कहते थे आज वहां शैतानों ने अड्डा बना लिया है. जहां चारों तरफ हरियाली लहराती थी अब बंदूकें लहराती हैं.जहां

कभी फूल उगते थे आज गोला-बारूद उगते हैं. चंद नामुराद लोगों ने कश्मीर को बदरंग कर डाला. बदरंग खिलौना..

एजुकेशन : अरे-रे-रे...ई तो बहुत जुलम है.हम तो पहले हजूर से कहत रहे भानसिंह के बदले हम का मिनिस्टर-ए-होम बना दीजिये फिर देखिये कइसे चुटकी बजाते कसमीर की समस्या फरिया देते हैं. अरे कसमीर क्या हम तो पंजाब, बंगाल, बिहार, मध्य परदेस, उत्तर परदेस, गुजरात महाराष्ट्र सब की समस्या निपटा देते. हर तरफ सान्ती ही सान्ती छा जाती.

फुर्सत : जैसे कब्रिस्तान में होती है.

शहंशाह : (खड़े होकर) हम जानते हैं बेटा...

कश्मीर हमारे जिस्म का सबसे सुंदर हिस्सा है, जिसे कुछ बदनीयत लोग काट कर हमसे अलग कर देना चाहते हैं. मगर हम अपने जीते-जी उन्हें कामयाब नहीं होने देंगे...कभी नहीं होने देंगे. इन्शा अल्लाह.

सब : आमीन. (म्यूज़िक)

(स्टेज पर अंधेरा होता है.)

सीन नं.12 स्थानः तुर्रमखां हाउस समयः दिन
पात्रः तुर्रम खां

(स्टेज पर स्पॉट लाईट उभरती है तुर्रम खां उसके नीचे आ कर ठहाका लगाता है. उसके हाथ में शतरंज के शहंशाह वाला मोहरा है.)

तुर्रम : हा-हा-हा...(मोहरे को देखते हुए) शहंशाह सलामत आपने तुर्रम खां को अपना वज़ीरे-आज़म बना कर ख़ुद अपनी ही क़ब्र खोद ली है. अब मैं आपको उस क़ब्र मे हमेशा-हमेशा के लिये दफना दूंगा- हा- हा-हा....अब देखिये मेरी अगली चाल.

(सस्पेन्स म्यूज़िक)

(स्टेज पर अंधेरा होता है.)

सीन नं.13 स्थानः दरबार समयः दिन
पात्रः शहंशाह, मिनिस्टरे-इंफॉर्मेशन,सलीम,

(स्टेजकी लाइट उभरती है.शहजादा सलीम गुस्से में बाहर से दाखिल होता है.)

शहजादा : (आवाज़ लगाते हुए) डैड... डैड ऽ ऽ ऽ

शहंशाह : (अंदर से आते हुए)क्या बातहै शहज़ादे ?

सलीम : अभी-अभी तुर्रम खां ने मुझे बताया कि आपने अनारकली को क़ैद कर दिया है.

शहंशाह : तुमने बिल्कुल दुरुस्त सुना है.

सलीम : आपने उसे कहां कैद कर रखा है?

शहंशाह : हमने उसे ऐसी ख़तरनाक जगह भेज दिया जहां इन्सान ज़िंदा जाते हैं और मुर्दा वापस आते हैं.

सलीम : यू मीन सरकारी अस्पताल?

शहंशाह : ये हम तुम्हें हरग़िज नहीं बतायेंगे....देखो

शहज़ादे, तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अनारकली को एक फ्लाप हिरोइन समझ कर भूल जाओ.

मि.इन्फार्म. : (आते हुए) तुम्हारे पिताश्री ठीक कहते हैं शहज़ादे जी, अनारकली को अपनी मन-मस्तिष्क से विस्मृत कर दीजिये उसे भूल जाइये.

सलीम : नहीं... कभी नहीं. मैं अनारकली से किये हुए वादे उसे दिया हुआ दिल और भेलपूरी के चुकाये हुए बिल नहीं भूल सकता.

मि.इन्फार्म : परन्तु क्यों?

सलीम : क्योंकि मैं आप जैसा महान लीडर नहीं जो वादे करके भूल जाऊँ.

शहंशाह : नादान मत बनो शहजादे. ज़रा अपने

दिमाग़ से काम लो. हम तुम्हारी शादी सैण्डविच लैण्ड की शहज़ादी से करना चाहते हैं जिन्होंने शादी में 30 इंपोर्टेड कारें, 15 लग्ज़री शिप्स और 2 जम्बो जेट देने का वादा किया है.

सलीम : तो आप दहेज की मंडी में मुझे बेचना चाहते हैं. मगर मैं बिकाऊ नहीं हूं. आई एम नॉट फॉर सेल.

शहंशाह : बकवास बंद करो. जो हम कहते हैं वो मान लो वरना हम अपनी वसीयत किसी गधे के नाम कर देंगे.

सलीम : (मिनिस्टर की तरफ इशारा करके) तो लिख लीजिये इनका नाम.

इन्फार्म. : ये मेरा घोर अपमान है श्रीमान्.

शहंशाह : (भड़क कर) बदतमीज, इनका घोर

अपमान करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिये.

मि.इन्फार्म. : श्रीमान्...मैं देश की अखंडता के लिये सहन कर रहा हूं. अन्यथा अभी मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे कर विरोधी दल में चला जाता.

सलीम : ऐसे ही चमचों के बीच रह कर आप जो भूल कर रहे हैं डैड, उसके लिये आपको बहुत पछताना पड़ेगा.

शहंशाह : बको मत. तुम्हारी बातों से बग़ावत की बू आ रही है.स्मेल आफ द रिबेल.

सलीम : (गुस्से में) अगर आप इसे बग़ावत समझते हैं तो यही सही. समझ लीजिये आज से मैं हुकूमत का बाग़ी हो गया और आज से ही हमारी जंग शुरु हो

गई.

शहंशाह : (गुस्से से) तुम हमसे मुकाबला करना चाहते हो- हमसे? अपने फादर से.

सलीम : फादर से नहीं एक मर्डरर से.

मि.इन्फार्म. : हुजूर इसने आपको मर्डर कहा...

शहंशाह : (गुस्से में)गुस्ताख़ शहज़ादे, हम उस मुग़ल-ए-आज़म के मॉडर्न वारिस हैं जिसके इंसाफ की मिसालें दी जाती हैं. और तुम एक ऑडिनरी कनीज़ अनारकली के रोमांस में पड़ कर हमारे ख़िलाफ बग़ावत करना चाहते हो???

सलीम : हां...मगर ये जंग मेरी और आपकी नहीं बल्कि मुहब्बत और ताक़त की जंग है. प्यार और सरकार की जंग है. लव एण्ड पावर की जंग है.(ज़ोश में शेर पढ़ते हुए)

सर कटाने की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजुए क़ातिल में है.

मि.इन्फार्म. : लो अबतो आपको कातिलभी बनादिया हुजूर.

शहंशाह : (तैश में) हमें क़ातिल कहते हो. (जोरदार थप्पड़ मारते है.) गेट आउट.

(शहजादा गुस्से से घूर कर तेजी से बाहर जाता है. शहंशाह अपने हाथको देख कर अफसोस करते हैं.)

(स्टेज पर लाइट बुझती है. सैड म्यूज़िक)

(स्टेज पर अंधेरा है.अख़बार वाला दर्शकों के बीच से अख़बार हिलाता हुआ गुज़रता है.)

अख़बारवाला: आज की ताज़ा ख़बर - आज की ताज़ा ख़बर....शहंशाह के ख़िलाफ शहज़ादा सलीम की बग़ावत... आज की ताज़ा

ख़बर.सलीम ने शहंशाह को जान से मारने की धमकी दी...शहंशाह की जान ख़तरे में...आज की ताज़ा ख़बर...आज की ताज़ा ख़बर..

(म्यूज़िक)

सीन नं.14 स्थानः तुर्रमखां हाउस समयः दिन

पात्रः तुर्रम, मिनिस्टर्स (फूड,हेल्थ, फायनेंस, डिफेंस, इंफॉर्मेशन, एजुकेशन,) लिपटन

(स्टेज पर स्पॉट लाईट उभरती जिसके नीचे तुर्रम खां ठहाका लगा रहा है.)

तुर्रम : हा-हा-हा-हा...बाप और बेटे में जंग-हा-हा-हा..हमारी ये चाल भी कामयाब हो गई...अब वक़्त आ गया है जब हम आसानी से इस मुल्क़ की शाही गद्दी को अपनी कब्ज़े में भर लेंगे..अब हमें कोई नहीं रोक सकता....हा - हा - हा-मिनिस्टर-ए-फायनेंस और मिनिस्टर -ए- इंफार्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग

(दोनों एक साथ स्पॉट लाईटके नीचे आते है.)

मि.फायनेंस : जी हुजूर.

मि.इन्फार्म. : जी श्रीमान्

तुर्रम : क्या आप जानते हैं किसी भी मुल्क का सबसे बड़ा दुश्मन कौन होता है?

मि.इन्फार्म. : (हंसते हुए) नेता..

तुर्रम : नहीं, किसी भी मुल्क का सबसे बड़ा और सबसे ख़तरनाक दुश्मन है...... कम्यूनलिज़्म.

मि.फायनेंस : आपका मतलब फिरका फिरस्ती?

मि.इन्फार्म. : अर्थात् साम्प्रदायिकता?

तुर्रम : हां. यही एक ऐसा दुश्मन है जो धर्म और मज़हब को लड़वा कर दोनों का ख़ात्मा कर देता है. शहंशाह की कुर्सी तक पहुंचने के लिये हमें उसी कम्युनलिज़्म की मदद लेनी होगी.

मि.फायनेंस : यानी हमें मुल्क़ में दंगे-फसाद भड़काने

होंगे.

तुर्रम : हां...आप दोनों को भाईचारे का हैवानियत के हाथों क़त्ल करवाना है. जाइये अपनी-अपनी कौम के बीच नफरत और दुश्मनी की आग भड़काइये और दूर से तमाशा देखिये. हा-हा-हा-हा.......

(स्टेज की लाइट्स बुझती हैं.)

(म्यूज़िक)

सीन नं.15 स्थानः स्टेज/दरबार समयः दिन

पात्रः **शहंशाह,बेगम,फुर्सत,पंडित,मुस्लिमऔरत, मिनिस्टर्स(फायनेंस,इंफॉर्मेशन), मुस्लिम दंगाई, हिंदू दंगाई. आवाज़ें**

(स्टेज पर दो स्पॉट लाईट उभरती हैं. एक के नीचे मि.फायनेंस और दूसरी के नीचे मि. इंफार्मेशन.एंड ब्रॉडकास्टींग आते हैं. दोनों की पीठ एक दूसरे की तरफ है.दोनों अपने अपने माइक लिए दर्शको के सामने भाषण देने के अंदाज़ में बोलते हैं.)

मि.इन्फार्म. : (हिंदी में) भाइयों तथा बहनों....

मि.फायनेंस : (उर्दू में) मुअज्ज़िज हज़रात,

मि.इन्फार्म. : हमारे धर्म पर संकट के काले बादल छा रहे हैं.सदियों पुरानी हमारी संस्कृति एवं सभ्यता का सर्वनाश होने वाला है.

मि.फायनेंस : हम इसे हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे. अपनी कौम, अपने मज़हब की हिफाज़त के लिये हम जान की बाज़ी लगा देंगे. आप सब...

मि.इन्फार्म. : अपने प्राणों की आहूती देने के लिये तैयार हो जाइये. भाइयों उठो और दिखा दो अपनी भुजाओं का बल. तोड़ दो मानवता की इमारत, ठहा तो प्रेम एवं भाइचारे का ढांचा.

मि.फायनेंस : बांध लो अपने सर पे कफन. कटवा दो मज़हब के नाम पे अपनी गरदन. क़सम हैं तुम्हें दीनो-इमान की. उठो और इन्सानियत को नेस्तनाबूद कर दो.

मि.इन्फार्म. : मैं कहता हूं उठो और हिला दो विश्वास की नींव. फहरा दो मित्रता की अर्थी पर

धर्म का झंडा. बाद में जो होगा हम देख लेंगे. उठो टूट पड़ो.....

मि.फायनेंस : घबराना मत हम तुम्हारे पीछे है. उठो जला कर राख कर दो.

मि.इन्फार्म. : उठो.....

मि.फायनेंस : उठो.....

(बैक स्टेज से जोश में आवाजें उभरती हैं.)

आवाज़ें : अल्लाहो ऽ ऽ ऽ ऽ अकबर ऽ ऽ ऽ ऽ

आवाज़ें : हर -हर महादेव ऽ ऽ ऽ ऽ

(स्टेज पर अंधेरा छाता है आवाज़ों का शोर बढ़ता है.टेंशन म्यूज़िक)

आवाजें : (मिली-जुली) मारो-मारो.....काट दो.... हाय मार डाला....

(औरत-मर्द-बच्चों की चीख़ पुकार

गोलियों के धमाके के साथ लायटिंग इफैक्टस दंगे-फसाद का माहौल पैदा कर देते हैं.)

औरत(आवाज़): हाय मेरा बच्चा....छोड़ दो... मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूं....तुम चाहो तो मेरी जान लेलो मगर मेरे बच्चे को छोड़ दो मेरे बच्चे को छोड़ दो (गिड़गिडाती है) नहीं...नहीं..मत ले जाओ मत ले जाओ. (बिलख बिलख कर रोती है.)

नारे : हर-हर महादेव....अल्लाहो अकबर.... जला दो..जाने ना पाये....पकड़ो-पकड़ो.. ..मारो मारो..

आदमी(आवाज़): अल्लाह के वास्ते छोड़ दो इसे... आह.. (वगैरह)

तुर्रम खां : (ठहाके की आवाज़) हा-हा-हा-हा...हा

हा हा

(दंगे-फसाद के शोर के बीच स्टेज पर लाईट उभरती है. बेगम परेशान और घबराई हुई अंदर से आती है. शोर दूर होता जाता है.)

बेगम : (घबराहट में) फुर्सत अली ऽ ऽ ऽ फुर्सत अली ऽ

फुर्सत : (बाहर से आकर) क्या बात है बेगम साहिबा?

बेगम : शहंशाह सलामत कहां गये?

फुर्सत : वो दंगे-फसाद रुकवाने का इन्तज़ाम करने गये हैं.

बेगम : ओह, ना जाने मुल्क के लोगों को क्या हो गया.

फुर्सत : जी हां... सारा मुल्क दंगे-फसाद की

आग में झुलस रही है. या अल्लाह रहम कर...

(तभी शहंशाह की बाहर से आवाज सुनाई देती है.)

शहंशाह(आवाज़): (गरज़दार और सख़्त लहजे में) हर जगह पुलिस फोर्स तैनात की जाय...दंगे भड़काने वालों को फौरन गिरफ्तार किया जाय...अगर कोई मनमानी करे तो उसे गोली से उड़ा दो, चाहे वो किसी भी कौम का हो...पूरे मुल्क में दंगे-फसाद हर कीमत पर रुकने ही चाहिये....समझे कमांडर?

कई आवाज़ें: यस सर.

शहंशाह : आप सब जा सकते है. (फौजी बूटों के सैल्यूट मार कर दूर जाने की आवाज़ें)

(इमोशनल म्यूज़िक)

शहंशाह : (अंदर आते हुए) फिक्र मत करो बेगम, अल्लाह ने चाहा तो सब ठीक हो जायगा.

बेगम : (इमोशनल होकर) जिसने भी ये आग लगाई है. भगवान उसे कभी माफ नहीं करेगा...

(बाहर से दंगाइयों का शोरगुल और मजबूरों की चीख-पुकार)

शोर : मारो.... मारो... हाय बचाओ... बचाओ...हाय छोड़ दो...(वगैरह)

(तभी एक पंडित खून से लथपथ बाहर से जान बचा कर भागता हुआ आता है और शहंशाह के सामने गिड़गिड़ाता है.)

पंडित : मुझे बचा लीजिये... मेरी रक्षा कीजिये...

सरकार

(तभी बाहर से एक खूंखार मुस्लिम हाथ में तलवार लिये अंदर आता है.)

मुस्लिम : (गरजते हुए) कसम खुदा की आज नहीं छोड़ूंगा इसे.... (तलवार तानता है.)

शहंशाह : (गरज़ कर) ठहरो....ख़बरदार जो एक क़दम भी आगे बढ़ाया. (मुस्लिम वहीं रूक जाता है.)

(तभी बाहर से एक मुस्लिम औरत बच्चे को लिये भागती हुई आती है और बेगम से लिपट जाती है.)

औरत : अल्लाह के लिये हमें बचा लीजिये... वो लोग हमें मार डालेंगे.

(एक हिन्दू हाथ में फरसा लिये तेज़ी से दाख़िल होता है.)

हिन्दू : आज मेरे हाथ से कोई नहीं बचेगा... जय भवानी..

बेगम : (चीख कर) रुको... मैं कहती हूं रूक जाओ. (हिंदू रुक जाता है.)

शहंशाह : ये कैसा वहशीपन सवार है तुम दोनों पर?

मुस्लिम : हमारा मज़हब ख़तरे में है हुज़ूर....हम इन काफिरों को ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे.

हिन्दू : हम अपने धर्म की रक्षा के लिये ख़ून की नदियां बहा देंगे.

शहंशाह : (भड़क कर) ख़ामोश. धर्म और मजहब की दुहाई देते हो तुम दोनों...बताओ बेगुनाह इन्सानों का कत्ल करना कौन सा धर्म ? कौन सा मज़हब सिखाता है ? बताओ हमें...

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

बेगम : अगर तुम दोनों को ख़ून-ख़राबे का इतना ही शौक है तो आओ मैं हिन्दू हूं.. और (शहंशाह की तरफ इशारा करके) ये मुसलमान. कर दो हम दोनों का ख़ून और बचा लो अपने धर्म और मज़हब को.... आओ आगे बढ़ो...मैं कहती हूं आगे बढ़ो..

शहंशाह : आओ और बुझा लो अपने अपने हथियारों की प्यास...मगर हमारे मुल्क पर फिरकापरस्ती का ये बदनुमा दाग़ मत लगाओ...सोच क्या रहे हो कायरों आओ...आओ और कत्ल कर दो हम दोनों को.

(हिन्दू और मुसलमान दोनों पर कुछ ऐसा असर होता है कि दोनों के सिर शर्म से

झुक जाते है. उनके हथियार धीरे-धीरे नीचे गिरते हैं.)

मुस्लिम : हमें माफ कर दीजिये हुज़ूर....हम किसी के बहकावे में आ गये थे. हम अपने मज़हब से भटक गए थे.

हिन्दू : अच्छा हुआ आप लोगों ने हमारी आंखें खोल दीं.

शहंशाह : जाओ अब तुम दोनों अपनी अपनी कौम के उन लोगों की आंखें खोलो जो धर्म और मजहब के नाम पे इन्सानियत को ज़िंदा जला रहे हैं. जाओ रोको उन्हें.

दोनों : (एक साथ) अब हम यही करेंगे हुज़ूर.

(हिन्दू-मुसलिम दोनों जाते हैं.)

शहंशाह : फुर्सत अली.

फुर्सत : जी हुज़ूर?

शहंशाह : (पंडित और औरत की तरफ इशारा करके) जाओ हमारे कमांडोज़ से कहो कि इन दोनों मज़लूमों को पूरी हिफाज़त के साथ इनके घर पहुंचा दें.

फुर्सत : बहुत अच्छा हुज़ूर.... चलिये.

पंडित : (हाथ जोड़कर)भगवान आपका भला करे.

औरत : अल्लाह आप दोनों की उम्र दराज़ करे... बहुत- बहुत शुक्रिया...

(दोनों फुर्सतके साथ बाहर जाते हैं. शहंशाह और बेगम एक दूसरे की तरफ देखते हैं तभी बैक ग्राउंड से मंदिर की घंटियों और अज़ान की आवाज़े सुनाई देती है.दोनों दुआके लिए हाथ उठाते हैं.)

शंहशाह : (दुआ मांगते हुए) या अल्लाह! परवरदिगार..हमारे मुल्क पर रहम कर.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

बेगम : हमारी जनता की रक्षा कर प्रभु...

शहंशाह : भटके हुओं को सही रास्ता दिखा मेरे मालिक. धर्म और मज़हब के नाम पर पूरी दुनिया में हो रहे आतंकवाद से बचा ले मेरे आका...(सिजदा करते हुए) हमारी दुआ कुबूल कर...हमारी दुआ कुबूल कर...हमारी दुआ कुबूल कर....

(म्यूज़िक के साथ अज़ान और मंदिर की घंटियों की आवाज़ तेज़ होती है. तभी फुर्सतअली खुशी खुशी से दौड़ता हुआ बाहर से आता है.)

फुर्सत : हुजूर...हुजूर....दंगे-फसाद रुक गए हुजूर...मारकाट बंद हो गई....

शहंशाह : अल्लाह तेरा लाख लाख शुक्र है.

(स्टेज पर लाइट बुझती है.)

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

सीन नं.16 स्थानः रोड समयः रात
पात्रः फुर्सत, सलीम,

(स्टेज पर लाइट ऑन होती है.सलीम अनारकली की याद में परेशान है.)

सलीम : अनारकली....माई स्वीट हार्ट..कहां हो तुम??? वेयर आर यू...?? मैंने तुम्हें कहां कहां नहीं ढूंढा.. मेकअप रूम से लेकर बाथरूम तक, फैशन कॉर्नर से लेकर ब्यूटी पार्लर तक, नेशनल पार्क से लेकर एसलवर्ल्ड तक, हिल स्टेशन से लेकर पुलिस स्टेशन तक....मगर तुम्हारा कहीं पता नहीं चला...ना जाने मेरे डैड ने तुम्हें कहां किडनैप कर रखा है.

फुर्सत : (आते हुए) शहज़ादे साहेब, अनारकली का पता चल गया..

सलीम : क्या??? कहां है मेरी अनारकली?

फुर्सत : तिहाड़ जेल में, तुर्रम खान ने उसे और भानसिंह जी को वहीं अरेस्ट करके भेज दिया है.

सलीम : ठीक है मैं अभी उन दोनों को जा कर छुड़ाता हूं.

फुर्सत : मगर हुजूर आप वहां एन्ट्री कैसे करेंगे? वहां तो ब्लैक कमांडो फोर्स का तगड़ा पहरा है. किसी ने पहचान लिया तो?

सलीम : कोई नहीं पहचान नहीं सकता. मैं वहां फिल्मी हीरो की तरह नकली मूंछे लगा कर जाऊंगा.

फुर्सत : क्या बातां करते हुजूर? अरे वो लोगां फिल्लम के विलेन की तरह बेवकूफ नहीं जो मूंछ लगा लिए तो पहचान नहीं

सकते.

सलीम : वो सब तुम मुझ पर छोड़ दो मैंने फॉरेन में जेम्स बांड की बहुत सी फिल्में देखी हैं. डोन्ट यू वरी...मैं चलता हूं.

फुर्सत : गुड लक हुजूर.

सलीम : थैंक्स... (सलीम तेज़ी से निकल जाता है.फुर्सत भी वहां से जाता है.)

(स्टेज की लाइट बुझती है.)

सीन नं.17 स्थानः तुर्रम हाउससमयः दिन
पात्रः तुर्रम, लिपटन

(सस्पेंस म्यूज़िक के साथ दो स्पाट लाइट्स उभरती हैं एकके नीचे तुर्रमखान है दूसरे के नीचे लिपटन.)

लिपटन : अब टुम क्या करेंगा मिस्टर टुर्रमखान? दंगे-फसाद का तुम्हारा प्लान तो फ्लाप हो गया.

तुर्रम : तुर्रम ख़ान, जब बाज़ी खेलता है तो आगे की दस चालें सोच कर खेलता है. और अब वक्त आगया है अपनी सबसे ख़तरनाक चाल चलने का...

लिपटन : बताओ क्या चाल है टुमारा?

तुर्रम : मेरे प्लान के मुताबिक अब तुम्हें सिर्फ एक ही काम करना है.

लिपटन : कौन सा काम?

तुर्रम : शहंशाह सलामत का क़त्ल.

लिपटन : (चौंक कर) वॉट? मर्डर.

तुर्रम : यस डोंट वरी. ख़ून का इल्ज़ाम तुम पर नहीं बल्कि शहंशाह के अपने ही बेटे शहज़ादा सलीम पर होगा.

लिपटन : बट हाऊ?

तुर्रम : (जेबसे रुमालमें लिपटा रिवाल्वर निकालकर)शहंशाह का मर्डर सलीम की इस रिवाल्वर से होगा जिस पर उसी की उंगलियों के निशान हैं.

लिपटन : सलीमका रिवाल्वर टुमकोकैसे मिला मैन?

तुर्रम : महल में हमारे एक सीक्रेट एजेन्ट के ज़रिये.और अब इस एक रिवाल्वर से हम दो शिकार करेंगे. शहंशाह का मर्डर..

और सलीम को फांसी...हा-हा-हा...ये लो (रिवाल्वर देता है.) और हां मर्डर करने से पहले टॉप सीक्रेट इन्फॉर्मेशन का डेटा सीडी ज़रुर हासिल कर लेना.

लिपटन : ओके...

तुर्रम : मर्डर के बाद ये रिवाल्वर शहंशाह की डेड बॉडी के पास छोड़ देना. बाकी सब हम संभाल लेंगे.

लिपटन : कब करना है मर्डर?

तुर्रम : आज रात को...

(संस्पेस म्यूज़िक के साथ स्टेजकी लाइट बुझती है.)

सीन नं.18 स्थानः दरबार समयः दिन

पात्रः शहंशाह, फुर्सत, भानसिंह, तुर्रम, मिनिस्टर्स (फूड, हेल्थ, फायनेंस, डिफेंस, इंफॉर्मेशन, एजुकेशन,) सलीम, अनारकली, बेगम,लिपटन,सिपाही

(स्टेज पर रात का अंधेरा है. मिस लिपटन हाथ में टार्च लिए आती है और तलाशी लेने लगती है.बैक ग्राउंड में सस्पेंस म्यूज़िक बजती है. तभी अचानक अंदर से जाज़ के भौंकने की आवाज़ आती है. जिसे सुनकर शहंशाह जाग कर अंदर से आते हैं.)

शहंशाह : कौन है?? हम पूछते हैं कौन है यहां? (लाइट ऑन करते हैं तभी लिपटन शहंशाह की कनपटी पर सलीम का रिवाल्वर लगा देती है.) डोंट मूव मिस्टर

मॉडर्न मुगले आजम...

शहंशाह : (हैरत से) मिस लिपटन? ये क्या बदतमीज़ी है?

लिपटन : आई वॉन्ट सेक्रिट इन्फॉर्मेशन्स डेटा सीडी.

शहंशाह : मगर क्यों?

लिपटन : डेटा सीडी... हरी अप.

शहंशाह : वो तुम्हें हरगिज़ नहीं मिलेगी.

लिपटन : देन आई विल शूट योर ब्रेन.

शहंशाह : हमें अपने ब्रेन की परवाह नहीं. हम बिना ब्रेन भी हुकूमत कर सकते हैं.

लिपटन : ओके तो मरने के लिए तैयार हो जाओ.

फुर्सत : ठहरो-ठहरो गोली मत चलाना...तुम्हें डेटा सीडी चाहिये ना...मैं लाकर देता हूं.

शहंशाह : फुर्सतअली... ये तुम क्या कर रहे हो? जानते हो उस डेटा सीडी में क्या है?

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

फुर्सत : कुछ भी हो मगर आपके ब्रेन से बढ़ कर नहीं... (अंदर जाता हैं)

शहंशाह : (गुस्से में) हूं... तो ये है तुम्हारा असली चेहरा.

लिपटन : ठीक पहचाना मगर बहुत देर से.

फुर्सत : (लाकर डेटा सीडी देते हुए) ये लो...और दफा हो जाओ यहां से.

लिपटन : (डेटा सीडी लेकर) थैंक यू...

शहंशाह : (डेटा सीडी झपट कर) हमारे जीते जी तुम इसे नहीं ले जा सकतीं.

लिपटन : नो प्रॉब्लेम.. टुमारा मरने के बाद ले जायगा. (लिपटन शहंशाह पर गोली चलाती है.)

शहंशाह : (कराहते हुए) आह... (शहंशाह ज़मीन पर गिर कर ख़ामोश हो जाते हैं.)

फुर्सत : (गुस्से में) तूने हुजूर का मर्डर कर दियां. मैं तुझे ज़िदा नहीं छोडूंगा. (फुर्सत आगे बढ़ता है लिपटन उसे भी गोली मारती है.फुर्सत भी चीख़ मार कर एक तरफ लुढ़क जाता है.लिपटन सीडी लेकर रिवाल्वर ज़मीन पर फेंक देती है और पलट कर जाने लगती है.तभी वहां तुर्रमख़ान दाख़िल होताहै.)

तुर्रम : वेलडन मिस लिपटन, तुमने मेरा काम बहुत होशियारी से पूरा कर दिया...अब मैं इस मुल्क का बादशाह हूं...लाओ सीडी मुझे दो. (सीडी लेता है.)

(तभी अचानक सलीम बाहर से आकर फुर्ती से ज़मीन पर पड़ा रिवाल्वर उठा कर तुर्रम की कनपटी से लगा देता है.)

सलीम : नीच, कमीने, तूने मेरे डैड और फुर्सत का मर्डर करवा दिया...मैं तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा...

(लिपटन भागना चाहती है तभी अनारकली आकर उसकी गर्दन दबोच लेती है.)

अनारकली : तू कहां भागती है.आज तेरा भी आख़री वक्त है.

सलीम : तुम दोनों मरने के लिए तैयार हो जाओ.

(तभी सारे मिनिस्टर्स अंदर आते हैं.)

एजुकेशन : साथियों हमरा सक करेक्ट था...ये देखो बाग़ी सहजादा मिनिस्टरे आजमका मर्डन करना चाहता है.

तुर्रम : आप लोग बिल्कुल सही वक्त पर आ गए साथियों, ये देखो शहज़ादा सलीम ने

हमारे बादशाह हुजूर का मर्डर कर दिया.

सब : (खलबली) बादशाह हुजूर का मर्डर??? मर्डर??? ये आपने क्या किया शहज़ादे साहब?

बेगम : (अंदर से आते हुए) ये क्या शोर मचा रखा है... (शहंशाह को देख कर चौंकते हुए) अरे क्या हुआ इन्हें?

तुर्रम : बाग़ी शहज़ादेने शहंशाह सलामत का ख़ून कर दिया.

बेगम : क्या ससुर जी का ख़ून...?

सलीम : नहीं... मैंने डैड का ख़ून नहीं किया... ये झूट है..मैं बेकसूर हूं... बेगुनाह हूं...

तुर्रम : (डपट कर) चुप रहो... मैंने तुम्हें अपनी आंखों से शहंशाह सलामत का ख़ून करते हुए देखा है. इसी रिवाल्वर से तुमने ख़ून

किया है... तुम ख़ूनी हो क़ातिल हो... (शहंशाह की लाश के पास बैठ कर नकली आंसू बहाते हुए) तुमने हमारे प्यारे शहंशाह को हम से छीन लिया.. हाय-हाय योर हाइनेस.आप हम सब को बिलखता छोड़ कर कहां चले गये?....

सब मिनिस्टर्स: (रोते हुए) कहां चले गये? हूं...हूं....हूं..

शहंशाह : (अचानक उठकर) खामोश...

(सब चौंकते हैं.)

तुर्रम : (चौंक कर) हैं? आप जिंदा हैं?

शहंशाह : बिल्कुल हैं, हंड्रेड परसेंट हैं.

फुर्सत : (उठ कर) और मैंय टू हंड्रेड परसेंट ज़िंदा हूं.

सलीम : तुम सोच रहे होगे तुर्रम ख़ान कि अचानक ये बाज़ी कैसे पलट गई? तो

सुनो, मेरा ये रिवाल्वर तो असली है मगर इसमें गोलियां डुप्लीकेट हैं.

तुर्रम : (हैरत से) डुप्लीकेट???

सलीम : और ये रिवाल्वर मैंने अपने आदमी के ज़रिये तुम तक पहुंचाया था. क्योंकि पब्लिक के साथ-साथ डैड को भी तुम्हारा असली चेहरा दिखाने के लिए ये सीन बहुत ज़रूरी था.

तुर्रम : लेकिन...

सलीम : खामोश...पहले पूरी स्टोरी सुन लो... दरअसल तुम्हारी नीयत पर भानसिंह को बहुत पहले डाउट हो गया था और उन्होंने ही मुझे फॉरेन से यहां बुलाया था. फिर हम दोनों ने मिल कर तुम्हारे प्लान के जवाब में एक सुपर प्लान तैयार

किया.

शहंशाह : अच्छा हुआ जो शहज़ादे को तुम्हारा प्लान पता चल गया और हमें भी थोड़ी सी एक्टिंग करने का चांस मिल गया.

मि.फूड : वाह हज़ूर क्या गजब की एक्टिंग की है.. ऐसी एक्टिंग तो दिलीप कुमार भी नहीं कर सकता.

मि.हेल्थ : हुज़ूर को तो एक्टिंग में ऑस्कर अवार्ड मिलना चाहिये...

सब : बिल्कुल मिलना चाहिये.

शहंशाह : शटअप.तुम लोगों की चापलूसी ने हमें अपनी आवाम, अपनी पब्लिक से अलग कर रखा था. मगर अब हम समझ चुके हैं कि किसी भी हुकूमत की सबसे बड़ी ताकत आवाम की मुहब्बत होती है. इस

मुहब्बत में नफरत का ज़हर घोलने वाले तुम सब गद्दारों को हम सज़ाये-मौत का हुक्म देते हैं.

तुर्रम : (ठहाका लगाते हुए) हा-हा-हा...आप वाकई बड़े भोले हैं योर हाइनेस, मगर ये मत भूलिये कि मेरा नाम तुर्रमख़ा है मेरे पास एक और मास्टरप्लान है.

सलीम : मास्टर प्लान?

तुर्रम : हां.... मैंने शहर की तमाम बिल्डिंगों के साथ-साथ इस थियेटर में भी आर डी एक्स बॉम्ब फिट करा दिया है.

शहंशाह : माई गॉड... आर डी एक्स ?

तुर्रम : मेरा एक इशारा होते ही पूरा शहर धमाकों से गूंज उठेगा. हा-हा-हा...

सब मिनिस्टर्सः हा-हा-हा....

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

मि.हेल्थ : वाह-वाह...क्या नहले पे दहला मारा तुर्रमखान....चलिये अब हम लोग बाहर निकल चलते हैं.

तुर्रम : नहीं...मुझे अब तुम जैसे चमचों की ज़रूरत नहीं. मैं अकेला ही जाऊंगा...गुड बाइ...(हलचल) तुर्रम खां तेजी से बाहर की तरफ जाने लगता है तभी बाहर से भानसिंह आकर तुर्रम को दबोच लेता है.

भानसिंह : देश में जब तक वफादारी ज़िंदा है, तुम जैसे आस्तीन के सांप बच के नहीं जा सकते... (भानसिंह तुर्रम को शहंशाह के कदमों पर ढकेल देता है.) आप लोग फिकर मत कीजिए, इसके मुट्टी भर आदमियों को जनता के हज़ारों नौजवानों ने कब्ज़े में कर लिया है.

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

अनारकली : वो तो ठीक है पर अब हमें जल्दी से आर डी एक्स का पता लगाना चाहिए.

भानसिंह : फिकर मत करो अनारकली...तमाम जगहों के आर डी एक्स का पता भी लग चुका है और उन्हें डिफ्यूज्ड भी कर दिया है.

शहंशाह : किसने पता लगाया, हमारी इन्टेलिजेंस ब्यूरो ने?

भानसिंह : नहीं, आपके कुत्ते जॉज़ ने.

शहंशाह : हूं (आवाज लगा कर) सिपाहियों....(दो तीन सिपाही आ कर सल्यूट करते हैं उनके हाथों में बंदूकें हैं.)

शहंशाह : ले जाओ इन सबको और ऐसी सज़ा दो कि इनकी रूह तक कांप उठे.

बेगम : अरे ये क्या सज़ा देंगे...सज़ा तो मैं दूंगी

इसे ...(तुर्रम का कान पकड़ कर) क्यों रे कलमुंहे, नासपीटे मेरे शौहर की जान लेना चाहता था...ठहर जा अभी मैं तेरा कीमा फ्राई करती हूं...फुर्सत अली लाना तो मेरा हैवी सैण्डल.

फुर्सत : वो तो कल ही टूट गई थी जब आप बादशाह सलामत पर...

शहंशाह : ख़ामोश ईडियट, बेगम हम इन्हें ऐसी सज़ा देंगे कि ये ज़िंदगी भर नहीं भूल पाएंगे.

बेगम : क्या सज़ा देंगे?

शहंशाह : इन्हें रेल्वे का खाना खिलावाएंगे.

सब मिनिस्टर्सः (गिड़गिड़ाते हुए) दुहाई हुज़ूर.... दुहाई...

भानसिंह : हुजूर ये मुल्क के गद्दार हैं इसलिए मेरी राय में इन्हें मुल्क की जनता के हवाले

कर दिया जाए वही इनको सज़ा देगी.

शहंशाह : ठीक है ले जाओ इन्हें जनता के सामने. (सब मिनिस्टर्स इधर-उधर भागने की कोशिश करते हैं. सिपाही उन्हें बाहर ले जाते हैं.एक सिपाही तुर्रम को पकड़ कर ले जाता हैं.उनके बाहर निकलते ही बाहर से जनता की आवाज़ें सुनाई देती हैं.)

कई आवाज़ें: मारो...मारो...गद्दारों को मारो....मारो मारो..

शहंशाह : शाब्बास भानसिंह...हमें तुम्हारी वफादारी पर नाज़ है.आजसे हम तुम्हें अपना वज़ीरे आज़म बनाते हैं.

शहंशाह : (शहज़ादा सलीम और अनारकली के कंधों पर हाथ रखते हुए) हमें अफसोस

है कि हमने शहज़ादा सलीम और अनारकली की मुहब्बत पर ऐतराज़ किया मगर अब हम तहे-दिल से इन्हें शादी की इजाज़त देते हैं...और इनकी शादी में (आडियंस की तरफ इशारा करते हुए) आप सब को आने की दावत देते हैं.

(तालियां बजती हैं.)

फुर्सत : (एक बड़ा सा पैकेट देते हुए) इसी ख़ुशी में मेरी तरफ से ये तोहफा कुबूल फर्मायें हुज़ूर.

शहंशाह : (पैकेट ले कर) ये क्या है फुर्सत अली?

फुर्सत : भेलपूरी.

(सब हंसते हैं और अपनी जगह फ्रीज़्ड होजाते हैं.)

-जयहिंद-

✍ अनिल निगम 'बेख़बर'

शुक्रिया-मेहरबानी

दोस्तों, आपने हमारे हास्य-व्यंग्य झेले इसके लिए हम तहे-दिल से आपके शुक्रगुज़ार हैं. हमारे प्रयास से अगर आपके चेहरे पर थोड़ी सी भी मुस्कान झलकी हो तो हम समझेंगे हमारी मेहनत का फ्रूट हमें मिल गया.

Please give your feedback

आपकी तालियां (+) या गालियां (-) दोनों का स्वागत हम इस पते पर करेंगे:

E-mail Id: anilnigambekhabar (eBay Member)
Address : Anil Nigam 'Bekhabar'
B-17, Plot No.132, Gorai-2,
Borivli (w), Mumbai-400091 (INDIA)
Visit my eBay shop : Thahaaka ebooks unlimited

Kya aap Hindi books Roman style mein (Hindi in English text) padhna chahte hain?? Then please write to us.

हास्य-ट्रेलर

दोस्तों, वैसे तो हमारे हास्य-व्यंग्य के गोदाम में तरह तरह के ठहाकेदार आइटम्स भरे पड़े हैं, जिन्हें हम एक-एक करके आपकी ख़िदमत में पेश करते रहेंगे... बशर्ते आप उन्हें पढ़ने की ज़हमत उठाना पसंद करें. यहां हम कुछ अन्य किताबों का ट्रेलर प्रस्तुत कर रहें हैं जो ई-बुक के रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं.

1. जी.जे.जी.का हास्य-पिटारा
   (हास्य-कविताओं का संकलन)
2. बेख़बर की बत्तीसी (हास्य-व्यंग्य रचनाएं)
3. बेख़बर की दुलत्तियां (हास्य-व्यंग्य रचनाएं)
4. बेख़बर की चुगलियां (हास्य-व्यंग्य रचनाएं)
5. मॉडर्न मुग़ल-ए-आज़म (कॉस्ट्यूम कॉमेडी प्ले)
6. ठहाका अदालत (कोर्टरूम कॉमेडी)
7. इज्ज़त उधार की (घरेलू कॉमेडी प्ले)
8. गंगाराम-'ईडियट कहीं का' (देहाती कॉमेडी)
9. मुंबइया लैला-मजनूं (कॉमेडी टेली-प्ले)
10. रंगीन मिज़ाजी (पार्टी जोक्स)

for more details please write to:

anilnigambekhabar (eBay Member)

Visit my eBay shop : Thahaaka ebooks unlimited

साथ में अटैच **'ठहाकेदार नमूने'** के लिए यहां क्लिक करें.

e-book

अनिल निगम 'बेख़बर'

ठहाकेदार नमूने

Thahaakedaar Namoone

sample book

Note

(This e-book can be resold or distributed free without any modification.)

ठहाकेदार नमूने

Thahaakedaar Namoone

(सैम्पल ई-बुक)

अपनी पूज्य कलम को समर्पित...
जिसकी कृपा से हमें
'काम-नाम-दाम' तीनों उपलब्ध हो
रहे हैं.

लेखक	:	अनिल निगम 'बेख़बर'
प्रकाशक	:	ठहाका ई-बुक्स अनलिमिटेड प्लॉट नं.132/B-17, गोराई, बोरीवली (प.) मुंबई-400091 (भारत)
फोन	:	09324508160
आवरण	:	मनोज आचार्य
डेटा एंन्ट्री	:	अर्पणा सावंत
ई-मेल	:	**anilnigambekhabar (eBay Member)**
ई-बुक संस्करण		2005
©	:	कॉपीराइट लेखक के पास सुरक्षित

Click for other useful links

☞ You Can navigate through Bookmarks also

निवेदन

दोस्तों, यूं तो हमें कलम की मज़दूरी करते हुए 25 वर्ष हो चुके हैं. इस दौरान हमने अलग-अलग किस्म और साइज़ के काफी 'पापड़' बेले हैं. हमने अपनी कुछ चुनिंदा हास्य-व्यंग्य की पुस्तकों का हिंदी ई-बुक के रूप में आप की सेवा में प्रकाशu किया हैं तथा शीघ्र ही रोमन हिंदी (Hindi in English Text.) में भी प्रकाशित करने का प्रयास कर रहे हैं.

इस पुस्तक में उन तमाम पुस्तकों के चंद **ठहाकेदार नमूने** प्रस्तुत किए गए हैं ताकि आप उन्हें पढ़ कर फैसला कर सकें कि हमारी पुस्तकें आपके पढ़ने योग्य हैं या नहीं.

इस संबंध में हम आपकी तालियों या गालियों दोनों का बेसब्री से इंतज़ार करेंगे.

धन्यवाद.आपका,

अनिल निगम 'बेख़बर'

बेख़बर की बत्तीसी

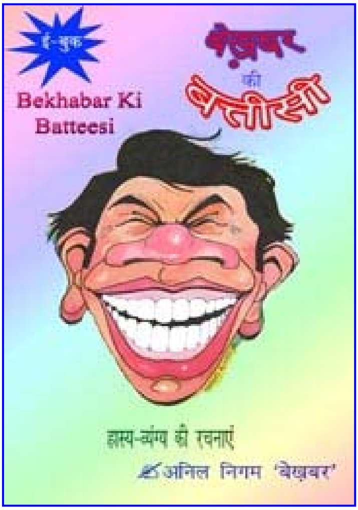

लेखक	:	अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय	:	सामाजिक बुराइयों पर हास्य–व्यंग्य के चुटीले लेखों का संकलन
भाषा	:	१) हिंदी २) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़	:	W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट	:	पी डी एफ
मूल्य	::	(As per item listing)
डिलीवरी	:	ई–मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स	**:**	(PaisaPay)/चेक/क्रेडिट–डेबिट कार्ड **(Click for details)**
संपर्क करें	:	**anilnigambekhabar (eBay Member)**

Or visit my eBay shop Thahaaka ebooks unlimited

Click for other useful links

Kaun Banegi Karodpatni

कौन बनेगी करोड़पत्नी?

हमारे टी.वी. शो 'कौन बनेगी करोड़पत्नी' में हिस्सा लीजिए और मर्दों को दिखा दीजिए कि अगर वो करोड़पति बन सकते हैं तो महिलाएं भी करोड़पत्नी बन सकती हैं.अगर उनका एंकर अमिताभ बच्चन है तो हमारी एंकरनी हैं रेखा.हमारे इस शानदार टी.वी. शो में महिलाएं और सिर्फ़ महिलाएं हिस्सा ले सकती हैं.

"Bekhabar Ki Batteesi"

देवियो, श्रीमतियों, सहेलियों, बहनों, बेटियों, बहुओं, माताओं तथा सभी आंटियों के लिए करोड़पत्नी बनने का सुनहरा मौक़ा! हमारे टी.वी. शो 'कौन बनेगी करोड़पत्नी' में हिस्सा लीजिए और मर्दों को दिखा दीजिए कि अगर वो करोड़पति बन सकते हैं तो महिलाएं भी करोड़पत्नी बन सकती हैं. अगर उनका एंकर अमिताभ बच्चन है तो हमारी एंकरनी हैं रेखा. हमारे इस शानदार टी.वी. शो में महिलाएं और सिर्फ़ महिलाएं हिस्सा ले सकती हैं. आज ही हमारा टेलीफ़ोन नम्बर घुमाइए और करोड़पत्नी बनने की रेस में शामिल हो जाइए. शो का नाम याद रखिए

'कौन बनेगी करोड़पत्नी?'

टी.वी. पर ये अनाउंसमेन्ट सुनते ही श्रीमती शांती देवी माथुर ख़ुशी से ऐसे उछल पड़ी जैसे चूहे को देखकर बिल्ली उछलती है."अरे वाह! ये तो वाक़ई बहुत बढ़िया मौक़ा है. मैं ज़रुर बनूंगी करोड़पत्नी. "श्रीमती शांती देवी एक मामूली से क्लर्क की पत्नी से अचानक करोड़पत्नी बनने का रंगीन ड्रीम देखने लगीं...चमचमाती गाड़ी, शानदार घर और हाथ जोड़ कर खड़े हुए नौकर-चाकर, जिनमें उनके पतिदेव भी शामिल हैं. अचानक दरवाज़े की खटखटाहट सुनकर उनका रंगीन ख़्वाब जब टूटा तो अपना फटीचर घर देखकर श्रीमती जी शर्म से पानी-पानी होकर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ निकली. दरवाज़ा खोला तो देखा, सामने दूध वाला खड़ा था.

"क्या बात है?"श्रीमती शांती ने हैरत से पूछा.

"दूध का बिल लेने आया हूं मेमसाब, पिछले ६

महीने से बाक़ी है."
"ठीक है-ठीक है, बहुत जल्द तुम्हारा सारा हिसाब एक साथ चुकता कर दूंगी."
"एक साथ?क्या आपकी लाटरी लगनेवाली है?"
"नहीं, मैं करोड़पत्नी बनने वाली हूं."श्रीमती जी ने गर्व से जवाब दिया.
"तो क्या आप माथुर साहब को छोड़कर किसी करोड़पति से शादी करनेवाली हैं?"
"बकवास बंद करो. अब वो ज़माना नहीं रहा, जब किसी औरत को करोड़पत्नी बनने के लिए करोड़पति से शादी करनी पड़ती थी. अब वो बिना शादी किए ही करोड़पत्नी बन सकती है."श्रीमती शांती देवी समझाते हुए बोलीं, मगर दूधवाला ठहरा अनपढ़-गंवार.वो अपना सर खुजाते हुए बोला,"बिना शादी किए पत्नी? ईबात हमारी समझ में नहीं आती."
"तुम्हें समझने की ज़रूरत भी नहीं है. तुम जाओ, मुझे बहुत ज़रूरी काम करने हैं." उसके जाते ही श्रीमती जी तेज़ी से निकल कर पड़ोसी चम्पक भाई के घर जा पहुंची और उनकी पत्नी से बोलीं, "बहन जी, हमारा टेलीफोन कट गया है ज़रा मुझे आपके टेलीफ़ोन पर अर्जेन्ट बात करनी है." इससे पहले कि पड़ोसन कुछ कहती श्रीमती जी ने टेलीफ़ोन का नम्बर भी डायल कर दिया.
"हैलो, मुझे रेखा से बात करनी है."
"रेखा?" दूसरी तरफ़ से महिला की हैरत भरी आवाज़ सुनाई दी.
"हां-हां वही, जो फ़िल्मों में काम करती हैं. मैं उनके

टी.वी.शो 'कौन बनेगी करोड़पत्नी' में हिस्सा लेकर करोड़पत्नी बनना चाहती हूं."
"यहां कोई रेखा-वेखा नहीं है और ना ये करोड़पत्नी बनाने वालो ंका ऑफ़िस है.रांगनंबर."
फ़ोन कटने के बाद शांती को एहसास हुआ कि हड़बड़ी में उन्होंने ग़लत नम्बर डायल कर दिया था. उन्होंने तुरंत सही नम्बर डायल किया. दूसरी तरफ़ से एक महिला की रिकॉर्ड की हुई आवाज़ सुनाई दी.
"नमस्कार... कौन बनेगी करोड़पत्नी?"
"मैं बनूंगी करोड़पत्नी' शांतीदेवी ने बिना सोचे समझे तुरंत जवाब दिया. रिकॉर्ड की हुई आवाज़ फिर गूंजी, "अगर आप 'कौन बनेगी करोड़पत्नी' प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहती हैं तो कृपया बीप की आवाज़ सुनने के बाद अपना नाम, पता और अपना टेलीफ़ोन नंबर रिकॉर्ड करा दें, बहुत जल्द आपको प्रोग्राम में शामिल करने के लिए आपसे सम्पर्क करेंगे धन्यवाद" बीप...
श्रीमती जी रिकॉर्डिंग की इस नई टेक्नोलॉजी से बेख़बर बोलती चली गईं.
"हां-हां लिख लीजिए, मेरा नाम है श्रीमती शांती देवी माथुर और हां, मेरे घर का फोन बिल ना भरने की वजह से कट गयां है.जब करोड़पत्नी बन जाऊंगी तो फ़ौरन लगवा लूंगी. फ़िलहाल पड़ोसी का फ़ोन नंबर दे रही हूं, आप कभी भी फ़ोन कीजिए, ये लोग तुरंत बुला देंगे. भूलिएगा नहीं. मैं आपके फ़ोन का बेचैनी से इंतज़ार करूंगी. अब पड़ोसी का फ़ोन नंबर लिख लीजिए....," जब उन्हें अपनी ग़लती का अहसास

हुआ तो झेंप गईं फिर पड़ोसन की मदद से श्रीमती जी पड़ोसी का फ़ोन नंबर नोट करवा कर ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आई.
शाम को बेचारे माथुर साहब थके-हारे जब ऑफ़िस से लौटे तो देखा श्रीमती जी आईने के सामने बैठी मेकअप कर रही थीं. माथुर साहब ने हैरत से पूछा, 'देवी जी, कहां जाने का प्रोग्राम है?"
"कहीं नहीं जी, मैं तो मेकअप करने की प्रैक्टिस कर रही हूं." श्रीमती जी ने लिपिस्टिक पोतते हुए जवाब दिया.
"क्यों? क्या किसी ब्यूटी कॉन्टेस्ट में हिस्सा लेने का इरादा है?"माथुर ने छेड़ा.
"नहीं, मैं 'कौन बनेगी करोड़पत्नी?' में हिस्सा लेने की तैयारी कर रही हूं.मुझे भी करोड़पत्नी बनना है. "श्रीमतीजीने पाउडर मलते हुए कहा.
"लेकिन करोड़पत्नी बनने के लिए शकल की नहीं अकल की ज़रुरत होती है और तुम्हारे पास तो दोनों ही नदारद हैं."
"क्या कहा?"श्रीमती शांती चिढ़कर खड़ी हो गई.
पत्नी का बिगड़ा तेवर देखकर माथुर साहब ने हथियार डालने में ही ख़ैरियत समझी.
किस्मत से उन्हें प्रोग्राम में शामिल होने का न्यौता मिल गया इस ख़ुशी के मारे उनका वज़न डबल और माथुर साहब का वज़न आधा हो गया. बेचारे को भूखे पेट ऑफ़िस जाना पड़ता है, क्योंकि खाना बनाने की श्रीमती जी को फ़ुर्सत नहीं मिलती और होटल में खाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ती.

Kaun Banegi Karodpatni

श्रीमती शांती देवी ने प्रोग्राम से दो दिन पहले ही अपने मैके वालों और रिश्तेदारों को घर बुला लिया था, ताकि करोड़पत्नी बनते ही जश्न मनाना शुरू हो जाए.
आख़िर इंतज़ार की घड़ियां ख़त्म हुई और वो दिन भी आ गया जब श्रीमती शांती देवी को प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए पहुंचना था. वो समय से दो घंटे पहले ही गहने-कपड़ों से लद कर वहां जा पहुंची.जब टी.वी.शो 'कौन बनेगी करोड़पत्नी' की एंकरनी रेखा जी वहां आई तो यह देखकर दंग रह गई कि श्रीमती जी अपनी कुर्सी छोड़कर उनकी कुर्सी पर विराजमान थीं. रेखा ने उन्हें समझाकर कुर्सी ख़ाली कराई और फिर शुरू हुआ सवाल-जवाब का सिलसिला.

रेखा : आपका नाम?
श्रीमती : मिसेज शांती देवी माथुर.
रेखा : आपने अपना नाम बिल्कुल सही बताया. आप एक हज़ार रुपए जीत गई.
श्रीमती : अजी एक हज़ार क्या चीज़ है. मैं तो पूरे दो करोड़ वसूल करके जाऊंगी.
रेखा : ठीक है अब सुनिए दूसरा सवाल - क्या आप शादीशुदा हैं?
श्रीमती : जी हां.
रेखा : पक्का?
श्रीमती : जी हां पक्का.
रेखा : कम्प्यूटर को ताला लगा दिया जाए?

श्रीमती : कम्प्यूटर को ताला लगाओ या तिजोरी में रखो. मेरा जवाब यही है.

रेखा : सही जवाब, आप दस हज़ार रुपए जीत गई.

श्रीमती : मुझे तो दो करोड़ जीतना है. आप फटाफट सवाल पूछो.

रेखा : मान लीजिए शांती देवी, कि आपको दो करोड़ रुपए मिल गए तो आप सबसे पहला काम क्या करेंगी?

श्रीमती : गिनूंगी, कहीं कम तो नहीं दिए.

रेखा : आपने बिल्कुल सही जवाब दिया. मैं भी यही करती. आप पचास हज़ार जीत गई. तालियां बजाओ. अगला सवाल–आपके पतिदेव क्या करते हैं?

श्रीमती : नौकरी.

रेखा : घर में या दफ़्तर में?

श्रीमती : दोनों जगह.

रेखा : आपका जवाब सही है. आप पांच लाख जीत चुकी हैं. मुबारक हो.

श्रीमती : शुक्रिया, अगला सवाल पूछिए.

रेखा : आपकी सही उम्र क्या है?

श्रीमती : हूं.... (सोचने लगती हैं)

रेखा : आप चाहें तो अपनी लाइफ लाइन इस्तेमाल करते हुए जनता से पूछ सकती हैं.

श्रीमती : ओ हो ! भला जनता को मेरी उम्र क्या पता?

रेखा : आप चाहें तो फ़ोन करके अपने पतिदेव से पूछ सकती हैं.

श्रीमती : (मुंह बनाकर) उनसे क्या पूछना. वो तो हमेशा मेरी उम्र ज़्यादा ही बताते हैं.

रेखा : आप कम्प्यूटरजी की मदद भी ले सकती हैं.

श्रीमती : मेरी उम्र इतनी ज़्यादा नहीं है, जो कम्प्यूटर से हिसाब लगाना पड़े.

रेखा : देखिए, अगर आप अपनी सही उम्र नही बताएंगी तो आप करोड़पत्नी नहीं बन सकेंगी.

श्रीमती : ठीक है तो समझ लीजिए मैं आपसे दस साल छोटी हूं.

रेखा : (चिढ़कर) ग़लत...बिल्कुल ग़लत जवाब. आपको कुछ इनाम नहीं मिलेगा, क्योंकि आप मुझसे दस साल छोटी नहीं, बल्कि दस साल बड़ी हैं.

श्रीमती : (तुनक कर खड़ी होती हुए) क्या बात करती हैं आप? मैं साबित कर सकती हूं कि आप मुझसे बड़ी हैं.

रेखा : (भड़क कर) चुप रहिए.

श्रीमती : आप चुप रहिए.

इसके बाद वहां सवाल-जवाब के बजाएं तू-तू-मैं-मैं की प्रतियोगिता शुरु हो गई ओर इस प्रतियोगिता में भला शांती देवी का मुक़ाबला कौन कर सकता था और अगर प्रोग्राम बीच में बंद ना किया जाता तो ये

तू–तू–मैं–मैं की प्रतियोगिता हाथा–पाई में बदल जाती. श्रीमती शांती देवी 'करोड़पत्नी' तो नहीं बन सकीं, मगर उन्होंने अपने पति माथुर साहब को 'रोडपति' ज़रूर बना दिया, क्योंकि लोगों का क़र्ज़ चुकाते–चुकाते वो रोड पर आ चुके हैं.

☺

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई–मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

“G.J.G. Ka Hasya-Pitaara”

जी.जे.जी.का हास्य पिटारा

लेखक : जी.जे.जी देहल्वी
विषय : हास्य-व्यंग्य भरी कविताओं का संकलन
भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़ : W-5.03”X H-7.17”
फॉर्मेट : पी डी एफ
मूल्य :: (As per item listing)
डिलीवरी : ई-मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स : (PaisaPay)/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड
(Click for details)
संपर्क करें : **anilnigambekhabar (eBay Member)**
Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

✍ जी.जे.जी.‘देहल्वी’

भगवान को मक्खन

मेरे भोले भाले भगवन, कुछ कृपा तू ऐसी कर दे।
मुझे वह दिला दे कुर्सी, मेरा घर जो ज़र[1] से भर दे।।
मेरा बंगला चांद पर हो, पहनूं मैं हीरे-मोती।
मैं लगाऊं तुझको मक्खन, रहे सारी जनता रोती।।
मुझे मंत्री बस बना दे, मेरा बेड़ा पार कर दे।
मेरे भोले भाले भगवन, कुछ कृपा तू ऐसी कर दे।।
सुबह-शाम भांग घोटूं, करूं जम के मैं घोटाला।
घुटे खूब मंत्रियों से, बने उनमें कोई साला।।
चाहे आमीर खान बना दे, या अमिताभ सा ही कर दे।
मुझे रवीना टन्डन दिला दे, दिल मस्त-मस्त कर दे।।
सोने के बिस्कुटों से, तू तिजोरी मेरी भर दे।
मेरे भोले भाले भगवन, कुछ कृपा तू ऐसी कर दे।।
सुनो विनती हे मुरारी, बनूं लक्ष्मी की सवारी।
मैं कमाऊं जब करोड़ों, फिरे जनता बन भिखारी।।
जहां झोपड़ी है अपनी, वहां महल खड़ा कर दे।
जी.जे.जी. की खोपड़ी में, फार्मूले ऐसे भर दे।।
उनके हास्य का पिटारा, कविताओं से जो भर दे।
मेरे भोले भाले भगवन, कुछ कृपा तू ऐसी कर दे।।

☺

बापू से अपील

गुंचें[1] कुम्हला रहे, है उजड़ता चमन।
बापू भारत में फिर तेरा अवतार हो।।
डगमगाती है नैया भंवर में फंसी।
हाथों में तेरे फिर उसकी पतवार हो।।
तूने कर फाक़ा दी ज़िन्दगी देश को।
पर है फाक़ों पे अब देश की ज़िन्दगी।।
जो कज़ा[2] से बचा ले ग़िज़ा[3] दे सके।
ऐसी बापू अक्लमंद सरकार हो।।
तेरे तन पे बची एक लंगोटी तो थी।
ख़ौफ है हों न इस से भी महरुम हम।।
ढक ही दे जो कफन से हमारे बदन।
ऐसी बेकार अपनी न सरकार हो।।
कितने वादे किये कितने पूरे हुये।
काम जितने हुए सब अधूरे हुये।।
जो कहे उसको कर के दिखा भी सके।
ऐसों के हाथों मे पूर्ण अधिकार हो।।
बढ़ती महंगाई रोके से थमती नहीं।
ज़िन्दगी अब किसी हाल जमती नहीं।।
ऐसा कर दो चमत्कार हे बापूजी।
ज़िन्दा रहना किसी का न दुश्वार हो।।
जी.जे.जी याद कर बापू को रो दिये।
बिना बापू के जाने वे कैसे जिये।।
देश की आ संभालो दशा बापू जी।
तेरे बन्दों के जीवन का उध्दार हो।।

1.फूल, 2.मौत, 3.खाना ☺

✍ जी.जे.जी.‘देहल्वी’

महा 'नरक' पालिका

महा नगर पालिका प्रबंधक मुझ को हैजा होना है।
भरा पड़ा गंदगी से इस शहर का कोना-कोना है।।
गंदगी से गंध जब उठती है तब सांस सभी की घुटती है।
बीवी बच्चों की बीमारी पे, मेहनत की कमाई लुटती है।।
खिंचता नहीं ठेला गृहस्थी का दिन-रात इसी का रोना है।
महा नगर पालिका प्रबन्धक चैन से आपको सोना है।।
हर गली सुअर, गधे, कुत्ते, कुत्तियों का अखाड़ा है।
घर तो है दड़बे जैसा पर महलों जैसा भाड़ा है।।

✍ जी.जे.जी.'देहल्वी'

“G.J.G. Ka Hasya-Pitaara”

देख दुर्दशा मुहल्लों की सब को आता रोना है।

महा नगर पालिका प्रबंधक मुझ को हैजा होना है।।

जब कल भी दशा रही ऐसी ये शहर नरक हो जायेगा।

दुर्भाग्य से जो भी रहा यहां बेड़ा ही ग़र्क हो जायेगा।

सुन्दर नयनों के समक्ष यह दृश्य कितना घिनौना है।

महा नगर पालिका प्रबंधक मुझ को हैजा होना है।

मुख्यमंत्री महोदय जी यदि यहां आकर रहते ।

यही नरक है यही नरक है मुक्त कंठ से कहते।

परम ब्रम्ह परमेश्वर का अवतार यहीं पर होना है।

महा नगर पालिका प्रबंधक मुझ को हैजा होना है।

जी.जे.जी.लो जाते हैं इस शहर को शीश नवाते हैं।

नगर प्रशासन मौज करे ईश्वर से दुआ मनाते हैं।।

यह भी निश्चित है प्लेग, इस वर्ष कहीं पर होना है।

महा ‘नगर’ पालिका प्रबंधक चैन से आपको सोना है।।

☺

✍ जी.जे.जी.‘देहल्वी’

ज़िंदादिली का नुस्ख़ा

मेरा दावा है खुशियां हैं किस्मत में मेरी।
सुबूत यह है हर लम्हा मुसकुराता हूं।।
ज़रा सा ग़म हुआ इन्सान तिलमिला उठा।
और मैं हूं कि ग़मों में भी खिलखिलाता हूं।।
शऊर रोने का मुतलक़[1] नहीं आता है मुझे।
आंसुओं को तो मैं आंखो में ही पी जाता हूं।।
वह कैसे लोग हैं जो आहोज़ारी[2] करते हैं।
मैं खुद भी हंसता हूं औरों को भी हंसाता हूं।।
दर्द उठता है कहीं जिस्म में नाक़ाबिले-बरदाश्त[3]।
अपनी ही कोई गज़ल मैं गुनगुनाता हूं।।
हासिल होने का नहीं, कोई वजह कुछ भी हो।
यही मैं बात हर एक को समझाता हूं।।

1.बिलकुल 2.रोनाधोना 3.सहनशक्ति से बाहर

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें. **anilnigambekhabar (eBay Member)**

✍ जी.जे.जी.'देहल्वी'

Bekhabr Ki Dulattiyan

बेख़बर की दुलत्तियां

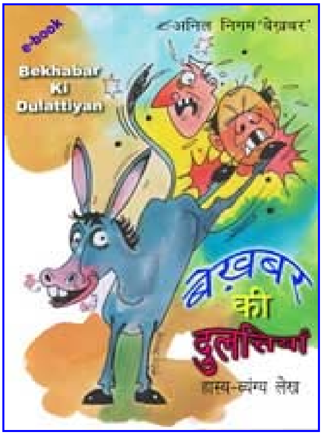

लेखक : अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय : हास्य-व्यंग्य लेखों का ठहाकेदार संकलन
भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़ : W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट : पी डी एफ
मूल्य :: (As per item listing)
डिलीवरी : ई-मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स : (PaisaPay)/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड
(Click for details)
संपर्क करें : **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

"Bekhabar Ki Dulattiyaan"

Gadhon Ka Sammelan

गधों का सम्मेलन

आजकल हमारे देश की उपजाऊ धरती अनाज़ से ज़्यादा गधे पैदा कर रही है. शहर हो या जंगल, सड़क हो या गली, घर हो या दफ़्तर हर जगह कोई-न-कोई गधा नज़र आ ही जाता है. अगर इसी रफ़्तार से गधों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती रही तो एक दिन ऐसा आएगा जब देश में इंसान कम, गधे ज़्यादा हो जाएंगे और वो दिन भी दूर नहीं, जब हमारा देश पूरे विश्व को नायाब गधे सप्लाई करेगा.

“Bekhabar Ki Dulattiyaan”

Gadhon Ka Sammelan

हमारे देश में गधों की आबादी बहुत ज़्यादा है. माफ कीजिए.इससे पहले कि आप किसी ग़लतफहमी में पड़ जाएं,हम आपको साफ़-साफ़ बता देते हैं कि यहां हम इंसानी गधों का नहीं बल्कि असली गधों का ज़िक्र कर रहे हैं, जिनकी मातृ-भाषा है. 'ढेंचू-ढेंचू'

गधों के लिए कितने शर्म की बात है कि इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद उनकी परवाह करने वाला कोई नहीं हैं. कुत्ते-बिल्लियों को तो लोग बड़े शौक़ से गोद में लेकर पालते हैं. मगर बेचारे गधे को गोद लेने के लिए कोई तैयार नहीं है. धोबी तक उन्हें सिर्फ़ एक बोझ ढोने वाला 'बेवकूफ' जानवर ही समझते हैं.

'बेवकूफ' की उपाधि पर गधोंको सख़्त ऐतराज़ है, क्योंकि उनका मानना है कि दुनिया में अगर कोई सबसे बड़ा बेवकूफ़ है तो वो है 'इंसान', क्योंकि इंसान ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो शादी करने की 'बेवकूफ़ी' करता है और उसका जश्न भी मनाता है, मगर बाद में पछताता है.

इंसान ही है, जो जाति-धर्म और धन-दौलत के लिए एक-दूसरे के साथ सर-फुटव्वल करता है.क्या इन मामलों को लेकर आपने किसी गधे को दुलत्ती चलाते देखा है?

हमें गधों के साथ स्पेशल हमदर्दी है, क्योंकि इंसानी बिरादरी में हम खुद एक आला दर्ज़े के गधे हैं. इंसानों में हमारी कद्र भले ही ना हो, पर गधे हमारी बड़ी इज़्ज़त करते हैं. हमें देख कर उन्हें ऐसा लगता है जैसे उनकी ही बिरादरी का कोई गधा इंसानी रूप लेकर पैदा हो गया है. हमें भी उनके बीच रह कर अपनापन-सा महसूस होता है.

जब भी हम गधों की दुर्दशा देखते हैं तो हमें बड़ी तकलीफ़ होती है. बेचारे सीधे-सादे और शरीफ़ जानवर पर सारी

Gadhon Ka Sammelan

दुनिया जुल्म ढाती है, उससे बोझ भी उठवाती है और उसका मज़ाक भी उड़ाती है. यह जुल्म देख कर हमने भी फ़ैसला कर लिया कि हम गधों की सेवा में तन-मन-धन से जुट जाएंगे, उन्हें समाज में इज़्ज़त दिलाएंगे और उन्हें एक-जुट करने के लिए गधों का सम्मेलन बुलाएंगे.
अपने इस नेक मकसद को पूरा करने के लिए हमने शहर के प्रत्येक गधे से संपर्क साधने का निश्चय किया. शुरू में तो गधों को हमारी बात ही समझ में नही आई, लेकिन जब हमने उनकी मातृभाषामें समझाया तो सारे गधे ख़ुशी से दुम हिलाने लगे. खैर, हमने गधों का सम्मेलन आयोजित करने की तैयारी ज़ोर-शोर से शुरू कर दी.
हमने एक ऐसे विशाल मैदान का चुनाव किया, जहां चुनाव के समय विशाल पार्टियां अपनी सभाएं आयोजित करती हैं, क्योंकि हम साबित करना चाहते थे कि गधों की भीड़ जुटाने में हम भी किसी नेता से कम नही हैं.
हमने देश भर के गधों को सम्मेलन में शामिल होने के लिए निमंत्रण पत्र छपवा कर भेज दिए, जगह-जगह पोस्टर्स और बैनर्स लगवा दिए, जिन्हें पढ़ कर लोगों को हमारी बुद्धि पर तरस आने लगा.उन्होंने हमें पागल घोषित कर दिया, परंतु वो हमारे इरादे को डिगा नहीं सके.
चूंकि देश में, बल्कि पूरे विश्व में गधों का सम्मेलन पहली बार आयोजित होने जा रहा था,इसलिए देश-विदेश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं ने इस रोचक समाचार को अपने हास्य कॉलम में प्रमुखता के साथ प्रकाशित कर दिया, जिसकी वजह से हर तरफ -गधों का सम्मेलन' चर्चा का विषय बन गया. आप तो जानते ही हैं कि हमारे देश के बहुत से नेता माहौल के मुताबिक रंग बदलने में गिरगिट के

भी बाप होते हैं. ऐसे ही एक नेता महोदय हमारे पास आए और बोले, “बेख़बर जी, मैने सुना है आप गधों का सम्मेलन करा रहे हैं.”

हमने कहा,“आपने बिल्कुल दुरुस्त सुना है नेता जी, आख़िर गधे भी तो हमारे समाज का एक हिस्सा है, उनकी भी समस्याएं है, उनके भी दुख-दर्द हैं.हम चाहते हैं कि उनकी समस्याओं को मिटाएं और उन्हें भी रिस्पेक्ट दिलाएं.” यह सुनते ही नेताजी ने तुरंत अपने चेहरे पर हमदर्दी का मुखौटा चढ़ाया और घड़ियाली आंसू टपकाते हुए बोले,“शायद आप नहीं जानते कि गधों के लिए मेरे दिल में कितना प्रेम है, कितना दर्द है, कितना पेन है कि मैं बयान नहीं कर सकता. कभी-कभी तो मैं सोचता हूं, शायद मैं भी एक गधा हूं.”

“इसमें क्या शक़ है.” हमने जवाब दिया.

नेताजी थोड़ा सकपकाए,फिर बोले,“मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि गधों के सम्मेलन का उद्घाटन मेरे ही हाथों से हो.”

हमने कहा,“ये कैसे हो सकता है नेताजी, गधों के सम्मेलन का उद्घाटन तो किसी गधे के खुरों से ही होना चाहिए.”

“आप नादान हैं, अहमक हैं, बेवकूफ़ हैं, गधे हैं.” नेताजी ने हमें रेवड़ियों की तरह उपाधियां बांट दी. हम चिढ़ गए तो नेताजी हमें समझाते हुए बोले, “देखो, हम नेताओं के बिना देश की किसी भी समस्या को सुलझाना उतना ही मुश्किल है, जितना गंजों के शहर में कंघी बेचना. इसीलिए अगर तुम सचमुच चाहते हो कि गधों की समस्या सरकार के कानों तक पहुंचे तो तुम्हें मेरी मदद लेनी ही पड़ेगी.” नेताजी की बात में हमें दम नज़र आया तो हमने भी अपना सर हिलाया और उनकी बात मान ली.

देखते ही देखते सम्मेलन का दिन भी आ पहुंचा और उसी के साथ गधों का आना भी शुरू हो गया. दूर-दूर से गधों के झुंड सम्मेलन में शामिल होने के लिए तशरीफ़ ला रहे थे, उनमें कोई बड़ा गधा था तो कोई छोटा, कोई लंबा था कोई नाटा, कोई दुबला था कोई मोटा. गधों में भी इतनी वेराइटी होती है ये तो हमें भी नहीं मालूम था. धीरे-धीरे सारा शहर गधामय हो गया, हर रोड, हर गली में गधेही गधे नज़र आ रहेथे.उनके शुभ-आगमन से तमाम चौराहों पर ट्रैफ़िक जाम हो गया था. ट्रैफ़िक पुलिस वाले भी परेशान हो गए, इंसान होते तो चालान होता, गधों का कैसे चालान करते.

दोपहर होने तक भांति-भांति के गधों से सम्मेलन का विशाल मैदान हाउसफुल हो गया. पूंछ हिलाने तक की जगह नहीं बची थी. उनमें से कुछ गधे टोपी पहन कर आए थे. हम समझ गए कि ये गधा बिरादरी के मुखिया गधे हैं, इसलिए हमने उन्हें आदरपूर्वक मंच की कुर्सियों पर बैठाया और उनके स्वागत में घास-फूस का हार पहनाया. मुखिया गधों ने 'थैक-यू, थैंक-यू' कहा, मगर हमें -'ढेंचू-ढेंचू' सुनाई दिया.

थोड़ी ही देर बाद नेताजी भी अपनी जीप और अपनी चमचों की टीम के साथ सम्मेलन का उद्धाटन करने आ पहुंचे. गधों का समूह देखकर उनका मुंह खिल उठा. शायद उनका भाषण सुनने इतनी बड़ी संख्या में श्रोताओं की भीड़ आज तक इकट्ठा नहीं हुई थी. नेताजी मंच पर आए तो हमने उन्हें भी घास-फूस का हार पहनाया. पहले तो उन्होंने मुंह बिचकाया, फिर कुछ सोचकर ठहाका लगाया और सभी

मुखियां गधों के खुरों से अपना हाथ मिलाया. हमने गधों से उनका परिचय कराया.

नेताजी ने नारियल तोड़कर सम्मेलन का उद्घाटन किया और गधों ने एक साथ रेंक कर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की, हमने माईक संभाला और अपना गला खंखारा, ताज्जुब की बात तो ये थी कि हमारी आवाज़ गधे की आवाज़ से हूबहू मेल खा रही थी. हमने बोलना शुरु किया, "मेरे प्यारे गधे भाइयों, आज के इस सम्मेलन में आप सबका हार्दिक स्वागत है. आज पहली बार आप सबने यहां भारी संख्या में उपस्थित होकर ये साबित कर दिया कि गधे पैदा करने में हमारे देश का दुनिया में कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता. ये हमारे लिए बड़े गर्व की बात है कि आजकल हमारे देश की उपजाऊ धरती अनाज़ से ज़्यादा गधे पैदा कर रही है. शहर हो या जंगल, सड़क हो या गली, घर हो या दफ़्तर हर जगह कोई-न-कोई गधा नज़र आ ही जाता है. अगर इसी रफ़्तार से गधों की संख्या में बढ़ोतरी होती रही तो एक दिन ऐसा आएगा जब देश में इंसान कम, गधे ज़्यादा हो जाएंगे और वो दिन भी दूर नहीं, जब हमारा देश पूरे विश्व को नायाब गधे सप्लाई करेगा." हमारी इस बात पर सभी गधों ने ज़ोरदार तालियां बजाई और हमने बात आगे बढ़ाई.

"हमें अफ़सोस तो इस बात का है कि हम इंसान आप गधों की क़ाबिलियत को आज तक नहीं पहचान सके. हम आपको मूर्ख पशु ही समझते है.जब कि हक़ीक़त में आप एक मेहनती और सहनशील प्राणी है.उदाहरण के लिए आप पर चाहे कितना भी बोझ क्यों ना लाद दिया जाए, आप बिना चूं-चपड़ किए उसे ढो सकते हैं.रूखी-सूखी घास चर

कर भी आप पेट भर सकते हैं. सचमुच आप महान हैं. (तालियां) मगर सावधान,आपकी इस महानता को बेवकूफ़ी समझकर इंसान नाजायज़ फ़ायदा उठा रहा है और आप पर अन्याय कर रहा है, जुल्म ढा रहा है, इसीलिए हमने गधों का सम्मेलन आयोजित किया है, ताकि आप सभी गधे एक साथ मिल कर इस जुल्म के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाएं." सारे गधों ने एक साथ आवाजें निकाली – ढेंचू–ढेंचू.....

"हमने आपके परम हितैषी नेता श्री घोंघामल जी से इसीलिए सम्मेलन का उद्‌घाटन कराया है, ताकि वो सरकार को आपकी मांगें पूरी करने के लिए मजबूर कर सकें." हमने नेताजी की तरफ़ निगाह उठाई. उन्होंने भी अपनी गरदन हिलाई तो हमने गधों की मांगे पढ़ कर सुनाई.

- ☺ देश के समस्त गधों की एक सुर में ये मांग है कि उन्हें 'गधा' कह कर अपमानित ना किया जाए, बल्कि 'गर्दभराज' कह कर सम्मान से पुकारा जाय.
- ☺ गधों के लिए एक अलग राज्य स्थापित किया जाए, जहां मुख्यमंत्री से लेकर संतरी तक केवल गधा ही चुना जाए.
- ☺ घोड़ों की तरह गधों की रेस भी आयोजित कराई जाएं, जिनमें जीतने वाले गधों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जाएं.
- ☺ हर शहर, हर गांव में गधों के लिए एक विशेष मैदान आरक्षित होना चाहिए. जहां चारों तरफ हरी–हरी घास उगाई जाए तथा वहां लोट लगाने का विशेष प्रबंध होना चाहिए, ऐसे मैदानों में गधों के अलावा अन्य किसी भी जानवर के प्रवेश पर प्रतिबंध होना

चाहिए. वहां गेट पर लिखा होना चाहिए 'ओनली डंकीज़'

- ☺ गधों को संगीत की महफ़िलों में अपना विशेष राग अलापने की पूरी छूट होनी चाहिए.
- ☺ इसके अलावा एक ख़ास मांग यह भी है कि शादी के लिए बारात में जाते वक़्त दुल्हें को घोड़े की बजाए गधे पर बैठाया जाए, ताकि दुल्हन को दो 'गधों' में से किसी एक को चुनने का मौक़ा मिल सके.

वैसे तो मांगों की लिस्ट काफ़ी लंबी है, लेकिन फ़िलहाल इतनी ही मांगे पूरी हो जाएं तो गधा बिरादरी संतोष कर लेगी, क्यों भाइयों, सारे गधों ने एक सुर में कहा– "हां."

हमने मांगों की सूची नेताजी को थमाते हुए उनसे गधों के लिए 'दो शब्द' बोलने का अनुरोध किया. नेताजी खड़े होकर माइक के पास आए, गधों को मुस्कुराते हुए प्रणाम किया और जेब से अपने भाषण का एक लंबा-सा काग़ज़ निकाला. हम डर गए, पता नहीं इनके 'दो शब्द' कितने लंबे हों, नेताजी अपनी दूसरी जेब से चश्मा निकालने लगे, पर चश्मा नदारद था. उन्होंने अपने एक चमचे को इशारा किया. चमचा जीप में से चश्मा लेकर दौड़ता हुआ आया, उसका पैर लड़खड़ाया और वो धड़ाम् से मंच पर गिरा. नेताजी का क़ीमती चश्मा चकनाचूर, नेता जी गुस्से में भड़के, "नालायक, गधे."

माइक पर गूंजते नेताजी के इन्हीं दो शब्दों ने सारा माहौल चौपटकर दिया. भला गधे अपना अपमान कैसे बर्दाश्त करते. मंच पर बैठे एक मुखिया गधे ने तुरंत उछल कर नेताजी के मुंह पर अपनी दुलत्ती जमा दी,जिसके परिणामस्वरुप नेताजी मुंह के बल मंच पर जा गिरे, वो

Gadhon Ka Sammelan

चिल्लाए, “बचाओ-बचाओ.” हमने नेताजी को बचाने की कोशिश की तो हमें भी दुलत्ती खानी पड़ी और जब नेताजी के चमचों ने मुखिया गधों पर डंडे बरसाने शुरू कर दिए तो वहां मौजूद तमाम जनता गधों ने बग़ावत कर दी और सम्मेलन को युद्ध का मैदान बना डाला.

हम कोने में दुबके सोच रहे थे,

ये कभी नहीं सुधरेंगे,
गधे हैं और गधे ही रहेंगे.

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

☺

“Bekhabar Ki Dulattiyaan”

Gangaraam ‘Idiot kahin ka’

गंगाराम ‘ईडियट कहीं का’

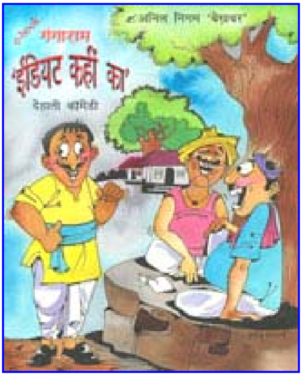

लेखक : अनिल निगम ‘बेख़बर’
विषय : हंसी–ठहाकों का देहाती अंदाज़ (टेली–प्ले)
भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़ : W-5.03”X H-7.17”
फॉर्मेट : पी डी एफ
मूल्य :: (As per item listing)
डिलीवरी : ई–मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स : (PaisaPay)/चेक/क्रेडिट–डेबिट कार्ड
(Click for details)
संपर्क करें : **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

✍Anil Nigam ‘Bekhabar’

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

गंगाराम 'ईडियट कहीं का'

दोस्तो ईडियट दो प्रकार के होते हैं एक तो वो जो दूसरों के ज़रिए बनाए जाते हैं और दूसरे वो जो रेडीमेड होते हैं यानी पैदायशी ईडियट. हमारा गंगाराम दूसरी किस्म का ईडियट है लेकिन अपने आप को समझता होशियार है. आइए उसके गांव की चौपाल पर चलते हैं जहां वो अपने गांववालों के साथ बैठा चुटकुलों की महफिल जमाए है.

(गांव की चौपाल पर लोग बैठे बातें कर रहे हैं)

बनवारी : (आवाज़ लगा कर) राम-राम गंगाराम.

गंगाराम : राम-राम बनवारी भइया.

गनपत : हम कहा नमस्कार गंगाराम.

सरजू : (हकला कर) ज... ज... जै राम... जी की ग.. गं... गंगाराम.

गंगाराम : अरे आओ-आओ गनपत, सरजू आओ चौपाल में बइठो. औउर सुनाओ भइया का हाल चाल है तुम सबका?

बनवारी : सब चकाचक है भइया.तुम अपनी सुनाओ मुम्बई घूम के आये हों, उहां का-का देखा केसे-केसे भेंट भई. तुम तो बहुत दिन

ठहर गये.

गनपत : हां गंगाराम, तुम्हरे बिना तो ई गांव की चौपाल में काउनो का मन ही नाही लगत रहा.सब तुम्हार किस्सा सुने खातिर बेचैन हुई गये रहे.

सरजू : हां गं... गं.. गाराम कौउनो चुट चुट-चुटकुला सुनाओ.

गंगाराम : (हंसते हुए) क्यों रे सरजुआ. तू अपनी जोरू के सामने भी. अइसे ही हकलाएगा का. (सब हंसते हैं.)

बनवारी : अच्छा ई तो बताओ गंगाराम इहां से मुम्बई जाते टेम रेल मां कौउनो तकलीफ तो नाहीं भई ना?

गंगाराम : अरे का पूछत हो भइया. बड़ा हंगामा होई गवा रहा.

बनवारी : का भवा?

गंगाराम : जइसे ही रेल सटेसन से छूटी. कि दुई आदमी डब्बा मां झगड़े लगे.

(फ्लैश बैक)

Gangaraam ‘Idiot kahin ka’

मुसाफिर १: मैं कहता हूं मुझे गर्मी लग रही है इसलिए ये खिड़की खुली रहेगी.

मुसाफिर २: लेकिन मुझे सर्दी लग रही है इसलिए ये खिड़की बन्द रहेगी.

मुसाफिर १: मैंने कहा ना. खिड़की खुली रहेगी.

मुसाफिर २: नहीं खिड़की बन्द रहेगी.

मुसाफिर १: मैं पूछता हूं ये रेल क्या तुम्हारे बाप की है?

मुसाफिर २: तो क्या तेरे बाप की है.

गंगाराम: (बीच में) ईका हुई रहा है?

मुसाफिर १: ओए ज्यादा होशियारी करेगा तो तेरी हड्डी पसली तोड़ डालूंगा.

मुसाफिर २: मैं तेरा सिर तोड़ डालूंगा.

मुसाफिर १: मैं गरदन मरोड़ दूंगा.

मुसाफिर २: मैं पूरे चौसठ दांत तोड़ डालूंगा.

गंगाराम: (बीच में) लेकिन भइया मुंह मां दांत तो सिर्फ. बत्तीस होत हैं. चौंसठ नाहीं.

मुसाफिर २: मुझे मालूम था तू बीच में ज़रूर बोलेगा इसलिए साथ में मैंने तेरे दांत भी गिन डाले थे. अब मैं भी देखता हूं ये खिड़की

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

कैसे खुली रहती है.

मुसाफिर १: मैं खिड़की खोल के रहूंगा.

मुसाफिर २: ख़बरदार जो खिड़की खोली तो.

मुसाफिर १: अबे जाजा तू मेरा क्या बिगाड़ लेगा. ये ले खोल दी खिड़की.

मुसाफिर २: तेरी ये मजाल. तो ये ले

(दोनों मारपीट करते हैं. शोर गुल)

गंगाराम: (बीच बचाव कराते हुए) अरे-अरे भइया तुम दोनों.काहे झगड़ा करत हो ई खिड़की मां तो कांच ही नाही है.(सब हंसते हैं.)

(फ्लैश बैक ओवर)

बनवारी: (हंसते हुए) अच्छा ई तो बताओ मुम्मई मां अपने जगदीस भइया से भेंट भई कि नाही ऊ तो कंपूटरी री पढ़े जो गांव से मुंबई गये तो समझो उहीं के होई गये.

गनपत : हां गंगाराम जगदीस भइया का हाल तो सुनाओ.सुना है उन्होंने सहर की डाक्टरनी से सादी कर लई है.

गंगाराम: अरे जगदीस बाबू का हाल का पूछत हो. ऊतो बिल्कुल सहरी बाबू बन गये.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

बनवारी : फिर तो तुम्हार बहुत खातिर भई होगी.

गंगाराम : पूछो मत हम तो ठहरे ही उनके घर थे. बहुत खातिर भई.हम जइसे ही सटेसन से उनके घर पहुंचे कि सबसे पहले एक जबरदस्त कुत्ता आए के भौंके लगा.

(म्यूज़िक विथ डॉग बार्किंग)

जगदीश : कौन है?

गंगाराम : (दूर से) जगदीश बाबू राम-राम. हम हैं गंगाराम.

जगदीश : (आश्चर्य से) गंगाराम कौन गंगाराम?

गंगाराम : भुलाए गये का. अरे हम तुम्हरे गांव वाले गंगाराम हैं.

जगदीश : (याद करते हुए) अच्छा-अच्छा गंगाराम. अरे भई बाहर क्यों खड़े हो अन्दर आ जाओ.

गंगाराम : (डरते हुए) जौउन है तौउन. अन्दर तो हम आ जाते मगर हमका ई कुत्ता से बड़ा डर लग रहा है भइया. तुम्हार ई कुत्ता काटेवाला तो नाहीं है ना?

जगदीश : तुम अन्दर तो आओ गंगाराम, मैं भी तो

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

यही देखना चाहता हूं क्योंकि ये कुत्ता मैंने आज ही ख़रीदा है.

(फ्लैश बैक)

गनपत : अच्छा ई तो बताओ गंगाराम कि जगदीस भइया की जोरू कैइसी हैं? उनकी जोड़ी तो खूब जमत होई.

गंगाराम : अरे का पूछत हो भइया एक सेर तो दूसरा सवा सेर वाला मामला है.

गनपत : का मतलब?

गंगाराम : मतलब ई कि जब हम उनसे पूछे.

(फ्लैश बैक)

गंगाराम : जगदीस बाबू.

जगदीश : क्या बात है गंगाराम?

गंगाराम : आप बुरा ना मानो तो हम एक बात पूछे चाहत हैं.

जगदीश : हां - हां पूछो.

गंगाराम : आपने सहर की लड़की से सादी करके गल्ती तो नहीं की क्योंकि हम सुना रहा कि सहर की लड़कियां बहुत तेज होत हैं. अपने मरद को उंगली पर नचात हैं.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

जगदीश : (हंसते हुए) अरे वो और होंगे जो बीवीयों से डरते होंगे मैंने तो अपनी बीवी पर बड़ा रौब जमाया हुआ है.

गंगाराम : (आश्चर्य से) अच्छा.

जगदीश : और नहीं तो क्या उसकी क्या मजाल जो मेरी बात टाल जाए.

गंगाराम : एइसी बात है तो देखाए दो एक नमूना.

जगदीश : हां-हां अभी लो. (आवाज़ लगा कर) अरे शीला ऽ इधर तो आना. (गंगाराम से) तुम देखो मैं उसे कैसा काबू में रखता हूं. एक दम भीगी बिल्ली बनी रहती है मेरे सामने.

गंगाराम : कमाल है.

जगदीश : कमाल तो अब देखना (आवाज़ लगा कर) अरे भई शीला इधर तो आना.

शीला : जी कहिए.

जगदीश : (बनावटी रोब से) कब से बुला रहा हूं सुनाई नहीं देता क्या? हमारे गांव के मेहमान गंगाराम के लिए फौरन गरमागरम चाय लेकर आओ और इनके चाय पीने

के बाद मेरे लिए बढ़िया सा चाय-नाश्ता आना चाहिए उसके बाद मेरे लिए फौरन नहाने का पानी गरम कर दो. और हां रात के खाने में अगर पुलाव नहीं हुआ तो तुम्हारी ख़ैर नहीं. उसके बाद जानती हो मुझे किस चीज़ की ज़रूरत पड़ेगी?

शीला : एम्बुलेन्स की.

(फ्लैश बैक ओवर)

बनवारी : गंगाराम आज तो हम लोगन का तुम मुंबई का किस्सा सुनाओ. सुना है उहां के लोग बहुत हुसियार होत हैं गांव वालन का ठग लेत हैं.

गंगाराम : अरे कुछ न पूछो भइया. जब हमरे जइसे हुसियार आदमी का लूट लिये तो तुम सब कौउन खेत का मूली हो.

बनवारी : तनि बताओ तो सही आखिर भवा का?

गंगाराम : का बतावें भइया.जौउन है तौउन एक रात मां हम सुनसान रास्ता से जात रहे.

(फ्लैश बैक)

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

गंगाराम : (गुनगुनाते हुए) खई के पान बनारस वाला..

लुटेरा : ओए किधर जाता है?

गंगाराम : हम चिन्चपोकली जाते हैं साहेब.

लुटेरा : अबे साब के बच्चे जो कुछ भी माल है चुपचाप निकाल दे.

गंगाराम : म.. माल. कइसन माल साहेब?

लुटेरा : माल नहीं समझता. अबे तेरे पास जितना रूपया है निकाल जल्दी.

गंगाराम : हमरे पास कौउनो रूपय्या पैइसा नाहीं है.

लुटेरा : तो तू सीधी तरह नहीं निकालेगा. लगता है तेरी ठुकाई करनी है पड़ेगी. साथियों पकड़ लो साले को.

गंगाराम : हम सच कहत हई....अरे-अरे छोड़ो छोड़ो.

(घूंसे की आवाज़ें)

गंगाराम : (कराहते हुए) अरे बप्पा रे बप्पा. मार डाला रे... हाय - हाय

लुटेरा : तलाशी लो इसकी.

गंगाराम : हम कहत हैं....

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Gangaraam 'Idiot kahin ka'

साथी : चुप बे...अरे उस्ताद इसके पास से तो बस तीन रूपया ही निकला.

लुटेरा : क्यों बे. पहले क्यों नहीं बोला. तेरे पास सिर्फ तीन ही रूपये हैं.फोकट में मार खाई. छोड़ दो इस ईडियट को.

गंगाराम : (अकड़ते हुए) का कहा? हम ईडियट हैं अरे ईडियट होगे तुम तुम्हार दादा परदादा, तुम्हरा खानदान. तुम का समझत हौ. हम ई तीन रूपय्या बचावे खातिर मार खात रहे का. अरे हम तो ऊ तीन हज़ार रूपय्या बचावे खातिर मारखात रहे जौउन हम अपने जूता मां छुपाए के रखे हैं.

(फ्लैश बैक ओवर)

बनवारी : इका मतलब तोहार सब रूपय्या बदमास छीन लइ गये का?

गंगाराम : हां भइया, हम बहुत छुपाए की कोसिस किए लेकिन कौउनो फायदा नाही भया.

(सब हंसते हैं.)

बनवारी : हमको भी एक किस्सा याद आ गया.

गनपत : कइसन किस्सा?

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Gangaraam ‘Idiot kahin ka’

बनवारी : उहे मरद औउर जोरू का. बात ई भई कि हम जिस घर मां नोकरी करत रहे ऊ घर का मालिक और मालकिन हमेसा झगड़ा करत रहे. जब देखो तब घर मां दंगा–फसाद अरे एक दिन तो मालिक पुलिस दरोगा के पास जा के बोले.

(फ्लैश बैक)

पति : (हांफते हुए) इन्सपेक्टर साहब, इन्सपेक्टर साहब, जल्दी से मुझे जेल में डाल दीजिए.

इन्सपेक्टर: (आश्चर्य से) जेल में डाल दीजिए? लेकिन तुम्हारा गुनाह क्या है?

पति : मैंने शादी की है.

इन्सपेक्टर: ओह, ये तो वाकई बहुत बड़ा गुनाह है... ख़ैर कब हुई ये दुर्घटना?

पति : दस साल पहले.

इन्सपेक्टर: फिर तो केस पुराना लगता है. फिर क्या हुआ?

पति : क्या बताऊं इन्सपेक्टर साहब इन दस सालों में मेरी बीवी ने मुझे आधा पागल कर दिया. (रोता है.)

✍Anil Nigam ‘Bekhabar’

Gangaraam ‘Idiot kahin ka’

इन्सपेक्टरः तो इसमें रोने की क्या बात है? तुम्हारी शादी को तो दस साल हुए हैं मेरी शादी को तो बीस साल हो चुके हैं....

पति : (बीच में) तो क्या आप पूरे पागल...

इन्सपेक्टरः (डांटते हुए) शटअप! आगे क्या हुआ?

पति : आगे क्या बोलूं मुझे अपनी बीवी का हर जुल्म बर्दाश्त करना पड़ता है.

इन्सपेक्टरः तो क्या तुम समझते हो हम अपनी बीवी का जुल्म बर्दाश्त नहीं करते?

पति : आपकी बात और है इन्सपेक्टर साहब पर मैं तो एक शरीफ आदमी हूं.

इन्सपेक्टरः (गुस्से से) क्या मतलब?

पति : मेरा मतलब है मैं बड़ी शराफत से अपनी बीवी का जुल्म बर्दाश्त करता रहा लेकिन जब जुल्म बर्दाश्त से बाहर हो गया तो मैंने अपनी बीवी को सीधा करने की एक तरकीब निकाल ली.

इन्सपेक्टरः तरकीब! बीवी को सीधा करने की...जल्दी बताओ.

पति : थोड़ी देर पहले मैंने एक बड़ा सा पत्थर

उठाया और उसके सिर का निशाना लगा कर दे मारा. अब आप जल्दी से मुझे जेल में डाल दीजिए.

इन्सपेक्टरः हूं! इसका मतलब है तुमने अपनी बीवी का ख़ून कर दिया.

पति : अरे नहीं इन्सपेक्टर साहब में इतना खुशनसीब कहां?

इन्सपेक्टरः तो क्या उसका सिर फोड़ दिया?

पति : नहीं–नहीं इन्सपेक्टर साहब!

इन्सपेक्टरः (झुंझला कर) ओफ्फोह, तो आखिर हुआ क्या?

पति : मेरा निशाना चूक गया.

(सब हंसते हैं.)

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई–मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Thahaaka Adaalat

ठहाका अदालत

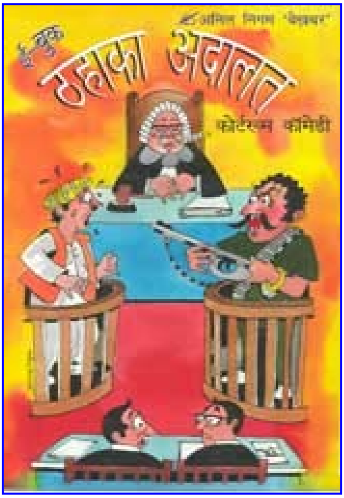

लेखक	: अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय	: कोर्टरूम कॉमेडी प्ले
भाषा	: १) हिंदी २) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़	: W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट	: पी डी एफ
मूल्य	:: (As per item listing)
डिलीवरी	: ई-मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स	**:** (PaisaPay)/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड **(Click for details)**
संपर्क करें	: **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Thahaaka Adaalat

(हम शपथ ले कर ये ऐलान करते हैं कि 'ठहाका अदालत'में जो लिखेंगे हास्य-व्यंग्य में लिखेंगे, हास्य-व्यंग्य के सिवा कुछ नहीं लिखेंगे. -लेखक)

दोस्तों, वैसे तो हम दुआ करते हैं कि आपको कभी अदालत का दरवाज़ा ना खटखटाना पड़े ना ही डोर बेल बजानी पड़े. क्योंकि आमतौर पर अदालतों का माहौल बड़ा ही नीरस और तनाव पूर्ण होता है.चारों तरफ अजीब सी बेचैनी मची रहती है. काले लबादों में घूमते वकीलों के पीछे दुम हिलाते मुवक्किल, बीड़ी पीते हुए हवलदारों के पीछे हथकड़ी पहने हुए मुजरिम और जज साहब के पीछे फाइल दबाए हुए पेशकार, कुल मिला कर यही रूप हमें अदालतों का नज़र आता है. मगर आज हम आपको एक ऐसी अदालत में लेकर चलते हैं जो सिर्फ एक काल्पनिक अदालत है जिसका हकीकत की अदालतों से कोई नाता-रिश्ता नहीं है. इसका अन्दाज़ निराला है, जिसके माहौल में हरपल हंसी के ठहाके गूंजते हैं. जज साहब से लेकर मुजरिम तक आपको हंसने पर मजबूर कर देंगे. तो आइए चलें **'ठहाका अदालत'** में.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Thahaaka Adaalat

दृश्यः (अदालत में जज साहब की मेज़-कुर्सी के दोनों तरफ कटघरे हैं. सामने कुर्सियां और बेंच हैं. जज साहब की कुर्सी के पीछेवाली दिवार पर **'ठहाका अदालत'** का बोर्ड लगा है. एक तरफ दीवार घड़ी दूसरी तरफ कुछ पोस्टर लगे हैं जिनपर लिखे हुए वाक्य इस प्रकार हैं -**'झूठ बोलना पाप है, सच बोलना महापाप हैं' 'यहां खुलेआम घूस लेना मना हैं'.**

जज साहब की कुर्सी ख़ाली है. एक मैडम क्लर्क, एक चपरासी और दो वकील छग्गनलाल-मग्गनलाल आपस में बातें कर रहे हैं.)

छग्गन : यार मग्गन, अपने जज साहब भी बड़े अजीब आदमी हैं, हम लोग तो अपने मुवक्किल के मुकदमें में जिरह-बहस करते हैं और जज साहब कुर्सी पर बैठे ऊंघा करते हैं. एक बार तो उन्होंने मेरे एक मुकमें का फैसला नींद में ही लिख मारा. और मेरे मुवक्किल को ६ महीने की सज़ा सुना डाली.

मग्गन : अच्छा किस केस में?

छग्गन : अरे वही जिसमें मेरे मुवक्किल ने अपनी

सास को छत से सड़कपर फेंक दिया था.

मग्गन : अच्छा तो क्या उसकी सास मर गई?

छग्गन : कहां यार, वो तो अभी तक ज़िन्दा है. मगर मुहल्ले वालों ने उसके ख़िलाफ़ मुकदमा खड़ा कर दिया था.

मग्गन : (आश्चर्य से) मुहल्लेवालों ने. कौन सी दफा में?

छग्गन : वही दफा, जिसमें घर का कूड़ा बाहर फेंकना मना है.

(दोनों हंसते हैं.)

मग्गन : मुझे तो ये नये वाले जज साहब कुछ सनकी मालूम पड़ते हैं.

छग्गन : ठीक कहते हो मग्गनलाल. जज साहब हरकतें तो बेवकूफी की करते हैं मगर फैसले अकलमंदी के करते हैं.

मग्गन : वो तो है, इसीलिए तो मुझे इनका एक स्क्रू ढीला लगता है. (दोनों हंसते हैं.) हां याद आया, आज तो मियां-बीवी के मुकदमे की तारीख़ है.

छग्गन : है तो क्या हुआ नौ महीने बाद की डेट ले

लेंगे. आखिर मियां और बीवी हैं तो हम दोनों के ही मुवक्किल.

मग्गन : वो तो है. मियां को मैंने काबू में कर रखा है और बीवी को तुमने.

(दोनों हंसते हैं.)

मग्गन : हांलांकि वो मियां–बीवी आपस में सुलह करना चाहते हैं.

छग्गन : अरे हमारे होते हुए भला सुलह कैसे हो सकती है. मैंने उसकी बीवी को ऐसी पट्टी पढ़ा दी है कि अब वो तलाक लेने पर आमादा है.

मग्गन : और मैंने भी मियां को ऐसा भड़काया है कि वो दस साल तक मुकदमा लड़ता रहेगा. (दोनों हंसते हैं.)

छग्गन : वो देखो नये जज साहब आ गये.

अर्दली : (आवाज़ लगा कर) ख़ामोश.

(अदालत ख़ामोश हो जाती है.)

कई आवाजें: गुडमार्निंग सर.

जज : (नींद में) गुडमार्निंग एवरी बडी. (मैडम से) हां तो मिस ढक्कनवाला.

Thahaaka Adaalat

मिस : (टोकते हुए) सर मेरा नाम ढक्कनावाला नहीं मिस डेक्कनवाला है.

जज : ओ यस, यस, हां तो मिस डेक्कनवाला पहले तो ये बताओ कि आज तारीख़ कौन सी है?

मिस : आज पहली अप्रैल है सर.

जज : व्हाट, ओ माई गॉड आज तो बर्थ डे है.

सब : ओह हैप्पी बर्थडे टू यू –हैप्पी बर्थडे टू यू.

जज : (हंसते हुए) थैंक यू – थैंक यू

एक आदमी: सर, ये कौन से साल का बर्थ डे है?

जज : अभी तो पैदा हुए दूसरा साल ही शुरू हुआ है.

आदमी : (चौंक कर) दूसरा साल. मगर आपकी उम्र तो.....

जज : मेरी उम्र...अरे भई आज मेरा बर्थ डे नहीं, मेरे कुत्ते का हैं.

(अदालत में हंसी के ठहाके)

जज : (हथौड़ा मेज पर ठोकते हुए) आर्डर-आर्डर...क्या मैं ये समझूं कि आप सब लोग मुझ पर हंस रहे हैं ?

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

कई आवाजें: नहीं-नहीं साहब, बिल्कुल नहीं.

जज : तो फिर इस अदालत में हंसने की और क्या चीज़ है?

(सब हंसते हैं.)

जज : (हथौड़ा ठोकते हुए) आर्डर- आर्डर. आइन्दा किसी ने अदालत में फिजूल हंसने की कोशिश की तो उसे ६ महीने की फांसी लगा दूंगा. (सब हंसते हैं.)

जज : ऑर्डर-ऑर्डर. हां तो मिस डेक्कनवाला. आज का मुकदमा पेश करो.

(तभी एक मारवाड़ी सेठ का प्रवेश)

सेठ : (हांफते हुए) बचाओ-बचाओ जज साब म्हारे को बचालो.

जज : (आश्चर्य से) अरे-अरे क्या बात है?? कौन हैं आप?

सेठ : म्हारो नाम सेठ करोड़ीमल है मैं अनाज को ब्योपार करू हूं जज साब एक डाकू म्हारे पीछे बन्दूक ले के घूम रियो है उसे पकड़ो.

(बाहर से शोर गुल. भागो भागो डाकू

आया भागो भागो....

डाकू : (बन्दूक तान कर) ख़बरदार जो कोई अपनी जगह से हिला...भून के रख दूंगा. सब अपने-अपने हाथ ऊपर उठाओ. (चीख़कर) उठाओ.

(दोनों वकील, नौकर, मिस अपने अपने हाथ ऊपर उठाते हैं. सेठ जज की मेज़ के नीचे दुबक जाता है.)

डाकू : (जज से) जज साहब आप भी हाथ ऊपर उठाइए.

जज : (डरते हुए) लेकिन मैं-मैं हाथ ऊपर उठाऊंगा तो फैसला कौन लिखेगा?

डाकू : फैसला बाद में लिखना पहले बयान तो सुन लो जज साहब.

जज : तो बन्दूक रख के कटघरे में जाकर जो बोलना है बोलो.

डाकू : तुम के जो पूछना है कटघरे में जाकर पूछो. मैं यहीं खड़ा रहूंगा.

जज : (बड़बड़ाते हुए) अजीब आदमी है. अदालत का नियम भी नहीं जानता (डाकू

से) देखो तुम मुझे नहीं जानते मैं बहुत ख़तरनाक जज हूं.फौरन फांसी दे देता हूं.

डाकू : तुम भी मुझे नहीं जानते मैं भी बहुत ख़तरनाक डाकू हूं फौरन गोली मार देता हूं. चलो जल्दी कटघरे में.

जज : अर्दली इस डाकू को समझाओ

अर्दली : (डर के मारे हकलाते हुए) ड..ड.डाकू साहब, जज साहब की इज्ज़त का सवाल है मान जाओ ना.

डाकू : ठीक है चलो मैं ही कटघरे में आ जाता हूं. मगर ये बंदूक मेरे साथ ही रहेगी. बोलो मंजूर है ?

जज : अब और चारा ही क्या है. मंजूर है.

डाकू : (मेज की नीचे झांककर) क्यों सेठ अब बचकर कहां जाएगा चल बाहर निकल (सेठ कांपता हुआ हाथ ऊपर कर के बाहर निकलता है) क्यों मेरी शिकायत करने आया था. चल तू भी जाकर कटघरे में जाकर खड़ा होजा.और बोल जो बोलना है.आज तेरा भी फैसला हो जाएगा.

(सेठ कटघरे में जाकर खड़ाहो जाता है.)

जज : (डाकू से) तुम अपना बयान दो.

सेठ : जज साब इसका बयान-शयान बाद में लेना पहले तो आप इसे फांसी पर लटका दो जो खर्चो होगो मैं दे दूंगो.

जज : (सेठ को डांटते हुए) तुम चुप रहो. देखते नहीं उसके हाथ में बन्दूक है चल गई तो हमारा फैसला हो जाएगा.(डाकू से) हां तो तुम्हारा नाम?

डाकू : डाकू शमशान सिंह.

जज : कहां रहते हो?

डाकू : चम्बल की घाटी में.

जज : वहां कौन सा बिजनेस करते हो? मेरा मतलब है वहां काम धन्धा क्या करते हो?

डाकू : अमीरोंको लूटकर गरीबोंकी मददकरता हूं.

जज : फिर यहां लूटने आए हो या मदद करने?

डाकू : एक डाकू को लूटने.

जज : डाकू. यहां कौन सा डाकू है?

डाकू : यहां हजारों डाकू है. लेकिन वो शरीफों के भेष में छुपे हुए हैं फर्क सिर्फ इतना है कि

हम खुले आम लूटते हैं और वो चोरी-छिपे.हम अमीरों को लूटते हैं और वो ग़रीबों को. उन्हीं डाकूओं में से एक ये सेठ भी है. जिसने लाखों ग़रीबों का खून चूसा है.

सेठ : ये झूठ बोलता है मैं डाकू नहीं मैं तो सेठ करोड़ीमल, अनाज का व्यापारी हूं. सच बोलूं जज साहब, मैं तो आज तक एक चूहो भी नहीं मारो. डाकू तो ये है इसने मने कंगाल कर दियो. म्हारो सब अनाज को गोदाम लूट लियो. मैं बर्बाद हो गयो. हाय-हाय.

डाकू : क्यों झूठ बोलता है सेठ अभी तेरा एक गोदाम बाकी है.

सेठ : अब कौनसा गोदाम बाकी रयो है.

डाकू : (उसके पेट से बन्दूक टिका कर) तेरा ये पेट क्या है ?

सेठ : देखो-देखो जज साहब ये म्हारे पेट को अनाज को गोदाम बोले है.

डाकू : ये गोदाम नहीं तो और क्या है? हजारों

लाखों गरीबों के खून-पसीने से सींचा हुआ अनाज इसी गोदाम में जाता है. (सेठ हाथ नीचे करता है.) हाथ ऊपर रखो.

सेठ : अरे म्हारी धोती सरक रही है. जज साहब इसको समझाओ इसने तो म्हारी खाट खड़ी कर दी म्हारी सेठाणी को सब जेवर लूट लिया बेइमान ने. सच बोलूं जज साब म्हारी घरवाली का तो रो-रो कर बुरो हाल हो गयो दो दिन में सूख के कांटा हो गई.

जज : आपकी घरवाली का कितना वज़न था.

सेठ : दो सौ किलो और साढ़े चार सौ ग्राम.

जज : आपको कैसे मालूम?

सेठ : कमाल है जज साब मैं रोज कांटे पर बिठा कर उसका वजन तौलूं हूं.

जज : हूं...क्यों शमशान सिंह क्या तुमने सेठ करोड़ीमल के अनाज के गोदाम और इनकी घरवाली के ज़ेवर लूटे हैं?

डाकू : हां मैंने इसके अनाज के गोदाम लूटकर गरीबों को बांट दिए.जेवर लूट कर ग़रीब

लड़कियों की शादी करवा दी.

जज : लेकिन तुमको मालूम है किसी को लूटना कानूनी जुर्म है.

डाकू : कानून?? कैसा कानून? आपका कानून सिर्फ किताबों में लिखा है जिनमें दीमक लग चुकी है. आपका कानून सिर्फ बेबस और मजबूरों पर लागू होता है. सेठ करोड़ीमल जैसे दौलतमंद और ऊंची पहुंच वालों के लिए तो कानून महज़ एक खिलौना है जिसे वो जब चाहे ख़रीद सकते हैं और जब चाहे तोड़ सकते हैं... कहां था आपका कानून जब मुझ पर अन्याय हो रहा था.मेरी ज़मीन छिन गई. मेरे बाल बच्चे भूखों मर रहे थे तब आपके कानून ने मेरी क्या मदद की थी? इसीलिए मुझे बन्दूक उठानी पड़ी और आज मेरा कानून मेरी बन्दूक है.

जज : देखो शमशान सिंह, हो सकता है तुम पर सचमुच अन्याय हुआ हो, मैं ये भी मानता हूं कि बहुत से लोग कानून का ग़लत

इस्तेमाल करते हैं. जिससे बेगुनाह लोगों को मुसीबत झेलनी पड़ती है.

डाकू : इसी लिए तो मुझको बंदूक का सहारा लेना पड़ा है जज साहब,

जज : लेकिन जरा सोचो अगर तुम्हारी तरह हर आदमी बन्दूक उठा कर फैसला करे तो सारी दुनिया के इन्सानों का शान्ति से जीना मुश्किल हो जाएगा.हर तरफ गोलियों की आवाज़ें सुनाई पड़ेंगी, पूरी दुनिया आंतकवाद के धमाको से घिर जाएगी और मारे जाएंगे लाखों बेगुनाह.इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम अपनी बन्दूक कानून के हवाले कर दो और भरोसा रखो कानून तुम्हारे साथ कोई नाइंसाफी नहीं करेगा.

डाकू : नहीं मुझे आपके कानून पर भरोसा नहीं.

जज : मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं अगर तुम डाकू का चोला उतार कर नेक इंसान बनने का वादा करो कानून तुम्हें सुधरने का पूरा मौका देगा.

डाकू : आप...आप सच कह रहे हैं जज साहब?

जज : हां, और इसके बाद तुम और तुम्हारे बाल-बच्चे शान्ती और इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे .तुम्हारे बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिल सकेगी वो समाज में आज़ादी से रह सकेंगे.

डाकू : जज साहब? क्या मेरे बन्दूक लौटाने से मेरे बाल-बच्चों को इ़ज्जत और आज़ादी मिल जाएगी?

जज : क्यों नहीं. सुबह को भूला शाम के लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते.

डाकू : (बन्दूक देते हुए)तो ये लीजिए जज साहब मैं अपनी बन्दूक कानून के हवाले करता हूं.आप मुझे जो चाहे सज़ा दे सकते हैं बस मेरे घरवालो ंका ख़याल रखिएगा.

जज : मैं पूरी कोशिश करूंगा कि तुमको कम से कम सज़ा हो (सेठ से) और सेठ जी आप भी कसम खाइए कि आज से किसी ग़रीब को नहीं सताएंगे.

सेठ : जज साब मैं अपणी घरवाली की कसम

Thahaaka Adaalat

खाऊं कि मैं आज से चोखो अनाज तोलूंगा पूरी मजदूरी दूंगो.

जज : मैं भी आप लोगों को वचन देता हूं कि मैं किताबी कानून के बजाए इन्सानियत के कानून से फैसला करूंगा.

(सब लोग मिलकर नारा लगाते हैं.)

नारा : जज साब जिन्दाबाद, ठहाका अदालत ज़िंदाबाद

सेठ : (डाकू से) ओ भाया अब तो हाथ नीचे करके मने धोती सम्भालने दे.

(सब हंसते हैं. डाकू और सेठ जाते हैं.)

☺

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Mumbaiyya Laila-Majnu

मुंबइया लैला मजनूं

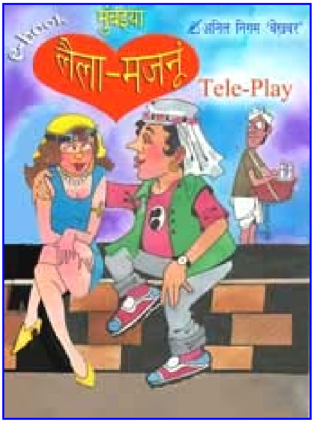

लेखक : अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय : हास्य-व्यंग्य के तीरों का अनोखा प्रयोग (टेली-प्ले)
भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़ : W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट : पी डी एफ
मूल्य :: (as per Item listing)
डिलीवरी : ई-मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स : (PaisaPay)एमओ/ड्राफ्ट/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड
(Click for details)
संपर्क करें : **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)
Click for other useful links

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Mumbaiyya Laila-Majnu

हम इश्क के मारों का इतना सा है अफ़साना।
सैण्डिल भी खा के यारों पड़ता है मुस्कुराना।।

(म्यूजिक)

दोस्तों, ज़रा कल्पना कीजिए अगर लैला-मजनूं मुंबई में और वो भी आज की मुंबई में पैदा हुए होते तो उन्हें रोमांस करने के लिए कैसे कैसे पंगे झेलने पड़ते. चलिए आपकी कल्पना को आसान बनाने के लिए आपको उनसे ही मिलवा देते हैं..वो देखिए वो रहे **मुंबइया लैला-मजनूं**

सीन नं.१ स्थान : सुनसान रोड समय: रात

पात्र : लैला, मजनूं,

मजनूं : (गुनगुनाते हुए दूर से आता है.) अरे इतनी रात गये इस सुनसान सड़क पर यह लड़की? चलो बेटा मजनूं नज़दीक चल कर पता करते हैं बात क्या है.) हलो मैडम क्या बात है? ओह शायद आपकी गाड़ी ख़राब हो गई है?

लैला : जी नहीं ये इम्पोर्टेड़ कार है, कभी ख़राब

		नहीं होती. पेट्रोल ख़त्म हो गया है. यहां आसपास कही पेट्रोल मिलेगा?
मजनूं	:	मैडम, इस सुनसान सड़क पर इतनी रात के वक्त पेट्रोल तो क्या आपको घासलेट भी नहीं मिलेगा. हां एक चीज़ मिल सकती है.
लैला	:	वो क्या?
मजनूं	:	लिफ्ट. आप अगर मुझसे रिक्वेस्ट करें तो मैं आपको लिफ्ट दे सकता हूं.
लैला	:	(खुशी से) ओह थैन्क यू.कहां है आपकी कार?
मजनूं	:	कार. (हंसता है.) मैडम मुझ जैसा मामूली क्लर्क अगर कार में चलेगा तो फुटपाथों का क्या होगा? मैं आपको कार में नहीं बस में लिफ्ट देने वाला हूं.
लैला	:	(भड़क कर) व्हाट नान्सेन्स. जानते हो मैं कौन हूं?
मजनूं	:	शकल से तो आप कार में चलने वाली लगती हैं मगर अकल से पैदल.
लैला	:	शटअप.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Mumbaiyya Laila-Majnu

मजनूं	:	श... श...श...ज़रा धीरे बोलिए यहां के कुत्ते अंग्रेजी सुनते ही भौंकने लगते हैं.
लैला	:	(चीख कर) आई से गेट लॉस्ट. दफा हो जाओ यहां से.
मजनूं	:	ठीक है चला जाता हूं. मगर चलते-चलते एक बात बता दूं कि इस सुनसान इलाके में इतनी रात को आप जैसी हसीन....
लैला	:	(डपट कर) शटअप......आई.....आई मीन थैन्क यू वेरी मच.
मजनूं	:	हां तो मैं क्या कह रहा था?
लैला	:	(शरमाते हुए) मुझ जैसी हसीन.....
मजनूं	:	हां...आप जैसी हसीन....बला अगर किसी को अकेली मिल जाए तो कल के अख़बारों में ख़बर छपेगी "एक कमसिन ख़ूबसूरत लड़की जिसकी उम्र.... आपकी उम्र क्या है मैडम?
लैला	:	(शर्माते हुए) साढ़े अठारह साल पौने तीन महीने सवा दो दिन?
मजनूं	:	यस, साढ़े अठारह साल पौने तीन महीने सवा दो दिन पुरानी एक लड़की से किसी

		ने ज़बरदस्ती.....
लैला	:	(घबरा कर) ज़बरदस्ती....
मजनूं	:	जी हां ज़बरदस्ती कार छीन ली.
लैला	:	(गुस्से से) व्हाट? किसकी मजाल है जो मेरी इम्पोर्टेड कार को हाथ भी लगाए. जानते हो मैं एक मैजिस्ट्रेट बाप की एकलौती बेटी लैला हूं.
मजनूं	:	भई वाह क्या इत्तेफाक है आपका नाम लैला है और मेरा मजनूं. कहीं हम दोनों की लवस्टोरी का नया एपीसोड तो नहीं?
लैला	:	शटाप एण्ड गेट लॉस्ट.
मजनूं	:	ठीक है जैसी आपकी मर्ज़ी. मैं चलता हूं ऑल दि बेस्ट.
लैला	:	(रोकते हुए) सुनिए.....सुनिए....क्या आप वाकई जा रहे हैं?
मजनूं	:	जी हां.
लैला	:	देखिए, मुझे अकेला छोड़ कर मत जाइए प्लीज़. मुझे बड़ा डर लग रहा है. क्या आप मेरी एक मदद करेंगे?
मजनूं	:	फरमाइए.

Mumbaiyya Laila-Majnu

लैला : मेरा घर यहां से सिर्फ पांच मील दूर है. आप मुझे घर तक पहुंचा दीजिए.

मजनूं : मगर कैसे?

लैला : मैं कार में बैठती हूं आप कार को धक्के लगाइए.

मजनूं : (चौंक कर) क्या? मैं आपको धक्के लगाने वाला नज़र आता हूं? रांग नम्बर मैडम, मैं धक्के खाना जानता हूं धक्के मारना नहीं. गुड बाई.

लैला : ओह प्लीज़ मेरी मजबूरी समझने की कोशिश कीजिए. मेरे डैडी बहुत गरम मिज़ाज के आदमी हैं. अगर मैं आधे घन्टे के अन्दर घर न पहुंची तो वो पुलिस वालों की नींद हराम कर देंगे. दर असल गल्ती मेरी ही है. मुझे सहेली की बर्थ डे पार्टी में इतनी देर तक नहीं रूकना चाहिए था. ओह गॉड अब मेरा क्या होगा.... (रोना शुरू करती है.)

मजनूं : अरे-अरे...आप तो रोने लगी...देखिए आप फौरन चुप हो जाइए वरना कोई

समझेगा मियां बीवी में झगड़ा हो रहा है.

लैला : (और ज़ोर से रोने लगती है.)

मजनूं : अच्छा बाबा लगाता हूं धक्के. अब तो चुप हो जाइए प्लीज़.

लैला : (चुप होते हुए) थैन्क यू. हाऊ स्वीट आफ यू.

मजनूं : चलिए आप स्टेयरिंग व्हील सम्भालिए.

लैला : ठीक है. मगर कार को ज़रा आहिस्ता से धक्के लगाइएगा वरना नया टायर ख़राब हो जाएगा.

मजनूं : (चिढ़ कर) ओफ्फोह आप कहें तो कार को सरपे उठा लूं.(बड़बड़ाते हुए) अजीब मुसीबत है. चलिए जल्दी कीजिए.

नोट : इसके बाद पुस्तक में कुछ और दिलचस्प सिचुएशन्स आती हैं जिनमें लैला–मजनूं के बीच रोमांस हो जाता है और लैला मजनूं को अपने पिता से मिलाने के लिए अपने घर बुलाती है.

सीन नं.५ स्थान : लैला का घर समयः शाम

पात्र : लैला, मजनूं, लैला के डैडी

(डोर बेल की आवाज़)

Mumbaiyya Laila-Majnu

लैला : (दरवाज़ा खोल कर खुशी से) मजनूं. आओ आओ अंदर आ जाओ.मैं जानती थी तुम ज़रूर आओगे. मुझे तुम्हारी बहादुरी पर नाज़ है.

मजनूं : (धीरे से) वो तो ठीक है मगर ये बताओ तुम्हारे डैडी क्या कर रहे हैं?

लैला : बस अभी अभी जूते उतार कर बैठे हैं.

मजनूं : (घबरा कर) क्या जूते?

लैला : ओफ्फोह तुम तो ख़ामख़ां घबरा रहे हो. एक वो मजनूं था...

मजनूं : (सोचते हुए) बस बस में समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो.

लैला : हाऊ स्वीट. तुम कितने समझदार हो.

लैला के डैडी: (आवाज लगा कर) लैला बेटी. किससे बातें कर रही हो? कौन आया है?

लैला : (पास आतेहुए) डैडी ये है मिस्टर मजनूं बाजपेयी. आपसे कुछ ज़रूरी बातचीत करना चाहते हैं (धीरे से) नमस्ते करो.

मजनूं : (हड़बड़ा कर) न....न..नमस्ते नमस्ते

डैडी : हूं. क्या नाम बताया?

✍Anil Nigam ‘Bekhabar’

Mumbaiyya Laila-Majnu

मजनूं : म...म...मजनूं बाजपेयी.

डैडी : तुम इतनी दूर क्यों खड़े हो? नज़दीक आओ.

मजनूं : ज... ज... जी नहीं मैं यहीं ठीक हूं.

लैला : डरो नहीं मजनूं. आओ यहां डैडी के पास बैठो.

मजनूं : नहीं नहीं मैं खड़ा रहूंगा...

डैडी : (डांटते हुए) हम कहते है बैठ जाओ.

मजनूं : (घबरा कर) ज...जी बैठता हूं बैठता हूं.

लैला : आप लोग बैठ कर बातचीत कीजिये मैं तब तक चाय नाश्ते का इंतज़ाम करती हूं. (जाती है.)

डैडी : हूं.... अब बोलो क्या कहना चाहते हो?

मजनूं : (हकलाते हुए) ज... जी बात ये है कि.. कि मैं.... मैं आपसे....

डैडी : चंदा मांगने आये हो?

मजनूं : जी नहीं मैं चंदे का धंधा नहीं करता. मैं मैं तो आपकी....

डैडी : नौकरी करना चाहते हो?कहां तक पढ़े हो?

मजनूं : जी?

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Mumbaiyya Laila-Majnu

डैडी : (डपट कर) कहां तक पढ़े हो?

मजनूं : (घबरा कर) बी.ए.एल.एल.बी फेल.

डैडी : फिर तुम्हें नौकरी नहीं मिल सकती.

मजनूं : लेकिन.....

डैडी : लेकिन लेकिन कुछ नहीं. मेरे कोर्ट का चपरासी भी तुमसे ज्यादा पढ़ा लिखा है.

मजनूं : लेकिन सर मैं आपके यहां नौकरी मांगने नहीं आया हूं. खुशकिस्मती से मुझे क्लर्क की नौकरी मिल चुकी है.

डैडी : तो फिर क्या मांगने आये हो?

मजनूं : (शर्माते हुए) जी मु....मु...मुझे आपकी बेटी का हाथ चाहिये.

डैडी : (भड़क कर) व्हाट नानसेंस? मेरी बेटी का हाथ कोई स्पेयर पार्ट है जो तुम्हें निकाल कर दे दूं?

मजनूं : म...मेरा मतलब है मुझे आपकी पूरी बेटी चाहिये. फुल बेटी इन वन पीस.

डैडी : (चौंककर) क्या? वन पीस?

मजनूं : जी हां. हम....हम दोनों एक दूसरे से प्यार यानि लव करते हैं....हम शादी

करना चाहते हैं. लव मैरेज सर.

डैडी : क्या कहा तुम मेरी बेटी से लव मैरेज करना चाहते हो. कभी आइने में चेहरा देखा है अपना?

मजनूं : आज सुबह दाढ़ी बनाते समय देखा था?

डैडी : (भड़ककर)शटअप.तुम जैसा मामूली क्लर्क.

मजनूं : (टोकते हुए) मैं मामूली नहीं सरकारी क्लर्क हूं जी.

डैडी : सरकारी क्लर्क.क्या तनख्वाह है तुम्हारी?

मजनूं : तनख्वाह तो तीन हज़ार है मगर मैं ओवरटाइम बहुत करता हूं जी कुल मिला कर पांच हज़ार मिल जाते है.

डैडी : (हंसते हुए) पांच हज़ार?? पता है इतने रूपये की तो मेरी बेटी आईस्क्रिम खा जाती है.

मजनूं : खाती होगी. मगर मेरे प्यार की ख़ातिर वो आईस्क्रिम खाना छोड़ देगी देखिए.

डैडी : इडियट. मैं अपनी बेटी को तुमसे ज़्यादा जानता हूं.

मजनूं : और मैं उसके प्यार के बुख़ार को आपसे

ज्यादा जानता हूं.

डैडी : (भड़कते हुए) तुम्हारी ख़ैरियत इसी में है कि तुम उससे लव मैरिज का ख़याल छोड़ कर यहां से दफा हो जाओ.

मजनूं : हरगिज़ नहीं. मैं लव मैरिज किये बिना यहां से दफा नहीं हो सकता.

डैडी : (गुस्से से) तुम्हारी ये मजाल. मैं चाहूं तो अभी तुम्हें धक्के मार कर बाहर निकाल सकता हूं.

मजनूं : और मैं चाहूं तो धक्के खाकर फिर अंदर आ सकता हूं.

डैडी : (चीख कर) गेट आउट आई से गेट आउट. वरना मैं अभी तुम्हें शूट कर दूंगा.

मजनूं : और अगर आपके शूट करने से मैं शहीद हो गया तो याद रखिए मुझ जैसा शरीफ दामाद आपको कहीं नहीं मिलेगा.चलता हूं.

डैडी : गेट लास्ट

मजनूं : गुड बाई.

लैला : (आते हुए) अरे अरे मजनूं. कहां जा रहे

Mumbaiyya Laila-Majnu

हो. रूको तो सही.

मजनूं : नहीं लैला बहुत हो चुका अब मैं यहां एक सैकंड भी नहीं ठहर सकता मुझे जाने दो.

लैला : ठीक है चले जाना मगर कम से कम नाश्ता तो करते जाओ.

मजनूं : नाश्ता. लाओ कहां है नाश्ता ?

डैडी : (डपटते हुए) ख़बरदार जो नाश्ते को हाथ भी लगाया.

मजनूं : ठीक है मैं हाथ नहीं लगाता लैला तुम अपने हाथ से खिला दो.

डैडी : शट अप.

लैला : डैडी ये आप क्या कह रहे हैं. भला अपने होने वाले दामाद से कोई ऐसा सुलूक करता है.

डैडी : ये मेरा दामाद हरगिज़ नहीं बन सकता.

लैला : क्यों नही बन सकता? आख़िर क्या कमी है इसमें आंख–नाक–कान सभी कुछ तो सलामत हैं.

डैडी : दांत देखें है इसके. हंसता है तो कितना भौंडा दिखता है.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Mumbaiyya Laila-Majnu

लैला : इसकी आप फिकर मत कीजिये. शादी के बाद मैं इसे हंसने का मौका ही नहीं दूंगी.

डैडी : कुछ भी हो जाये मैं इस लफंगे को अपना दामाद नहीं बनने दूंगा.

मजनूं : ये मेरा अपमान है आइ मीन ग्रेट इंसल्ट. मैं इस ग्रेट इंसल्ट का ग्रेट बदला ले कर रहूंगा आई मीन ग्रेट रिवेंज. लैला, अगर तुम्हें मुझसे सच्ची मुहब्बत है तो आज रात को गंगू हलवाई की दुकान पर मुझसे मिलना. मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगा. चलता हूं ससुरजी.

डैडी : यू इडियट की औलाद.

मजनूं : औलाद नहीं दामाद.

डैडी : (चीख कर) गेट आउट.

(म्यूज़िक)

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Izzat Udhaar Ki

इज़्ज़त उधार की

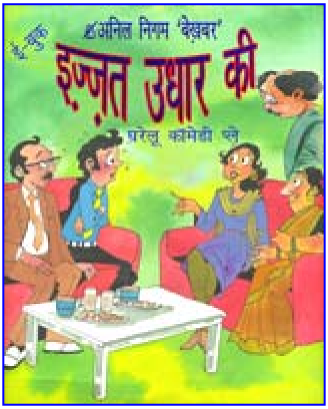

लेखक : अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय : हास्य–व्यंग्य भरा घरेलू ड्रामा
भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़ : W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट : पी डी एफ
मूल्य :: (As per item listing)
डिलीवरी : ई–मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स : (PaisaPay)/चेक/क्रेडिट–डेबिट कार्ड
(Click for details)
संपर्क करें : **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)
Click for other useful links

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

इज़्ज़त उधार की

समय : सुबह के १० बजे हैं.

स्थान : वर्माजी का ड्राईंगरूम

(वर्मा जी अपने ड्राईंगरूम को पड़ोसियों से उधार मांग कर लाए हुए सामान द्वारा सजाने में व्यस्त हैं.)

वर्मा जीः (गुनगुनाते हुए) कोई आने वाला है... कोई आने वाला है... (आवाज़ देकर) मैंने कहा रश्मि की मां ज़रा इधर तो आना ऽ

सविता : (दूसरे कमरे से) आती हूं ऽ ऽ ऽ ......

वर्मा जीः (सोचते हुए) हूं.. ये सोफा इधर ही ठीक है.... और वो पंखा उधर...और अब ये टी.वी.की ट्राली इधर रखी जाए...ये कम्प्यूटर इधर.. हूं अच्छा, तो अब ये शेर मियां बच गये...चलो इसे भी ठिकाने लगाता हूं.

(जैसे ही सोफे पर रखे हुए शेर मुण्ड को हाथ लगाते हैं शेर दहाड़ता है.)

वर्मा जीः (घबरा कर शेर मुण्ड को टेबल पर छोड़ देते हैं और बड़बड़ाते हैं.)...कमाल है इसे

कहते हैं रस्सी जल गई मगर ऐंठन नहीं गई, कम्बख़्त मेरे ही घर में मुझे ही खाना चाहता है...और वो भी बिना पेट के, लगता है इसको मालूम नहीं मेरा गुस्सा कितना ख़तरनाक है. अगर मुझे गुस्सा आ गया तो शेर क्या मैं अपनी बीवी से भी नहीं डरता. (शेर मुण्ड का कान पकड़ कर उठाते हुए) ठहर तुझे बकरी ना बनाया तो मेरा नाम बृज बिहारी वर्मा नहीं....(शेर के मुंह से बकरी की आवाज़) (शेर मुण्ड को कील पर टांगते हुए) ख़बरदार जो आवाज़ निकाली. (पसीना पोछते हुए आवाज़ लगा कर) रश्मी की मां ऽ ऽ ऽ.ज़रा इधर तो आना

सविता : (दूसरे कमरे से) आती हूं ऽ ऽ ऽ ......

वर्मा जी: (बड़बड़ाते हुए) हद हो गई सुबह से बुला रहा हूं और तुम हो कि आती हूं...आती हूं कह कर बहला रही हो.

सविता : (कमरे में प्रवेश करते हुए) ओफ्फोह, घन्टे भर से कह रही हूं कि बस पांच मिनट में

आती हूं मगर तुमसे ज़रा भी सब्र नहीं होता, अब जल्दी बोलो क्या बात है?

वर्मा जीः ये बताओ हमारे ड्राईगरूम में अब किसी चीज़ की कमी तो नहीं रह गई है ना? लगता है ना किसी रईस का ड्राईगरूम?

सविता : हां हां लगता है जितना हो सकता था कर दिया.बल्कि मैं तो कहती हूं पड़ोसियों से सामान उधार मांग कर झूठी शान दिखाने से क्या फायदा, मगर मेरी सुनता ही कौन है?

वर्मा जीः बस करो बस करो बीस साल से सुनते-सुनते मेरे कान ऐंठ गये मगर आज बिल्कुल नहीं सुनूंगा अरे कितनी मुश्किल से एक अमीर बिज़नेसमैन को हमारी बेटी से रिश्ता करने के लिए राज़ी किया है. रामलाल जी अपने बेटे के लिए तुम्हारी लाडली को देखने आ रहे हैं. अगर उनके सामने ये सब चीज़ें न हुई तो तुम्हारा ये कूड़े जैसा घर देख कर भला रिश्ता मंजूर करेंगे.और फिर उन्हें क्या पता कि ये

उन्तीस इंच का लेटेस्ट कलर टी.वी.ये कम्प्यूटर, ये नए डिज़ाइन का सोफासेट हम पड़ोसियों से उधार मांग कर लाए हैं. क्या इस पर किसी का नाम लिखा है?. तुम्हें क्या पता आजकल लड़कियों की शादी करने के लिए क्या-क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं. तुम्हारी तो शकल के साथ-साथ अकल पर भी परदा पड़ा है.

सविता : क्या कहा?

वर्मा जी: कुछ नहीं...कुछ नहीं....और सुनो मैंने रामलाल जी को ये नहीं बताया है कि मैं रिटायर्ड पोस्टमैंन हूं.

सविता : तो फिर क्या बताया है जी?

वर्मा जी: यही कि मैं रिटायर्ड पोस्टमास्टर हूं.

सविता : मै पूछती हूं ये सब झूठ बोलने की आख़िर क्या ज़रूरत है?

वर्मा जी: ज़रूरत है, लड़की का रिश्ता तय करने के लिए बहुत से झूठ बोलने पड़ते हैं पर तुम नहीं समझोगी.तुम अन्दर जाकर चाय-पानी का इन्तज़ाम करो उन लोगों के आने का

वक़्त हो गया हैं.

सविता : चाय पानी का क्या ख़ाक इन्तज़ाम करूं दूधवाला तो अभी तक आया ही नहीं.

वर्मा जी: क्या कहा दूध वाला भी अभी तक नहीं आया है (सोचते हुए) लगता अब किसी की भैंस भी उधार मांग कर लानी पड़ेगी.

सविता : वाह-वाह क्या कहने है जनाब के, अरे अगर तुम्हारा यही हाल रहा तो कल को मेरे बीमार पड़ने पर किसी की बीवी भी उधार मांग कर ले आओगे.

वर्मा जी: हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं भला एक मुसीबत के होते हुए दूसरी मुसीबत क्यों मोल लूंगा.

सविता : (झल्ला कर) मैं तो तंग आ गई तुम्हारी नाटक बाज़ी से (दूसरे कमरे में जाती है.)

वर्मा जी: भगवान बचाए ऐसी बीवी से समझ में नहीं आता इसे हर बात में दख़ल देने की कौन सी बीमारी है. उधार मत मांगो, दिखावा न करो. हूं...(पब्लिक से) अब आप ही बताइए अगर मैंने थोड़ी देर के

लिए पड़ोसियों से सामान मांग ही लिए तो कौन सा गज़ब हो जाएगा. अजी अपना काम भी निकल जाए और ख़र्च भी न हो इसी को तो कहते हैं एक तीर और दो निशाने.

नोटः इस दौरान पुस्तक में अनेक दिलचस्प किरदार आते हैं और हंसी ठहाकों का दौर आगे बढ़ता है...

वर्मा जीः (आवाज़ देकर) बुध्दू ओ बुध्दू

बुध्दू : (दूसरे कमरे से प्रवेश करते हुए) जी मालिक.

वर्मा जीः बाहर एक शराबी-कबाबी खड़ा है. कम्बख्त ने नाक में दम कर रखा है. (अपनी छड़ी उठाते हुए) ज़रा पकड़ कर ला अभी उसकी मरम्मत करता हूं.

बुध्दू : (बांह चढ़ाते हुए) अभई लो मालिक (दरवाज़ा खोलता है और शराबी की बजाए बाहर खड़े हुए रामलाल जी (लड़के के चीपता) की टाई पकड़ कर खींचता हुआ अन्दर लाता है. रामलाल जी का लड़का रवि दूरबीन लगा कर ये सब

देखता हुआ अन्दर आता है.)

रामलालजीः (अपनी टाई छुड़ाते हुए) अरे....अरे.... ये..ये क्या बदतमीज़ी है....यू ईडियट नानसेंस.

वर्मा जीः (चौंक कर) अरे रामलाल जी आप. (बुध्दू को डांटते हुए) बुध्दू छोड़ इनकी टाई गधा कहीं का चल भाग यहां से (बुध्दू टाई छोड़ कर दूसरे कमरे में चला जाता है.)

वर्मा जीः हें... हें... हें...माफ कीजिए नया नौकर है थोड़ी देर पहले ही एप्वाइंट किया है. इसने ग़ल्ती से आपको शराबी समझ लिया था...बेवकूफ.

रामलालः (टाई ठीक करते हुए) कौन?

वर्मा जीः जी आप नहीं, नौकर को कह रहा था... अरे आप लोग अब तक खड़े क्यों हैं आइये इस सोफे पर बैठिए ना. (आवाज़ लगा कर) सविता....रश्मि की मां, रामलाल जी आ गये हैं.

सविता : (अंदर से आती है.) नमस्ते.

रामलालः नमस्ते नमस्ते. (सोफे पर बैठ जाते हैं

मगर रवि दूरबीन लगाए खड़ा रहता है. रामलाल उसे पकड़ कर सोफे पर बैठा देते हैं.)

रामलालः (हंसते हुए) हें... हें...हें...माफ कीजिएगा हमें आने में थोड़ी देर हो गई. बात दरअसल ये हुई कि मेरी कार रास्ते में ख़राब हो गई थी. और आज टैक्सी वालों की हड़ताल चल रही थी, इस लिए मजबूरन कार रिपेयर होने तक रुकना पड़ा.

वर्मा जीः अफसोस मुझे पहले मालूम होता तो मैं खुद ही आपको लेने पहुंच जाता.

रामलालः वैसे तो मेरा एक दोस्त अपनी गाड़ी भेज रहा था पर मैं ज़रा अलग ख़यालात का आदमी हूं झूठ-मूट का दिखावा मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है.

(वर्मा जी घबरा कर सविता की तरफ देखते हैं.)

सविता : आप ठीक कहते हैं भाईसाहब, झूठ-मूट का दिखावा करना अच्छी बात नहीं है.

Izzat Udhaar Ki

रामलाल: हां, अब देखिए ना चलते समय मेरी बीवी मुझसे कहने लगी कोई अच्छा वाला सूट पहन जाओ, मैंने कहा अरे भई हमें लड़की देखनी है कोई कपड़ों की नुमाइश थोड़े ही करनी है. (तीनों हंसते हैं.)

रामलाल: (रवि को चुप देखकर) तुम भी हंसो.
(रवि हंसता है.)

वर्मा जी: (चहकते हुए) वाह-वाह कितने ऊंचे विचार हैं आपके.

रामलाल: (रवि की तरफ देखते हुए) मेरे बेटे के भी बड़े ऊंचे विचार हैं.

वर्मा जी: (याद करते हुए) ओह मैं तो भूल ही गया थाआपके बेटे अभी तक नज़र नहीं आए.

रामलाल: (चौंककर) कमाल करते हैं आप भी (रवि की तरफ इशारा करते हुए) यही तो है मेरा बेटा रवि (रवि से) पैर छुओ बेटा.

रवि : (दूरबीन से ऊपर देखते हुए) कहां है पैर?

रामलाल: (समझाते हुए) ऊपर नहीं बेटा, पैर हमेशा नीचे होते हैं.
(रवि रामलाल के पैर छूने लगता है.)

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Izzat Udhaar Ki

रामलाल: अरे मेरे नहीं बेटा इनके छुओ. (रवि वर्माजी और सविता के पैर छूताहै.)

सविता : (आर्शिवाद देतेहुए) सदा सौभाग्यवती रहो.

रामलाल: (चौंक कर) जी क्या कहा?

सविता : म....मेरा मतलब है सदा सुखी रहो. (हंसते हुए) माफ कीजिएगा मुझसे पहचानने में ज़रा भूल हो गई. दरअसल इनकी पोशाक से मैं इन्हें आपकी बेटी समझ बैठी थी. दरअसल कानों में बालियां और स्टाइल से आजकल के लड़के-लड़कियों में अंतर करना मुश्किल हो गया है. (तीनों हंसते हैं रवि शर्माता है.)

रामलाल: ये तो आप ठीक कहते हैं आजकल के फैशन की वजह से तो कभी-कभी मैं इसकी मां को भी नहीं पहचान पाता. (दोनों हंसते हैं.)

☺

नोट: ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Bekhabar Ki Chugaliyaan

बेख़बर की चुगलियां

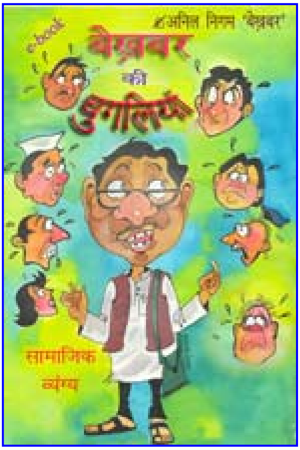

लेखक	:	अनिल निगम 'बेख़बर'
विषय	:	हास्य-व्यंग्य के लेखों का संकलन
भाषा	:	१) हिंदी
		२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)
साइज़	:	W-5.03"X H-7.17"
फॉर्मेट	:	पी डी एफ
मूल्य	::	(As per item listing)
डिलीवरी	:	ई-मेल द्वारा
पेमेंट ऑप्शन्स	**:**	(PaisaPay)/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड
		(Click for details)
संपर्क करें	:	**anilnigambekhabar (eBay Member)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Bekhabar Ki Chugaliyaan

इक्कीसवीं सदी के नज़ारे

“क्यों पैसे बरबाद करती है? आज के ज़माने में साड़ियां पहनने का शौक़ किसे है? साड़ियां तो आजकल म्यूजियम में रखने की चीज़ है. अगर लाना ही है तो दो-चार नये फ़ैशन के मिनी स्कर्ट ले आना, मैं शाम की पार्टी में पहन कर जाऊंगी.” सास बहू से बोली.

✍Anil Nigam ‘Bekhabar’

यूं तो अभी इक्कीसवीं सदी की शुरुआत ही हुई है लेकिन जिस तेज़ी से तकनीकी विज्ञान तरक्की कर रहा है उससे आप सभी परिचित हैं. और चूंकि हमें इंतज़ार करना पसंद नहीं है, इसलिए हम अपनी कल्पनाओं के घोड़े फ़ास्ट स्पीट में दौड़ा कर बहुत आगे निकल चुके हैं, बल्कि अब तो हम सन् 2050 के दशक में सैर कर रहे हैं. आइए हम आपको दिखाते हैं इक्कीसवीं सदी के चंद नज़ारे.

सास ने वीडियोफोन का नम्बर डायल किया... बीप... बीप... बीप... बीप...

अचानक वीडियोफ़ोन के स्क्रीन पर बहू का चेहरा नज़र आया, उसके हाथ में वीडियो मोबाइल फ़ोन है.

“हैलो, क्या बात है मॉम?” बहू ने पूछा.

“मॉम की बच्ची, कब से तेरा इंतजार कर रही हूं. आख़िर तू है कहां?”

“मैं चांद पर सब्ज़ी ख़रीद रही हूं. आजकल यहां सब्ज़ियां बहुत सस्ती मिल रही हैं. प्याज़ सिर्फ पांच हज़ार रुपए में एक किलो है और आलू तो बहूत ही सस्ता है मॉम, सिर्फ़ तीन हज़ार रुपए किलो.”

“अच्छा! फिर तो पूरे एक महीने की सब्ज़ियां ख़रीद ला. यहां पृथ्वी पर तो सब्ज़ियां खाने को तो क्या, सूंघने को भी नहीं मिलती. प्याज़ के दाम सुन कर ही आंसू निकल आते हैं.” सास ने उदास लहज़े में कहा.

“जानती हूं मॉम, इसीलिए तो मैं सुबह-सुबह घूमती हुई चांद पर आ गई. वैसे सुना है, चांद के सुपर मार्केट में साड़ियों का डिस्काउंट सेल लगा है. आते वक़्त दो-चार

नई डिज़ाइन की साड़ियां भी लेती आऊंगी."बहू ने मुस्कुराते हुए कहा.

"क्यों पैसे बरबाद करती है? आज के ज़माने में साड़ियां पहनने का शौक़ किसे है? साड़ियां तो आजकल म्यूजियम में रखने की चीज़ हैं. अगर लाना ही है तो दो-चार नये फ़ैशन के मिनी स्कर्ट ले आना, मैं शाम की पार्टी में पहन कर जाऊंगी." सास ने सलाह दी.

"ठीक है मॉम, मैं ख़रीदारी करके लंच टाइम तक वापस आ जाऊंगी. ओ.के. बाय." बहू ने वीडियों फ़ोन का स्विच ऑफ़ कर दिया.

फुटपाथ पर बैठा एक भिखारी सूट-बूट पहने भीख मांग रहा है- "दे-दे ऽऽऽ दे-दे ऽऽऽ भगवान के नाम पे दे-दे ऽऽऽ, इन्कम टैक्स भरना है बाबा ऽऽऽ, मोबाइल फ़ोन का बिल भरना है मेरे दाता ऽऽऽ, सिर्फ़ एक लाख का सवाल है मेरे मालिक....तू एक लाख देगा, वह एक करोड़ देगा... कैश न हो तो चेक दे दे मेरे दाता....बेटी की शादी करनी है मेरे मालिक. दहेज में ए.सी. कार देनी है बाबा....दे-दे ऽऽऽ,दे-दे ऽऽऽतेरे बाल-बच्चे ख़ुश रहें, क्लब में डांस करें..दे-दे ऽऽऽ भगवान के नामपे दे-दे "

तभी रास्ते से गुज़रते हुए एक भले आदमी को भिखारी पर दया आ गई है वह अपनी जेब से पांच हज़ार का नोट निकाल कर भिखारी को देने लगा.

"सिर्फ़ पांच हज़ार?"भिखारीने बुरा-सा मुंह बना कर पूछा.

"हां बाबा, आजकल बड़ी तंगी चल रही है न. एक महीने की तनख़्वाह एक हफ़्ते भी नहीं चलती. एक लाख तो

बच्चे की फ़ीस में ही निकल जाते हैं, पाचं लाख में घर का राशन, दो लाख मकान का भाड़ा, समझ में नही आता, घर का ख़र्च कैसे चलाऊं. महंगाई ने कमर तोड़ रखी है." आदमी ने अपनी लाचारी ज़ाहिर की."तुम ठीक कहते हो भाई, आजकल की महंगाई ने मेरा भीख मांगने का बिजनेस भी चौपट कर दिया है. पूरे दिन फुटपाथ पर भीख मांगता हूं. तो भी रोज़ का तीन-चार लाख ही मिल पाता है."आदमी ने अपनी टाई ठीक करते हुए समझाया. "इससे अच्छा तो बीसवीं सदी का ज़माना था.मेरा बाप सिर्फ़ बीस हज़ार की तनख़्वाह में पूरे महीने का ख़र्च चला लेता था.उस ज़माने में हर चीज़ सस्ती हुआ करती थी.सिर्फ तीस-चालीस रुपए में एक किलो प्याज़ मिल जाती थी. आजकल तो सब्ज़ी ख़रीदने के लिए बैंक से लोन लेना पड़ता है." यह कहते हुए आदमी की आंखों से आंसू निकल आए. यह देखकर भिखारी को उस पर दया आ गई. उसने अपनी जेब से एक लाख रुपए का नोट निकाला और आदमी के हाथ पर रख दिया.

"यह क्या है?" आदमी ने हैरत से पूछा.

"यह मेरी तरफ़ से भीख समझ कर रख लो, "भिखारी ने शान से कहा.

"थैंक यू" आदमी भिखारी से भीख लेकर चल दिया.

पड़ोस की दो औरतों में ज़बरदस्त झगड़ा छिड़ गया है एक औरत ने दूसरी औरत से गुस्से में कहा,"अरी जा... जा बड़ी आई मुझे धमकाने वाली, तेरे पास मिसाइल हैं तो मेरे पास भी न्यूक्लियर बम हैं. मेरे बाप ने दहेज में

दिए थे, तेरे घर को तबाह करने के लिए एक ही काफ़ी है, समझी कलमुही.”
दूसरी तुनककर बोली, “मैं तेरे न्यूक्लियर बम से नहीं डरने वाली. मेरे हसबेंड अमेरिका से लेज़र हथियार लाए हैं. बटन दबाते ही तेरा घर राख कर दूंगी हां.”
देखते-ही-देखते दोनों औरतों का झगड़ा बढ़ गया. गुस्से में दोनों ने अपने-अपने हथियार निकाले और एक-दूसरे पर दाग दिए. एक ज़ोरदार धमाके के साथ पूरा शहर खंडहर में बदल गया. इक्कीसवीं सदी का गुस्सा बीसवीं सदी से ज़्यादा ख़तरनाक साबित हुआ.

ऑफ़िस से पति थका-मांदा घर पहुंचा और उसने पत्नी से एक कप चाय की फ़रमाइश की तो पत्नी चिढ़ कर बोली, “चाय बनेगी कैसे? आप घर का काम करने के लिए जो इलेक्ट्रॉनिक नौकर, रोबोट लाए हो, वह तो एकदम निकम्मा है.”
“क्यों, क्या हुआ?” पति ने हैरानी से पूछा.
“क्या बताऊं, सुबह से बटन दबा-दबा कर थक गई,मगर कम्बख़्त न हिलता है, न डुलता है.लगता है उसका शॉर्ट सर्किट हो गया है.” पत्नी ने परेशानी में जवाब दिया.
“ओ हो! तो खुद ही चाय बना कर पिला दो. बहुत दिन हो गए तुम्हारे हाथ की स्वादिष्ट चाय पिए हुए.” पति ने प्रार्थना भरे लहज़े में कहा.
“अरे वाह, इक्कीसवीं सदी की पत्नी अपने हाथ से चाय बना कर पिलाती है क्या? कोई सुनेगा तो क्या कहेगा. और फिर मुझे तो स्टोव जलाना तक नहीं आता, जाओ पहले इस रोबोट की रिपेयरिंग कराओ, तब घर में चाय

और खाना पकेगा, वरना होटल से मंगाना पड़ेगा, "पत्नी ने अपना फ़ैसला सुना दिया.
पति झल्लाकर बोला, "वाह री इक्कीसवीं सदी, तेरा भी जवाब नहीं. इंसान को नकारा बना डाला. अरे, इससे अच्छी तो बीसवीं सदी थी. घर की औरतें खुद अपने हाथों से खाना बनाया करती थीं. मशीनोंकी मोहताज नहीं थी." पति उठकर होटल में चाय पीने चल दिया.

एक मैगज़ीन के ऑफ़िस में एक पत्रकार नौकरी मांगने दाख़िल हुआ तो उसने देखा कि इतने बड़े और शानदार ऑफ़िस में सिर्फ़ एक ही आदमी काम कर रहा है. पत्रकार ने उस आदमी के पास पहुंच कर पूछा, "इस कम्पनी का मालिक कौन है सर?"
"मैं ही हूं." आदमी ने जवाब दिया.
"और मैगज़ीन का एडीटर कौन है?" पत्रकार ने दूसरा सवाल किया.
"एडीटर भी मैं हूं और एग्ज़ीक्यूटिव एडिटर व पब्लिशर भी मैं ही हूं."
"क्या मैगज़ीन का सारा काम आप ही करते हैं?"
"नहीं, यहां का सारा काम कम्प्यूटर्स करते हैं."
"मगर ख़बरें लाने के लिए तो आपको पत्रकारों की ज़रूरत पड़ती होगी?" पत्रकार ने आशा भरी नज़रों से देखते हुए पूछा.
"बिलकुल नहीं, ख़बरें भी कम्प्यूटर्स खुद ही बनाकर छाप देते हैं." मालिक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया.
"और क्या-क्या कर लेते हैं आपके कम्प्यूटर्स?" पत्रकार ने उत्सुकता से पूछा.

“सम्पादकीय लिख लेते हैं, फोटो छाप देते हैं, इन्टरव्यू ले लेते हैं, कार्टून बना देते हैं, डिज़ाइन बना देते हैं वग़ैरह-वग़ैरह...”

“अगर वग़ैरह-वग़ैरह तक सारा काम कम्प्यूटर्स ही कर लेते हैं, तो फिर आप क्या करते हैं?” पत्रकार ने हैरत से पूछा.

“मैं ये मैगज़ीन पढ़ता हूं, क्योंकि इस मैगज़ीन का मैं ही अकेला पाठक हूं.”

“क्या?” पत्रकार ने चौंक कर पूछा.

“हां भाई, इक्कीसवीं सदी में अख़बार, पत्रिकाएं वग़ैरह पढ़ने की न लोगों को फ़ुर्सत है, न शौक. लोगों का सारा वक़्त तो टी.वी.कंप्यूटर पर गेम्स खेलने या चिटचैट में ही निकल जाता है.बीसवीं सदीं में पत्रिकाओं के लाखों पाठक हुआ करते थे जो बड़े शौक़ से अपनी-अपनी मनपसंद पत्रिकाएं किताबें ख़रीद कर पढ़ा करते थे और अपने सुझाव, अपनी शिकायतें आदि लिख कर भेजा करते थे. अब तो न पाठक रहे, न पत्रिकाएं.”मालिक ने मायूसी भरे अंदाज़ में कहा.

“ठीक कहते हैं सर, अपने कम्प्यूटर से कहिए एक ख़बर और छाप दे,” पत्रकार ने खड़े होते हुए कहा.

“कैसी ख़बर?”

“इक्कीसवीं सदी के आख़िरी पत्रकार ने खुदकशी कर ली,”यह कहते हुए पत्रकार ने बिल्डिंग से छलांग लगा दी.

इक्कीसवीं सदी के एक नेता जी चुनाव सभा में ज़ोरदार भाषण दे रहे थे.

“भाइयों और बहनों, अगर आप अपनी ग़रीबी, बेकारी और भुख़मरी दूर करना चाहते हैं, तो हमारी पार्टी को ही

वोट दें. हम वादा करते हैं कि हम आपकी सारी समस्यांए चुटकियों में दूर कर देंगे.

इक्कीसवीं सदी में जनता को अनाज खाने को नहीं मिलता तो क्या हुआ, हम उसका पेट विटामिन की गोलियों से भर देंगे. इक्कीसवीं सदी में घी, दूध, दही का नामोनिशान मिट गया है तो क्या हुआ, हम जनता को टॉनिक दिलाएंगे, पानी की जगह कोल्ड ड्रिंक पिलाएंगे, अगर हमारी पार्टी को आपने वोट देकर जिता दिया तो हम देश को इक्कीसवीं सदी से बाइसवीं सदी में पहुंचा देंगे. देश के बच्चे बच्चे के पास अपनी अपनी ऑटोमैटिक कारें होंगी."

भीड़ में से एक ने पूछा, "मगर कार चलाने के लिए सड़कों के गड्ढे कब भरेंगे?"

नेता जी ने जवाब दिया, "सड़कों के गड्ढे हमारी बीसवीं सदी की यादगार हैं, हमारे देश की ऐतिहासिक धरोहर हैं. हम इन ऐतिहासिक गड्ढों को अगली पीढ़ी के लिए संभाल कर रखेंगे, इन्हें कभी मिटने नहीं देंगे."

किसी ने पूछा, "नेता जी, प्रदूषण दूर करने के लिए क्या करेगी आपकी सरकार? इक्कीसवीं सदी में तो सांस लेने के लिए ताज़ी हवा का नामोनिशान ही मिट चुका है."

नेता जी का जवाब हाज़िर था, "चिंता मत कीजिए, हमारी सरकार बनते ही हम विदेशों से ताज़ी हवा के सिलिंडर आयात कराएंगे और देश के हर नागरिक को महीने में एक-एक सिलिंडर शुध्द हवा सप्लाई कराएंगे."

नेता जी धुआंधार भाषण दे रहे थे, मगर उन्हें हैरत इस बात की थी कि हज़ारों लागों के मौजूद होने पर भी तालियां क्यों नहीं बज रही है. बीसवीं सदी में तो

Bekhabar Ki Chugaliyaan

घटिया-से-घटिया नेता भी लच्छेदार भाषण देकर जनता से तालियां बजवा लेता था.तभी एक दूसरे नेता ने आकर उन्हें समझाया, "तालियां बजाएगा कौन? यहां जनता तो मौजूद ही नहीं है."

"तो फिर ये हज़ारों लोग कौन हैं?"

"ये सब अपनी-अपनी पार्टी के नेता हैं, जो यहां भाषण देने आए हैं और अब मैं भाषण दूंगा." यह सुनते ही नेता जी गश खाकर गिर पड़े.

रास्ते से गुज़रते हुए एक अस्सी साल का बूढ़ा अपने दस वर्षीय पोते को समझा रहा था, "बेटा, इक्कीसवीं सदी में इंसान ने भले ही बेतहाशा तरक़्क़ी कर ली है, मगर इस तरक्क़ी के मुक़ाबले इंसानियत बहुत पीछे छूट गई है. उसे वापस लाने के लिए हमें बीसवीं सदी में लौटना होगा बेटा," यह कहते हुए दोनों वापस लौट चले.

☺

नोटः ये था इस पुस्तक का एक छोटा सा नमूना यानी ट्रेलर...पूरी पुस्तक के लिए ई-मेल करें.

anilnigambekhabar (eBay Member)

Please Visit my eBay shop

(Thahaaka ebooks unlimited)

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Rangeenmizaaji

रंगीनमिज़ाजी

(केवल वयस्कों के लिए)

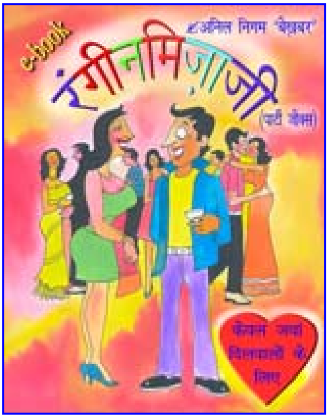

लेखक : अनिल निगम 'बेख़बर'

विषय : पार्टी जोक्स का संकलन (वयस्को के लिए)

भाषा : १) हिंदी
२) रोमन हिंदी (Hindi in English text)

साइज़ : W-5.03"X H-7.17"

फॉर्मेट : पी डी एफ

मूल्य :: (Rs.250/- with resale right)

डिलीवरी : ई-मेल द्वारा

पेमेंट ऑप्शन्स : (Online fund transfer)/चेक/क्रेडिट-डेबिट कार्ड
(Click for details)

संपर्क करें : **anilnigambekhabar@gmail.com)**

Please Visit my eBay shop (Thahaaka ebooks unlimited)

Click for other useful links

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Rangeenmizaaji

रंगीनमिज़ाजी

<u>संवैधानिक चेतावनी</u>

इस पुस्तक को नाबालिग़ पाठक पढ़ने का प्रयास न करें, इसके अलावा वे पाठक भी इसे ना पढ़ें जिन्हें यौन संबंधों पर आधारित लतीफों से ऐतराज़ है.क्योंकि इसकी सामग्री केवल जवां दिलो-दिमाग़ वालों के लिए उपयुक्त है जो यार-दोस्तों की महफिलों को रंगीन बनाने के लिए प्रस्तुत की गई है.इस पुस्तक में अश्लील शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है ना ही किसी वर्ग विषेश की भावनाओं का अपमान है.हमारा मकसद तो सिर्फ हास्य तथा मनोरंजन प्रस्तुत करना है इसलिए पाठकों से निवेदन है कि वे भी अपने दिलो-दिमाग़ के खिड़की दरवाज़े खोल कर इन शरारती लतीफों का आनंद उठाएं और जी भर कर ठहाके लगाएं.....धन्यवाद.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Anaadi Sher

अनाड़ी शेर

दोस्तों, हम शायर तो नहीं हैं, लेकिन कभी-कभी धुनकी में कुछ अनाड़ी शेर लिख मारते हैं. लीजिए पेश है उनमें से चंद शेर...अगर आप हमारे लिखे अनाड़ी शेर पढ़ कर हमारी बेअक्ली पर हंसेंगे तो भी हमें कोई एतराज़ नहीं होगा. शुक्रिया- अनिल निगम 'बेख़बर'

अर्ज़ किया है....

हूं बेख़बर मगर, करता हूं ख़बरदार,
शादी के वक्त सर पे कफन बांध लेना यार.

हम इश्क के मारों का इतना सा है अफसाना,
सैंडल भी खाके यारों पड़ता है मुस्कुराना.

बड़े शौक से हमने छेड़ा फसाना,
सभी सो गए दास्तां सुनते सुनते.

हंसो तो यूं कि ज़माना तुम्हारे साथ हंसे,
ज़मीं हंसे, फलक हंसे, सारी कायनात हंसे.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Anaadi Sher

उफ़् ये कातिल जवानी उस पे ये मासूम अदा,
कत्ल करके खुद ही पूछते हो कातिल का पता.

आए थे लेके प्यार का अरमान दर पे हम,
जाते हैं मगर लाद के सामान सर पे हम.

उठ चुके हैं जो कदम हरगिज़ ना अब पीछे हटेंगे,
या तो मंज़िल ढूंढ लेंगे या सफर पे मर मिटेंगे.

उनसे हमारा तार्रुफ तक ना हुआ,
वो कहते हैं ताल्लुकात बड़े पुराने हैं.

मेरी दीवानगी पर लोग हंसते हैं तो हंसने दो,
मेरा दीवानापन आख़िर किसी के काम तो आया.

शौहर लाख छुपाए तो क्या होता है,
जो भी होता है वो बीवी को पता होता है.

☺

✍Anil Nigam ‘Bekhabar’

शुक्रिया–मेहरबानी

दोस्तों, आपने हमारे ठहाकेदार नमूने पढ़े इसके लिए हम तहे–दिल से आपके शुक्रगुज़ार हैं. हमारे प्रयास से अगर आपके चेहरे पर थोड़ी सी भी मुस्कान झलकी हो तो हम समझेंगे हमारी मेहनत का फ्रूट हमें मिल गया.

Please send your feedback which will make me able to rectify the mistakes...Thanks.

आपकी तालियां (+) या गालियां (-) दोनों का स्वागत हम इस पते पर करेंगेः

E-mail Id: **anilnigambekhabar (eBay Member)**

Address : Anil Nigam 'Bekhabar'
B-17, Plot No.132, Gorai-2,
Borivli (w), Mumbai-400091(INDIA)

Or visit my eBay shop Thahaaka ebooks unlimited

Kya aap Hindi books Roman style mein (Hindi in English text) padhna chaahte hain??
Then please write to us.

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Payment Options

Payment can be made through eBay PaisaPay methods (Cheque, Credit-Debt Cards, Online fund transfer etc.) Please see the details with item listings

Please Note

1. As soon the payment from the customer's side is confirmed in the respective account, the ebooks will be sent through E-mail ID specified by the customer.
2. After placing the order, Please inform us your email ID where you want the book to be sent?
3. Please send your phone no. also for emergency contact.
4. Please send the acknowledgment after receiving the books
5. In case of any difficulty do not hesitate to contact... **anilnigambekhabar (eBay Member)**

   Or visit my eBay shop Thahaaka ebooks unlimited

Click for other useful links

☺

✍Anil Nigam 'Bekhabar'

Do you want to read other e-books ???
or
want to be an e-book writer???
If, YES !!!
Here are some links suggested for you !!!
(Please make sure you are online)

Websites for useful ebooks

1. Planet e-books
2. Buy-ebook.com
3. How to be funny
4. The easy way to write
5. Insider secrets to ebook self publishing
6. ebook4sale
7. Comedy Zone
8. Write create & promote A best seller
9. Website promotion ebook
10. Second Hand Books India
11. Mini ebook Secrets
12. Sell ebooks Package- Full resale rights
13. ebooks starter-create your own ebooks
14. E-book compiler Software

Hosting sites

1. All cheap web hosting
2. 1500 mb hosting for $4.95 pm.

Affiliate sites

1. Clickbank
2. AffiliateCurry.com